RNI No.: MPHIN/2018/77137

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी का प्रकाशन

पाठशाला

भीतर और बाहर

Azim Premji University

ISSN 2582-483X

अंक 24 | जून 2025 | तिमाही

पाठशाला
भीतर और बाहर
जून 2025 | अंक 24

सम्पादकीय टीम

- **प्रतिभा कटियार (मुख्य सम्पादक)**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  आमवाला तरला, सहस्त्रधारा रोड
  देहरादून, उत्तराखण्ड – 248001
  pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org

- **शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (सह सम्पादक)**
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
  सर्वे नंबर 66, बुरुगुंटे विलेज
  बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा
  बेंगलूरु, कर्नाटक – 562125
  shefali.mehta@apu.edu.in

- **प्रकाशन कार्यालय**
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
  सर्वे नंबर 66, बुरुगुंटे विलेज
  बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा
  बेंगलूरु, कर्नाटक – 562125
  publications@apu.edu.in

- **गौतम पाण्डेय**
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
  भोपाल, मध्य प्रदेश
  gautam@azimpremjifoundation.org

- **सुनील कुमार साह**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  रायपुर, छत्तीसगढ़
  sunil@azimpremjifoundation.org

- **जगमोहन सिंह कठैत**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  देहरादून, उत्तराखण्ड
  jagmohan@azimpremjifoundation.org

- **दीपक कुमार राय**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  जयपुर, राजस्थान
  deepak.rai@azimpremjifoundation.org

- **सिद्धार्थ कुमार जैन**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  भोपाल, मध्य प्रदेश
  siddharth.jain@azimpremjifoundation.org

- **रजनी द्विवेदी**
  असम वैली स्कूल
  तेजपुर, असम
  rajni.dwivedi@azimpremjifoundation.org

- **कमलेश जोशी**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड
  kamlesh@azimpremjifoundation.org

- **राघवेंद्र हेर्ले**
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
  बेंगलूरु, कर्नाटक
  Raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org

- **अनुवाद सम्पादक**
  मधुकर एस पुट्टी (कन्नड़)
  राजेश उत्साही (हिन्दी)
  शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (अँग्रेज़ी)
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु, कर्नाटक

- **प्रकाशन टीम**
  मीरा प्रभु
  शाहनाज़ बेगम
  लोकराम वी जी
  संबित महापात्र
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
  बेंगलूरु, कर्नाटक

- **डिज़ाइन**
  आवरण चित्र – पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर
  फ़ोटो – अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन आर्काइव्ज, लेखक

  लेआउट – गणेश ग्राफिक्स
  भोपाल, मध्यप्रदेश

- **प्रिंटिंग**
  लक्ष्मी मुद्रणालय
  बेंगलूरु, कर्नाटक

- **प्रूफ़रीडिंग**
  अतुल अग्रवाल

पाठशाला भीतर और बाहर अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी द्वारा स्कूली शिक्षा को केन्द्र में रखकर प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका है। पत्रिका का उद्देश्य देश भर के पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों तक अभ्यास-आधारित सामग्री पहुँचाकर उनका सहयोग करना है। यह एक मंच है *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एनसीएफ़ एसई* और *एनसीएफ़ एफ़एस* के आलोक में शिक्षकों के अनुभवों, प्रभावी शिक्षण प्रक्रियाओं की साझेदारी का। *पाठशाला* मूलतः हिन्दी में, फिर अँग्रेज़ी और कन्नड़ में अनुवादित होकर प्रकाशित होती है।

सम्पादकीय

बुनियादी भाषाई और गणितीय दक्षताएँ सभी विद्यार्थियों को हासिल हो सकें, यह विद्यालयी शिक्षा की बुनियादी ज़रूरत है। लेकिन मुश्किल यह है कि धरातल पर मौजूद तमाम व्यावहारिक चुनौतियों के चलते आज विद्यार्थियों की बड़ी संख्या एफ़एलएन (फ़ाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी) की दक्षताओं तक नहीं पहुँच पा रही है। सभी विद्यार्थी एफ़एलएन स्तर पर किस तरह पहुँचें, यह आज शिक्षकों के सम्मुख बड़ी चुनौती है। इस चुनौती के मद्देनज़र ही भारत सरकार ने वर्ष 2026-27 तक एफ़एलएन के लक्ष्य को हासिल करने के लिए राज्य सरकारों के साथ मिलकर निपुण भारत मिशन की शुरुआत की है।

यह चुनौती यूँ तो पहले से ही शिक्षकों के सम्मुख लर्निंग क्राइसिस के तौर पर मौजूद थी, लेकिन कोविड आने के बाद यह मुश्किल और बड़ी होती गई। अब जबकि कोविड को काफ़ी समय बीत गया है, और अपनी तमाम कोशिशों के चलते शिक्षकों ने कोविड के दौरान सीखने को लेकर आए फ़ासले को काफ़ी हद तक भरने का प्रयास भी अपनी-अपनी तरह से किया है, फिर भी अभी काफ़ी रास्ता तय करना बाक़ी है।

एफ़एलएन की समस्या सरकारी विद्यालयों के मद्देनज़र ज़्यादा बड़ी नज़र आती है, जहाँ आने वाले ज़्यादातर विद्यार्थियों के लिए घर पर पढ़ने-लिखने का माहौल तो नहीं ही है जबकि अभिभावकों के काम में हाथ बँटाने के हालात ज़रूर हैं। इसके अलावा, कुछ और चुनौतियाँ हैं जिनका ज़िक्र अकसर शिक्षक करते रहते हैं। जैसे– विद्यार्थियों की उपस्थिति में अनियमितता, विद्यालय में देर से दाख़िला, सीधे कक्षा 3, 4 या 5 में दाख़िला, अभिभावकों की उदासीनता, आदि।

यानी विद्यार्थियों के पास जो भी अवसर हैं वो विद्यालय में ही हैं। ऐसे में शिक्षकों की ज़िम्मेदारी भी बढ़ जाती है, और चुनौती भी। यह ज़िम्मेदारी न सिर्फ़ शिक्षकों की है वरन् शिक्षकों को अकादमिक सहयोग व समर्थन देने वाले शिक्षा तंत्र के व्यक्तियों की भी है। सभी यह ज़िम्मेदारी अच्छे से निभा सकें, इसके लिए दो उपाय हो सकते हैं– शिक्षा तंत्र के सभी स्तरों पर अकादमिक सहयोग व समर्थन देने वाले व्यक्तियों में बैठकों व कार्यशालाओं में चर्चा के माध्यम से एफ़एलएन के बारे में गहरी साझी समझ का होना, और दूसरा, ज़िम्मेदारीपूर्ण सघन मॉनिटरिंग करते हुए हर स्तर पर 'निपुण भारत मिशन' से जुड़े व्यक्तियों के लिए सकारात्मक, सहयोगी व शैक्षिक वातावरण का निर्माण।

एफ़एलएन को लेकर यह समझ स्पष्ट है कि यह सिर्फ़ भाषा की कुछ इबारतें या गणित की कुछ संक्रियाएँ सीखने भर का मसला नहीं है, बल्कि उस सीखे हुए को ज़िन्दगी से जोड़ने, ज़िन्दगी को समझने और समस्याओं के समाधान ढूँढ़ने के लिए तैयार करने का मामला है। साथ ही, यह बच्चों को गणितीय ढंग से सोचने देने का अवसर बनाने का मसला भी है। शुरुआती स्तर पर जब विद्यार्थी बुनियादी भाषाई और गणितीय दक्षताओं को सहज ढंग से प्राप्त कर लेते हैं, उन्हें आगे की कक्षाओं में, अन्य विषयों में भी रुचि महसूस होती है, और उनका सीखने के प्रति उत्साह बढ़ता है।

हर विद्यार्थी एफ़एलएन के स्तर को हासिल कर सके, यह हम सबकी ज़िम्मेदारी है। इसके लिए एफ़एलएन को सिर्फ़ एक प्रक्रिया के तौर पर नहीं, बल्कि उसके मुख्य विचार के साथ समझना ज़रूरी है। इसी समझ और अनुभवों का विस्तार आपको *पाठशाला* के इस जून अंक में मिलेगा जहाँ एफ़एलएन की अवधारणा, कक्षा अनुभव, चुनौतियों, आदि को केन्द्र में रखकर लिखे गए

कुछ लेख विशेषतौर पर मिलेंगे। इन लेखों से, एफ़एलएन का वास्तविक तात्पर्य समझने में, और उन पर बच्चों के साथ कैसे काम किया जाए, कौन-सी रणनीति अपनाई जाए, आदि के बारे में पढ़ने को मिलेगा। एक लेख में आप पढ़ेंगे कि यांत्रिक तरीक़ों और रटकर सीखने की बनिस्बत गणित किट जैसी वस्तुओं से जुड़कर व अन्त:क्रिया से सीखना क्यों ज़रूरी है।

बातचीत के ज़रिए विद्यार्थियों से जुड़ना और उस बातचीत का शिक्षण प्रक्रिया में उपयोग कैसे हो, बच्चों को रचनात्मक लेखन से कैसे जोड़ें, पाठ योजना बनाकर पढ़ाना कैसे उपयोगी होता है, जैसे लेख पाठकों को समृद्ध करेंगे। अन्त में, एक ऐसे विद्यालय की कहानी को पढ़ना दिलचस्प होगा जिसका नामांकन एकदम कम हो गया था, लेकिन कुछ ख़ास प्रक्रियाएँ अपनाने से उस विद्यालय में न सिर्फ़ नामांकन बढ़ा, बल्कि विद्यार्थियों के सीखने का स्तर भी बेहतर हुआ। हमेशा की तरह ईसीसीई पर आलेख है जिसमें आँगनवाड़ी केन्द्र के माहौल और गतिविधियों से जुड़े अनुभव शामिल हैं।

नियमित स्तम्भ के अन्तर्गत इस बार 'इनसे मिलिए' में मध्य प्रदेश की शिक्षिका से जानेंगे उनके अनुभव, कि कैसे और कौन-सी प्रक्रियाओं के चलते बच्चों का सीखना बेहतर हुआ। आपके प्रिय स्तम्भ 'शिक्षकों की डायरी से' में इस बार आप उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और कर्नाटक के शिक्षकों के कुछ कक्षा अनुभव व प्रक्रियाओं को जानेंगे। साथ ही, 'किताबों से दोस्ती' स्तम्भ के अन्तर्गत इस बार आपके लिए है 2 रोचक किताबों के बारे में जानकारी। 'आइए, करके देखें' में गतिविधियाँ हैं जो हमेशा की तरह दक्षता स्तर पर आधारित और रुचिकर हैं। 'सम्पादक के नाम' में आपकी वाली चिट्ठियाँ शामिल हैं।

इस अंक के साथ ही *पाठशाला भीतर और बाहर* ने 24 अंकों का सफ़र तय कर लिया है, और आपसे यह साझा करते हुए हमें ख़ुशी है कि अगला अंक जो कि 25वाँ अंक होगा, उसे सिल्वर जुबली विशेषांक के रूप में लाने की योजना है। इस अंक में आपके प्रिय स्तम्भ 'शिक्षकों की डायरी से' को विस्तार देते हुए देशभर से आईं 25 शिक्षकों की डायरी के पन्ने प्रकाशित करेंगे जो उनकी कक्षा / विद्यालय प्रक्रियाओं पर आधारित होंगे, साथ ही, कुछ महत्त्वपूर्ण आलेख भी होंगे।

इसके अलावा, एक और विशेषांक आने वाला है जो कि दिसम्बर का अंक होगा। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) पर काफ़ी ज़ोर देती है जिसका उद्देश्य 3 से 6 वर्ष के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। इसी के मद्देनज़र दिसम्बर अंक को 'ईसीसीई' पर केन्द्रित करने की योजना है।

यानी, आने वाले दो अंक विशेषांक होंगे। इन दोनों विशेषांक के लिए आपके अनुभवों पर आधारित आलेख, डायरी, गतिविधियों और चिट्ठियों का इन्तज़ार रहेगा। देश भर से आने वाले आलेख, चिट्ठियाँ व सवाल हमें आश्वस्ति देते हैं कि आप *पाठशाला* से जुड़े हैं। ऐसे ही जुड़े रहिए, पढ़ते रहिए और साझा करते रहिए अपने अनुभव।

शुभकामनाओं सहित

प्रतिभा कटियार
मुख्य सम्पादक

अनुक्रम

सम्पादकीय

1. बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान की समझ 05
   गुलशन यादव
2. बुनियादी साक्षरता, संख्या ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों के एकीकरण से सीखना 08
   मोहम्मद उमर
3. गणित किट के साथ बुनियादी संख्या ज्ञान 13
   सरोजनी रावत
4. कक्षा शिक्षण में बातचीत है महत्त्वपूर्ण 17
   अरविन्द कुमार सिंह
5. भय से बाधित होता है सीखना 21
   किशन लाल सालवी
6. एक विद्यालय का रूपान्तरण 25
   एम वल्ली और के गांधीमती
7. आँगनवाड़ी में एक दिन 29
   रेखा चौहान
8. किताबों से जुड़ाव बनाने के लिए कुछ प्रयास 33
   दीपाली शुक्ला

अनुक्रम

9. दूसरी भाषा को सीखने-सिखाने के अनुभव 36
आकाश शांडिल्य

10. प्रोत्साहन और आत्मविश्वास रचनात्मक लेखन के लिए ज़रूरी 40
विवेक सोनी

स्थाई स्तम्भ

11. शिक्षकों की डायरी से 44
दीपिका डोबले
रिंकू सिंह
श्रुति वी

12. इनसे मिलिए – ममता जैन 48
मोहम्मद तसलीम

13. किताबों से दोस्ती 51
ध्रुव देसाई
जय शंकर चौबे

14. आइए, करके देखें 54

15. सम्पादक के नाम 57

* लेखों में व्यक्त विचार और दृष्टिकोण लेखकों के अपने हैं, उनसे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
* पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का उपयोग शैक्षणिक और ग़ैर-व्यावसायिक कार्यों के लिए किया जा सकता है। लेकिन इसके लिए लेखक एवं प्रकाशक से अनुमति लेना एवं स्रोत का उल्लेख अनिवार्य है।
* बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए पत्रिका में उनके नाम बदल दिए गए हैं।

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान की समझ

गुलशन यादव

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–फ़ाउण्डेशनल स्टेज 2022* के अनुसार, बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान (एफ़एलएन) का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रारम्भिक वर्षों में ही पढ़ने, लिखने और गणितीय कौशल में दक्ष बनाना है। इस स्तर पर हासिल की गई ये दक्षताएँ न केवल विद्यार्थियों की आगे की शैक्षणिक यात्रा को बेहतर करने में मदद करती हैं, बल्कि उन्हें एक बेहतर सीखने वाले व्यक्ति के रूप में तैयार भी करती हैं।

चित्र 1 : शुरुआती स्तर पर विद्यार्थियों का सीखना उनके आगे के सीखने की बुनियाद होता है

प्रारम्भिक वर्षों (3 से 8 वर्ष की आयु) में एफ़एलएन पर ध्यान देना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यही वह समय होता है जब बच्चे सबसे अधिक सीखते हैं। बच्चों में विकसित हुई पढ़ने, लिखने की दक्षताएँ व शुरुआती गणित की समझ उन्हें आगे की कक्षाओं की जटिल अवधारणाओं को समझने के लिए तैयार करती है। जो बच्चा प्रारम्भिक चरण में अच्छी तरह पढ़ना सीख लेता है, वह आसानी से पाठ्यपुस्तकों, कहानियों व अन्य शिक्षण सामग्री तक पहुँच सकता है, और इस सामग्री का अपने सीखने के लिए उपयोग कर सकता है। ऐसे में विद्यार्थी लगातार आगे बेहतर करने की दिशा में बढ़ते चले जाते हैं। इसके विपरीत, यदि विद्यार्थी प्रारम्भिक स्तर पर ही पढ़ने, लिखने और गणित में कमज़ोर रह जाते हैं तब आगे आने वाली कक्षाओं में उनकी शैक्षणिक प्रगति बाधित हो सकती है, और इससे आगे की कक्षाओं में उनका जुड़ाव कम होता चला जाता है। सीखने में शुरुआती प्रदर्शन, समय के साथ आगे बेहतरी या नुक़सान के रूप में बढ़ते जाते हैं।

एफ़एलएन में क्या–क्या शामिल है ?

हम जानते हैं कि एफ़एलएन का अर्थ 'बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान' है। लेकिन एफ़एलएन में क्या-क्या शामिल है यह समझना बहुत ज़रूरी है, नहीं तो यह निर्धारित करना मुश्किल हो जाता है कि कक्षा में विद्यार्थियों के साथ भाषा और गणित में क्या-क्या काम किया जा सकता है। बुनियादी साक्षरता का अर्थ कुछ सरल वाक्यों को बिना समझे किसी भी तरीक़े से तोड़-तोड़कर पढ़ना नहीं है, और इसी तरह संख्या की समझ भी 2 या 3 अंकीय संख्याओं को पहचानने तक ही सीमित नहीं है।

एफ़एलएन में कई पहलू शामिल हैं। इन्हें समझते हुए इन पर कार्य करते समय हम *एनईपी 2020* में तय किए गए शिक्षा के

वृहद उद्देश्य, जैसे विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, तर्क क्षमता, आदि विकसित करने की दिशा में काम कर सकते हैं।

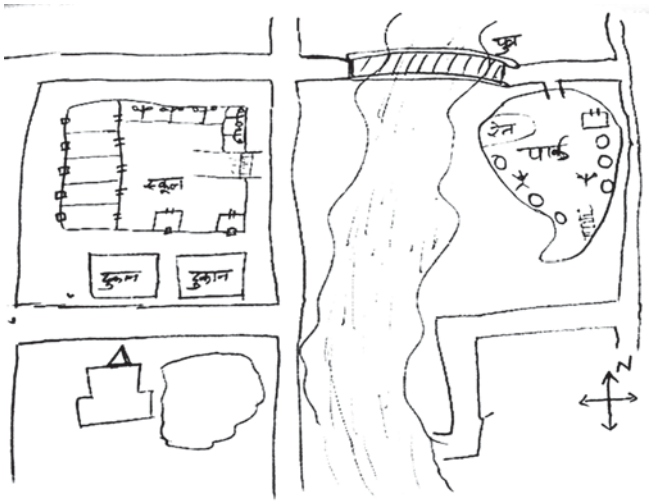

चित्र 2 : नज़री नक़्शा- ढूँढो किस दिशा में, कितनी दूर, कहाँ, क्या है

शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों का 'समग्र विकास कर, उनमें 21वीं सदी के कौशल, समस्या-समाधान और जीवन कौशल, विकसित करना भी है।' बुनियादी संख्यात्मकता क्षेत्र की सीमित समझ हमें केवल संख्याओं और संक्रियाओं तक ही बाँधे रखती है जबकि इसमें अन्य अवधारणाएँ, जैसे संख्या पैटर्न, संख्याओं और संक्रियाओं के सम्बन्ध, ज्यामिति, आदि भी शामिल हैं।

यहाँ ज्यामिति की एक उप-अवधारणा स्थानिक समझ को लेकर बात करते हैं। छोटे विद्यार्थियों में भी यह समझने की क्षमता होती है कि कौन-सी वस्तु कहाँ रखी है, कौन-सी पास है और कौन-सी दूर, और पास वाली वस्तु बड़ी दिखती है व दूर वाली छोटी, आदि।

स्थानिक समझ, यानी जगह की समझ में कुछ अन्य उप-अवधारणाएँ भी शामिल हैं– 1. आकृतियों की पहचान; 2. दिशा और स्थान की समझ : जैसे नज़दीक, दूर, बाएँ, दाएँ, ऊपर, नीचे, पीछे, आदि; 3. मापन : दूरी, वज़न, आदि।

बुनियादी दक्षताएँ कैसे आगे की कक्षाओं में सीखने को प्रभावित कर सकती हैं, इसको समझने के लिए एक उदाहरण देखते हैं।

कक्षा 3 में शिक्षक ने विद्यार्थियों को एक गतिविधि दी कि– एक नज़री नक़्शा है जिस पर विद्यालय, पार्क, और विद्यार्थियों के घरों की स्थिति कुछ प्रतीकों से दर्शाई गई है। विद्यार्थियों को यह बताना है कि विद्यालय से पार्क तक जाने के लिए किस दिशा में और कितने मीटर दूर जाना है।

एफ़एलएन के शिक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की कुछ समझ बन चुकी होगी। मसलन, विद्यार्थी दिए गए निर्देशों को पढ़ सकता है; वह नक़्शे पर दिए गए प्रतीकों को समझ सकता है, और इस तरह वह विद्यालय व पार्क की पहचान कर सकता है; यह बता सकता है कि पार्क विद्यालय की पूर्व दिशा में है, और वहाँ पहुँचने के लिए उसे लगभग कितनी दूर चलना होगा; आदि।

समूह में अपने दोस्तों के साथ यह कार्य करते हुए विद्यार्थियों को कई बिन्दुओं पर एक साथ सोचते हुए मिलकर यह काम करने होंगे–

- पूरे नक़्शे को ध्यान से देखना और उसमें दिए गए प्रतीकों का सही जगहों से मिलान करना।
- यह समझना कि कौन-सा स्थान कहाँ है। यह ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, पास-दूर और दिशाओं के सन्दर्भ में हो सकता है।
- किस दिशा में चलने से वह पार्क तक पहुँच पाएगा। यदि वह ग़लत दिशा में चलेगा तो पार्क तक नहीं पहुँच पाएगा।
- तब फिर पार्क की दिशा कौन-सी है, और दूरी कितनी होगी।
- रास्ते में कौन-सी बाधाएँ हैं (जैसे, एक नदी), और तब यह तय करना कि उसे किस दिशा में मुड़ना चाहिए या उसे पुल का उपयोग करके नदी को पार करना होगा।
- यदि यह सब नहीं दिखे तो वह नक़्शे पर दिखाए गए रास्ते के अलावा कोई नया रास्ता या नदी के ऊपर एक पुल बना सकता है।
- यह सब निर्णय लेते हुए अपने साथियों को तार्किक रूप से यह समझा पाना कि उसने अमुक निर्णय क्यों लिया, और उसके रास्ते व कारणों को समझ पाना।

बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान की अधूरी समझ

- **बुनियादी संख्या ज्ञान यानी फ़ाउण्डेशनल न्यूमेरेसी (एफ़एन) की सीमित समझ :** अकसर एफ़एन को केवल संख्याओं, और जोड़-बाक़ी तक सीमित मान लिया जाता है। मक़सद यह रहता है कि विद्यार्थी संख्याओं, अर्थात् संख्या नामों को सीख लें। असल में, संख्या नाम सीखना, संख्या की समझ का बेहद छोटा हिस्सा है। संख्या की समझ में शामिल है यह समझ पाना कि संख्याओं का एक दूसरे से क्या सम्बन्ध है; संख्याओं में क्या पैटर्न है; छोटी संख्या छोटी क्यों है; आदि। विद्यार्थी संख्या नामों को तो रटकर याद कर लेते हैं और उन्हें लिखना भी सीख लेते हैं, लेकिन वे यह नहीं बता पाते कि 5 और 7 में क्या सम्बन्ध है। और इनका वास्तविक जीवन में क्या उपयोग है।

  एक और महत्त्वपूर्ण बात है कि 'फ़ाउण्डेशनल न्यूमेरेसी' को एक निश्चित दायरे में बाँधने की वजह से अकसर मापन, आँकड़ों का विश्लेषण, सरल पैटर्न (जिसमें समस्याओं को हल करना) और आकार जैसे महत्त्वपूर्ण कौशल / अवधारणाएँ कहीं पीछे ही छूट जाती हैं।

- **पढ़ने को केवल शब्दों का उच्चारण समझना :** इसी तरह पढ़ने को केवल शब्दों का सही उच्चारण करने तक सीमित मान लिया जाता है। जबकि बुनियादी भाषा क्षमता का उद्देश्य विद्यार्थियों की पढ़कर समझने और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना है।
- **बहुभाषी दृष्टिकोण की अनदेखी :** छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ में देखें तो उत्तरी और दक्षिणी छत्तीसगढ़ में पढ़ने वाले ज़्यादातर

विद्यार्थियों की मूल भाषा गोंडी, हल्बी, कमारी, सरगुजिया, कुडुख, आदि हैं। बुनियादी भाषा क्षमता के नज़रिए के अनुसार विद्यार्थियों की मातृभाषा को शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करना ज़रूरी है क्योंकि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में मौलिक रूप से सोचते और समझते हैं।

- **गतिविधियों की अनदेखी :** इसी तरह, अकसर बुनियादी भाषा की समझ को सिर्फ़ शब्दों को पढ़ने और लिखने के दायरे में बाँध दिया जाता है। इससे कक्षा में की जा सकने वाली दिलचस्प गतिविधियाँ, जैसे कहानी सुनाना, कविता सुनाना, रोल प्ले, आदि अकसर कक्षागत प्रक्रियाओं में कहीं किनारे ही रह जाती हैं। जबकि बुनियादी भाषा का मतलब है दिलचस्प गतिविधियों से भाषा सीखने में रुचि विकसित करना।
- **भाषा और गणित को अलग-अलग समझना :** अधिकांशतः यह देखने को मिलता है कि भाषा और गणित दो अलग-अलग विषय हैं। यह समझ नहीं बन पाती कि दोनों विषयों का आपस में क्या सम्बन्ध है, या भाषा और गणित, दोनों एक दूसरे के पूरक कैसे हैं। इसका प्रभाव यह होता है कि विद्यार्थी गणितीय प्रश्नों को शब्दों में व्यक्त करने या इबारती प्रश्नों को गणितीय रूप में समझने में कठिनाई महसूस करता है।

मातृभाषा, परिवेश और भाषा की बुनियादी समझ व संख्यात्मकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा या घरेलू भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने पर विशेष ज़ोर दिया गया है। यहाँ प्रस्तुत अनुभव छत्तीसगढ़ के धमतरी ज़िले के नगरीय क्षेत्र में रहने वाली कमारी जनजाति के विद्यार्थियों का है। इन विद्यार्थियों की मातृभाषा कमारी है। यह भाषा छत्तीसगढ़ी से अलग है जो विद्यालयों में पढ़ाई और संवाद के लिए उपयोग की जाने वाली क्षेत्रीय भाषा है। इस भाषाई अन्तर के कारण विद्यार्थी जब विद्यालय में आते हैं तो छत्तीसगढ़ी और हिन्दी में संवाद करने में, कक्षा में भाग लेने, या यहाँ तक कि विद्यालय आने में भी झिझक महसूस करते हैं। इन विद्यालयों में नियुक्त कई शिक्षक भी कमारी भाषा नहीं बोल पाते हैं जिससे विद्यार्थियों और शिक्षक के बीच संवाद की खाई बढ़ जाती है।

मातृभाषा के उपयोग की स्वतंत्रता न केवल विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ाती है, बल्कि साथियों के बीच सीखने और सहयोग को भी बढ़ावा देती है। इन शिक्षकों की यह प्रभावी रणनीति है। यह न केवल विद्यार्थियों की झिझक को दूर करती है, बल्कि उन्हें आगे दूसरी भाषा और गणितीय कौशल सीखने में रुचि लेने के लिए भी प्रेरित करती है। वे कक्षा की गतिविधियों में शामिल होने के साथ-साथ पाठ्यपुस्तकों से पढ़ाई करने में भी रुचि दिखाते हैं। यह भी पाया गया कि इनमें से बहुत-से विद्यार्थी पढ़ना-लिखना भी सीख गए। यह उदाहरण साफ़ दर्शाता है कि प्रारम्भिक शिक्षा में मातृभाषा को सम्मान देकर, उसे शामिल कर घर व विद्यालय के बीच भाषा की खाई को कैसे पाटा जा सकता है।

> कुछ शिक्षक ऐसे भी हैं जो कक्षा 1-2-3 के विद्यार्थियों को कमारी (उनकी मातृभाषा) में बोलने, अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देते हैं, और फिर कक्षा 4-5 के विद्यार्थियों के सहयोग से इन विचारों को छत्तीसगढ़ी / हिन्दी में समझने या समझाने का काम करते हैं (जैसे, "आम चो नाव गुलशन" का मतलब है "मेरा नाम गुलशन है")। इन सभी कक्षाओं में समावेशी और सहायक वातावरण बनता है।

जब तक शिक्षकों ने विद्यार्थियों की मातृभाषा को अपनाने का प्रयास नहीं किया तब तक वे विद्यालय और पढ़ाई में रुचि नहीं ले रहे थे। लेकिन जैसे ही उन्हें अपनी भाषा में सोचने और समझने का अवसर मिला, वे विद्यालय की प्रक्रियाओं से जुड़ने लगे, धीरे-धीरे बुनियादी दक्षताओं को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ने लगे, और विद्यालय में इस्तेमाल होने वाली भाषा भी सीखने लगे। ऐसे प्रयास अलग-अलग क्षेत्रों में शिक्षक कर रहे हैं। जैसे, छत्तीसगढ़ में बस्तर के विभिन्न क्षेत्रों में गोंडी, हल्बी; इसी तरह उत्तरी छत्तीसगढ़ में सरगुजिया, कुडुख मातृभाषाओं में शिक्षा देने के अनुभव भी इस बात की पुष्टि करते हैं।

इसी तरह विद्यार्थी के परिवेश के बारे में चर्चा भी अहम होती है। इसमें उनके आस-पास किस तरह के घर हैं, आस-पास कैसे पेड़-पौधे हैं, आदि पर बातचीत की जा सकती है। उनसे अलग-अलग तरह की पत्तियों को इकट्ठा करने, और उन्हें विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत करने के लिए कहा जा सकता है। जैसे, लम्बी पत्ती और छोटी पत्ती, या हरी और कम हरी पत्ती, या अलग रंग की पत्ती। हर समूह में कितनी पत्तियाँ हैं, यह वे गिन भी सकते हैं।

समेकन

अभी तक दिए गए उदाहरणों से समझ आता है कि हम शुरुआती स्तर पर ही विद्यार्थियों के साथ बुनियादी भाषा और संख्यात्मकता पर कार्य करके यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हर विद्यार्थी को सफल होने का अवसर मिले, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों के विद्यार्थियों के लिए, और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि कोई भी विद्यार्थी पीछे न छूट जाए।

गुलशन यादव पिछले 15 सालों से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में शिक्षा के साथ इनका पहला जुड़ाव तब बना जब 2013 में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन फ़ेलोशिप प्रोग्राम में फ़ेलो के रूप में जुड़े। वे गणित शिक्षण, शिक्षक प्रशिक्षण, और शिक्षण सामग्री निर्माण के क्षेत्र में पिछले 11 वर्षों से कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन धमतरी (छत्तीसगढ़) में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : gulshan.yadav@azimpremjifoundation.org

बुनियादी साक्षरता, संख्या ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों के एकीकरण से सीखना

मोहम्मद उमर

बच्चे अपने परिवेश के अनुभवों से बहुत सारी चीज़ें सीखकर विद्यालय आते हैं। इनके सीखने में स्वाभाविक रूप से कई विषयों का मेलजोल और परस्परता होती है। इसे ध्यान में रखते हुए विद्यालय की शुरुआती कक्षाओं में भी विषयों के एकीकरण और परस्पर सम्बन्धों को मज़बूती से बुनकर किया गया सीखना-सिखाना ज़्यादा उद्देश्यपूर्ण होता है।

चित्र 1: सीखना जब एकीकरण और समग्रता के साथ होता है तब और मज़ेदार होता है

वर्तमान में प्राथमिक शिक्षा में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान यानी एफ़एलएन, केन्द्र और कई राज्य सरकारों की प्राथमिकता में है। इसलिए शिक्षा विभाग और संस्थाओं द्वारा इस पर काफ़ी काम किया जा रहा है। सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं के बहुत-से लोग बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के मुद्दों को एकीकरण व समग्रता में देखते-समझते हैं, लेकिन यह सोच अभी कक्षाओं तक नहीं पहुँच पाई है। इस लेख में, शिक्षकों व बच्चों के साथ किए गए शिक्षण कार्य के दौरान प्राप्त एकीकरण व समग्रता के अनुभवों को शामिल किया गया है। साथ ही, कुछ ऐसे सवालों को विचार में लेने का प्रयास है–

- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में बच्चों को किस तरह की चुनौतियाँ आती हैं?
- भाषा, गणित और परिवेशीय अनुभवों पर समेकित रूप से काम करने की क्या सम्भावनाएँ और तरीक़े हैं?
- बुनियादी साक्षरता और गणित पर काम करने के लिए कौन-से शिक्षण सिद्धान्त ज़्यादा फ़ायदेमन्द हो सकते हैं।

विषयों का एकीकरण और परस्पर सम्बन्ध

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला में मैंने शिक्षकों को एक वाक्य पढ़कर सुनाया, "आजकल महँगाई बहुत बढ़ गई है। आटा पहले 40 रुपए किलो था, अब 45 रुपए हो गया है।" फिर सवाल किया, "इस कथन को समझने के लिए हमें कौन-कौन-सी दक्षताओं या कौशलों की आवश्यकता होगी?"

एक शिक्षक ने कहा, "हिन्दी पढ़ना-लिखना, और पढ़ने के साथ अर्थ निर्माण करना आना चाहिए। जैसे, इस कथन में महँगाई, आटा, बढ़ना, 40 रुपए, 45 रुपए, आदि का मतलब पता होना चाहिए, फिर इन शब्दों से मिलकर बनने वाले वाक्य का अर्थ भी समझ में आना चाहिए।"

शिक्षक की बात सही थी। दैनिक जीवन में हम विविध सन्दर्भों में गणित और भाषा का एक साथ इस्तेमाल करते हैं। बहुत छोटे बच्चों के साथ कहानी सुनाते, उन्हें कुछ काम बताते, या उनसे खेलों से जुड़े अनुभवों पर बात करते हुए भी गणित और भाषा का उपयोग एक साथ ही होता है। जैसे–

- *एक पेड़ पर दो बन्दर* रहते थे।
- बग़ीचे में *बहुत बड़ा* आम का पेड़ था।
- किचन से *तीन गिलास* ले आओ।
- ये *दोनों रोटियाँ तुम्हारे* लिए ही हैं।

बच्चे भी आपस में बात करते हुए अपने अनुभवों के साथ भाषा और गणित का ऐसा ही एकीकरण करते हैं। जैसे–

- आज मैंने *15 रन* बनाए।
- पिताजी ने मुझे *10 रुपए* दिए। मैंने मेले में आइसक्रीम खाई।
- मैं तो तेरे से भी *लम्बा* हूँ।
- मैं तुमसे भी *तेज़ दौड़* सकता हूँ।

यहाँ हम देख सकते हैं कि न सिर्फ़ भाषा और गणित, बल्कि परिवेश के अनुभव भी इनमें गुँथे हुए हैं। ज़ाहिर है, भाषा की बुनियादी समझ के बिना संख्या की समझ की बात नहीं की जा सकती। लेकिन विद्यालय में भाषा और गणित की पढ़ाई अलग कर दी जाती है। शुरुआत से ही बच्चों की पाठ्यपुस्तकें, कॉपियाँ, कक्षाएँ, परीक्षा, शिक्षण सहायक सामग्री और शिक्षक, सब अलग-अलग होते हैं। यह अलगाव बच्चों की शुरुआती भाषा और गणित सीखने की प्रक्रिया में बड़ी चुनौती बनता है।

एक अच्छी पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और नीति दस्तावेज़ विषयों के बीच परस्पर सम्बन्ध बनाने और उन्हें निरन्तर उभारने की सिफ़ारिश करते हैं। फिर भी विषयों में जो परस्पर सम्बन्ध सहज ही बन रहे होते हैं उन पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। बुनियादी भाषा और गणित पर गम्भीरता से काम का विचार समग्रता और परस्पर सम्बन्धों से ही ज़्यादा मज़बूती पाता है।

लेकिन किसी प्रशिक्षण कार्यक्रम में यह विषय भी बाँट दिए जाते हैं। भाषा के लोगों ने भाषा की, जबकि गणित विषय के लोगों ने गणित की समस्याओं पर ही अधिक ध्यान दिया। शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए बनाए गए मॉड्यूल भी बुनियादी भाषा और गणित में आधे-आधे बाँट दिए गए। शिक्षकों के बीच भी यह विषय बँटे हुए ही हैं। ऐसी स्थिति में सोचने की बात है कि इनके एकीकरण, समग्रता, और परस्पर सम्बन्धों पर बच्चों के साथ आख़िर कब, कहाँ, क्या और कैसे काम हो पाता होगा?

एकीकरण और परस्पर सम्बन्ध के कुछ अनुभव

शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान मैंने कुछ तस्वीरें दिखाते हुए शिक्षकों से अपने अनुभव साझा किए। यह अनुभव बहुत छोटे बच्चों से की गई बातचीत, अलग-अलग कक्षाओं में शिक्षण और शिक्षक प्रशिक्षणों की चर्चा के दौरान प्राप्त हुए थे। ज़्यादातर सवाल और गतिविधियाँ प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों, अभ्यास पुस्तिकाओं, कविता-कहानी पोस्टर या थैला पुस्तकालय की किताबों से लिए गए थे।

1. अवलोकन, बातचीत, स्थान और आकृति की समझ

चित्र 2 : चित्र दिखाकर बात करना

एक पिता अपने 3 साल के बेटे को, जिसने अभी विद्यालय जाना शुरू नहीं किया है, किताब का उपर्युक्त चित्र 2 दिखाकर बातचीत कर रहे थे। एक्वेरियम में बन्द मछली को देखकर बच्चे ने कहा, "यह मछली तो मर जाएगी!"

"क्यों?" पिता ने पूछा।

"वह तो मुड़ ही नहीं पाएगी।" बच्चे ने जवाब दिया।

भला, तीन साल के बच्चे ने मछली के मरने की बात क्यों कही!

जवाब का विश्लेषण करें तो पाते हैं कि उसने अपने अवलोकनों और परिवेश के अनुभवों से 'स्थान और वस्तुओं द्वारा जगह घेरने' के बारे में एक शुरुआती समझ बना ली है। उसे मालूम है कि मछली के ज़िन्दा रहने के लिए ज़रूरी है कि वह आज़ादी से एक्वेरियम में घूम-फिर सके। बच्चे ने चित्र देखकर समझ लिया कि मछली के घूमने-फिरने की गुंजाइश नहीं है। इस स्थिति में, "मछली तो मुड़ भी नहीं पाएगी", बच्चे के इस छोटे-से वाक्य में उसकी गहरी गणितीय समझ की झलक मिल रही है। वह अपने शब्दों में न सिर्फ़ 'स्थान और आकृति की समझ' व्यक्त कर रहा है, बल्कि इसका अनुप्रयोग भी कर रहा है।

इसी तरह के गणितीय कौशलों का उपयोग बड़े लोग भी करते हैं, जब वे देखते हैं कि किसी नए घर में उनकी गृहस्थी का सारा सामान आ जाएगा या नहीं।

2. चित्रकारी, अनुपात की समझ व अनुप्रयोग

कक्षा 1 में बच्चों को हल करने के लिए कार्यपत्रक दिया गया। बच्चे अभी पढ़ना नहीं जानते थे। इसलिए शिक्षक ने पढ़कर सुनाया–

"ख़रगोश और हाथी शरबत पी रहे हैं। दोनों के हाथ में शरबत के गिलास बनाओ और रंग भरो।"

सभी बच्चों ने चित्र बनाया। कुछ के चित्र टेढ़े-मेढ़े थे, कुछ के अच्छे। कुछ की लकीरें सीधी नहीं बनीं, कुछ की बन गई थीं। कई बच्चों द्वारा भरे गए रंग गिलास से बाहर आ गए थे। लेकिन ताज्जुब की बात थी कि सभी बच्चों ने हाथी के लिए बड़ा और ख़रगोश के लिए छोटा गिलास बनाया था।

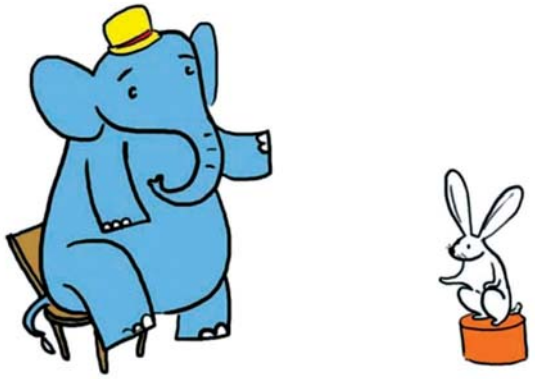

चित्र 3 : आकृतियों के उपयोग से तर्क का निर्माण

शिक्षक ने सवाल किया, "हाथी का गिलास बड़ा क्यों है?"

"हाथी ज़्यादा शरबत पिएगा क्योंकि वह बहुत बड़ा है।" एक बच्चे ने कहा।

हम देख सकते हैं कि बच्चे 'अपने शब्दों में, अपने चिन्तन और सोच' को व्यक्त कर रहे हैं। दैनिक जीवन के अनुभवों और 'परिवेश के अवलोकनों' ने उन्हें चीज़ों में एक स्तर का 'आनुपातिक सम्बन्ध' देखना सिखा दिया है।

हम कक्षा 7 और 8 में बच्चों से 'अनुपात की समझ और अनुप्रयोग' के कुछ ऐसे ही सवाल पूछते हैं। जैसे– कमला ने 2000 रुपए और फ़ातिमा ने 4000 रुपए मिलाए। दोनों ने कुल 6000 रुपए से एक कुटीर उद्योग शुरू किया। एक महीने बाद उन्हें 3000 रुपए का मुनाफ़ा हुआ। बताओ, दोनों के बीच इस मुनाफ़े की रक़म का बँटवारा कैसे होगा? लेकिन कक्षा 1 के बच्चे हाथी और ख़रगोश के लिए शरबत का गिलास बनाते हुए इन्हीं 'अवधारणाओं की बुनियादी समझ और कौशलों के प्रयोग' को प्रदर्शित कर रहे हैं।

3. मिलान, एक–एक की संगति और तार्किक चिन्तन

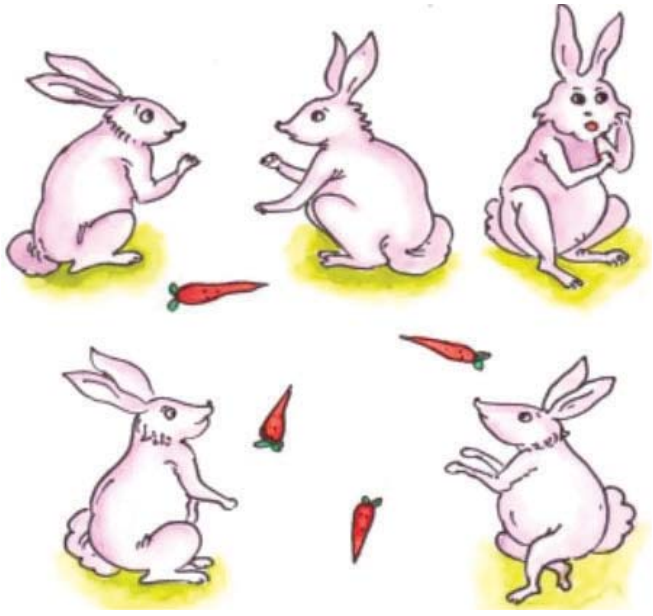

चित्र 4 : एक-एक की संगतता तार्किकता की ओर बढ़ाती है

पिता ने 3 साल की बेटी को चित्र 4 दिखाते हुए कहा, "ख़रगोश गाजर खा रहे हैं।" बेटी कुछ देर चित्र को देखती रही। फिर एक ख़रगोश पर उँगली रखकर कहा, "इसको गाजर नहीं मिलेगी!"

"क्यों?" पिता ने पूछा।

बच्ची ने उँगली से एक-एक गाजर को उसके पास मौजूद ख़रगोश से मिलाते हुए कहा, "यह वाली गाजर इस ख़रगोश को मिलेगी, यह वाली इसको मिलेगी, यह इसे, और यह इस ख़रगोश को। लेकिन यह वाला ख़रगोश तो दूसरी तरफ़ देख रहा है, इसको कुछ नहीं मिलेगा।"

गणित शिक्षक की नज़र से देखें तो यह बच्ची अभी गिनना नहीं जानती है। न उसने ख़रगोश गिने, और न ही गाजर। लेकिन 'एक-एक की संगति' के सिद्धान्त का उपयोग करके वह बता पा रही है कि अभी हर ख़रगोश के लिए एक गाजर उपलब्ध ही नहीं है। यह समझ आगे 'गिनती व मात्रा सीखने' के साथ गणित की दूसरी अवधारणाएँ समझने में भी बहुत काम आएगी।

4. सुनकर समझना, कलात्मक अभिव्यक्ति और गुणनखण्ड

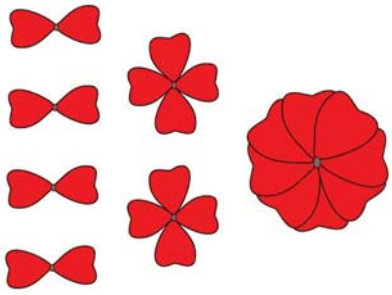

चित्र 5 : सिखाने के लिए आस-पास की चीज़ों (फूल और पंखुड़ियों) का उपयोग

शिक्षक ने कक्षा 3 के बच्चों को, जो अभी ठीक से हिन्दी पढ़ना नहीं जानते थे, एक सवाल पढ़कर समझाया, "फूल की 8 पंखुड़ियाँ हैं। रश्मि ने पहले दो-दो पंखुड़ियों को जोड़कर फूल बनाए, फिर उसने चार-चार पंखुड़ियों को जोड़कर फूल बनाए, फिर 8 पंखुड़ियों को जोड़कर फूल बनाया।"

शिक्षक ने पूछा, "अगर तुम्हें 12 पंखुड़ियाँ दी जाएँ तब कितने फूल बनेंगे?"

एक बालिका ने बताया, "2-2 पंखुड़ी जोड़कर 6 फूल बनेंगे, 3-3 पंखुड़ी जोड़कर 4 फूल बनेंगे, और 4-4 पंखुड़ी जोड़ने से 3 फूल बनेंगे।"

> **दैनिक जीवन में हम विविध सन्दर्भों में गणित और भाषा का एक साथ इस्तेमाल करते हैं। बहुत छोटे बच्चों के साथ कहानी सुनाते, उन्हें कुछ काम बताते, या उनसे खेलों से जुड़े अनुभवों पर बात करते हुए भी गणित और भाषा का उपयोग एक साथ ही होता है।**

अभी बच्चों ने 'पहाड़े बनाना या संख्याओं का गुणनखण्ड' नहीं सीखा है, लेकिन वे 2, 3, 4 पंखुड़ियाँ जोड़कर फूल बना रहे हैं। नतीजे में उन्हें क्रमशः 6, 4 और 3 फूल मिल रहे हैं। इस तरह अप्रत्यक्ष रूप से बच्चे '12 के गुणनखण्ड' ही तो बना रहे हैं। आगे वे इस तरह की गतिविधि व शिक्षक की मदद से किन्हीं दो या अधिक संख्याओं के लिए 'समान गुणनखण्ड' भी खोज लेंगे।

5. पहले और बाद की अवधारणा, अनुमान लगाना व सामाजिक सरोकार

चित्र 6 कक्षा 1 की पाठ्यपुस्तक से है। पाठ का उद्देश्य 'पहले-बाद की अवधारणा' पर काम करना है। यह चित्र दिखाकर शिक्षकों से सवाल किया, "विद्यालय के कपड़ों में दिख रहा लड़का कौन है, और यहाँ क्या कर रहा है?"

शिक्षकों से कई जवाब मिले। जैसे–

- लड़का विद्यालय जाने से पहले पानी भरने आया है।
- अपनी माँ की मदद करने आया है।
- वह नल चलाएगा, उसकी माँ पानी भरेंगी।
- वह मटका उठाने में माँ की मदद करेगा।
- कई बर्तन होंगे। माँ-बेटा दोनों मिलकर ले जाएँगे।

"नल पर इतनी भीड़ क्यों है?" मैंने सवाल किया।

एक शिक्षिका ने जवाब दिया–

- सिरोही में तीन दिन में एक बार पानी आता है। आधे घण्टे बाद बन्द हो जाएगा।
- गाँव में एक ही नल है।
- दूसरे नल पर ऊँची जाति वाले पानी भरते हैं। सबको नहीं आने देते।

6. सूक्ष्म अवलोकन, समरूपता की पहचान और स्वतंत्र अभिव्यक्ति

इसी चित्र 6 में बच्चों ने एक लड़के को देखकर बताया था कि वह अपनी माँ के साथ आया है।

मैंने पूछा, "उसकी माँ कौन है? पीछे वाली महिला या आगे वाली?"

कई बच्चों ने कहा, "पीछे वाली महिला, क्योंकि उन्होंने लड़के के कन्धे पर हाथ रखा है।"

सब बच्चे सहमत थे। उनका तर्क था कि माँ अपने बच्चे के कन्धे पर हाथ रखती है।

इसी बीच एक लड़के ने अपना उत्तर बदल दिया।

उसने कहा, "नहीं, आगे वाली उसकी माँ है।"

"ऐसा क्यों?"

"अरे, उसका मुँह तो देखो, दोनों का मुँह देखो!" उस लड़के ने कहा।

मैंने चित्र में लड़के और महिला का मुँह देखा, और अवाक् रह गया। दोनों का चेहरा एक जैसा था। कितना बारीक़ '*अवलोकन*' था यह! हममें से किसी का ध्यान इस तरफ़ नहीं गया था, लेकिन उस बच्चे ने चेहरों का 'मिलान' कर लिया था। बच्चे घर पर सुनते हैं कि वे अपने पिता की तरह हैं, या उनका चेहरा माँ पर गया है। इस बच्चे ने चेहरों का मिलान कर 'समरूपता' पहचान ली थी। इस बातचीत से बच्चों की 'अवलोकन करने, स्वतंत्र अभिव्यक्ति' और अपने जवाब के समर्थन में 'तर्क खोजने एवं उन्हें प्रस्तुत करने' की क्षमता व कौशलों पर काम करने का कितना अच्छा अवसर बन गया।

चित्र 6 : चित्रों के ज़रिए सूक्ष्म अवलोकन और तर्क की ओर विद्यार्थियों को अग्रसर करना

लेकिन यह अजीब और विचारणीय बात है न, कि बड़ी कक्षाओं में हम इन्हीं बच्चों के साथ गणित, भाषा और अन्य विषयों के शिक्षण में भी 'मिलान करना, समान गुणधर्म, गणितीय खोज, समरूपता, तार्किक चिन्तन, सम्प्रेषण' आदि पर बेहद बनावटी ढंग से काम करते हैं। हम उन्हें यह अवधारणाएँ और कौशल ऐसे सिखाते हैं, जैसे दुनिया में आने के बाद उन्होंने कोई अनुभव लिया ही नहीं है। हमारी शब्दावलियाँ, सन्दर्भ और उदाहरण उनके लिए अपरिचित-से होते हैं, और इसीलिए सीखने में एक चुनौती बनते हैं।

7. सामान्यीकरण व सामाजिक–मानवीय मूल्य

मैंने शिक्षकों से कहा, "मैंने बच्चों से एक और सवाल पूछा था कि चित्र 6 में 'सबसे पीछे' कौन है?"

बच्चों ने चित्र देखकर कई जवाब दिए। जैसे–

- बूढ़े दादा हैं।
- उन्हें दिखाई भी नहीं देता।
- उनका नम्बर सबसे देर में आएगा।

बच्चे उनको बूढ़ा क्यों कह रहे हैं, यह समझने के लिए मैंने कारण पूछा।

एक लड़की ने कहा, "उनके चश्मा लगा है, और वो झुककर चल रहे हैं।"

एक लड़के ने बताया, "उनके बाल भी नहीं हैं।"

चित्र 7 : विद्यार्थियों को एक दूसरे के साथ सीखने के अवसर देना ज़रूरी

बच्चे अपने परिवेश में लोगों को देखकर एक क़िस्म का 'सामान्यीकरण' करते हैं। वे ख़ुद ही तय कर लेते हैं कि किसको भैया कहना है, किसको अंकल, और किसे दादाजी कहना उचित रहेगा। इन बच्चों ने भी उम्र, पहनावा और चाल-ढाल को देखकर 'सामान्यीकरण' कर लिया है। अपने तर्कों में वे इसी सामान्यीकरण को रख रहे थे।

"तुम इस लड़के की जगह होते तो क्या करते?" मैंने पूछा।

बच्चों के जवाब थे–

- हम अपनी माँ की मदद करते। नल चला देते।
- घड़ा उठाने में उनकी मदद करते।
- एक बाल्टी पानी हम भी उठाकर ले आते।
- मैं नल चलाता, और माँ पानी भर लेती।

एक लड़के ने कहा, "जब मेरा नम्बर आता तो अपना घड़ा भर लेता, फिर दादाजी का पानी भी भर देता।"

"क्यों?"

"क्योंकि वे बहुत बूढ़े हैं।"

एक शिक्षक को अपनी कक्षा में यही सब तो चाहिए। पहली कक्षा के छोटे बच्चे 'अपने परिवेश के प्रति सजग' हैं, और अपने आस-पास के लोगों के प्रति 'संवेदनशील' हैं। यही तो असली शिक्षा है। इस पाठ के निर्धारित गणितीय उद्देश्यों से बहुत अधिक सीखने के प्रतिफल प्राप्त किए जा रहे हैं। 'गणित, भाषा, परिवेश व पर्यावरण, मूल्यों की बात, अपनी ज़िम्मेदारी का अहसास' यह सब समझ व संवेदना एक साथ शामिल हो रहे हैं। सीखने-सिखाने की ऐसी प्रक्रिया से कक्षा के लिए निर्धारित उद्देश्यों से कहीं ज़्यादा हासिल किया जा सकता है।

इस बातचीत को सभी शिक्षकों ने बहुत ध्यान से सुना। कई शिक्षक इन चित्रों के फ़ोटो लेने लगे। सम्भवत: इन चित्रों के अवलोकन, विश्लेषण व संवाद से बनी सम्भावनाओं को वे अपनी कक्षा में करके देखना चाहते थे। मैंने उनसे कहा कि इस तरह की सम्भावनाएँ तो हर पाठ, विषय और चित्र में मौजूद होती हैं। और अगर नहीं हैं, तो बतौर एक शिक्षक हमें ज़्यादा-से-ज़्यादा ऐसी सम्भावनाओं के अवसर बनाने चाहिए। इसके लिए हमें ऐसा नज़रिया विकसित करने की ज़रूरत है जिससे आसानी से उपलब्ध सम्भावनाओं को पहचान सकें, और नई सम्भावनाएँ बनाकर कक्षा में काम कर सकें।

समेकन के अन्तिम दौर में एक शिक्षक ने कहा, "सर, आपने तो 'भाषा और गणित के एकीकरण व समग्रता वाली मज़ेदार खिचड़ी' बना दी है। हाँ, लेकिन इसमें 'पर्यावरण और परिवेश के अनुभवों' का छौंक भी लगा है।

हमें अपनी प्राथमिक कक्षाओं में छोटे बच्चों के साथ इसी तरह की स्वादिष्ट खिचड़ी की ख़ुशबू बिखेरते हुए काम करना होगा, तभी हम सही मायने में बुनियादी भाषा और गणित के उद्देश्यों के बेहतर नतीजे प्राप्त कर सकेंगे। यह सुनकर वहाँ मौजूद सारे शिक्षक मुस्कुराने लगे।

नोट- सभी तस्वीरें एससीईआरटी, राजस्थान से साभार प्रकाशित

मोहम्मद उमर ढाई दशकों से विज्ञान और गणित शिक्षण, लेखन और शिक्षक प्रशिक्षण कार्य से जुड़े हैं। आपने 5 साल तक एकलव्य संस्था के साथ शिक्षक शिक्षा और सामग्री निर्माण में काम किया है। पिछले 14 सालों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, राजस्थान में गणित विषय के सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं। आप 3 सालों से अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में फ़ैकल्टी के रूप में शिक्षकों का पेशेवर विकास और गणित विषय में पाठ्यचर्या विकास एवं सामग्री निर्माण का कोर्स पढ़ा रहे हैं।

सम्पर्क : mohammed.umar@azimpremjifoundation.org

गणित किट के साथ बुनियादी संख्या ज्ञान

सरोजनी रावत

गणित शिक्षक का उद्देश्य है कि वे बच्चों के लिए गणित की प्रक्रियाओं को आसान बना सकें, गणितीयकरण की प्रक्रिया का उन्हें एहसास दे सकें, और प्रत्येक बच्चे को गणित कक्षा में होने वाली प्रक्रियाओं से जोड़कर रख सकें। यदि हर बच्चे को गणितीय अवधारणा की प्रक्रिया से होकर गुज़रने का अवसर मिले तो वह अमूर्त विचारों के साथ आसानी से कार्य कर सकेगा। इस लेख में एक शिक्षिका के ऐसे ही प्रयासों को पढ़ा जा सकता है।

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लक्ष्य को 2026-27 तक हासिल करना है। इस दिशा में काम करते हुए मैंने अपने विद्यालय में बच्चों के साथ बुनियादी संख्या ज्ञान पर शिक्षण अधिगम सामग्री (टीएलएम) का उपयोग कर कुछ काम किया। इस प्रयास के मुझे सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं।

कक्षा के बच्चे और उनकी विशेषताएँ

मैं कक्षा 3 में गणित विषय पढ़ाती हूँ। मेरी कक्षा में 28 बच्चे नामांकित हैं। इन बच्चों के दक्षता स्तर अलग-अलग हैं, और इसीलिए मैंने उनकी सोचने-समझने की क्षमता व आवश्यकताओं के आधार पर उनके अलग-अलग समूह बनाए हैं। हम जानते हैं कि हर बच्चा अपने-आप में ख़ास होता है, और हर बच्चे की सीखने की गति एवं उसका तरीक़ा भी अलग होता है। कक्षा में मेरा प्रयास यही रहता है कि मैं इस आयु के बच्चों को गणित के मूर्त अनुभव आवश्यक रूप से दूँ क्योंकि प्राथमिक स्तर का बच्चा बेहद जिज्ञासु होता है, और चीज़ों को करके सीखने, छूकर देखने का कौतूहल उसमें होता है। बच्चों को मूर्त ज़्यादा समझ में आता है। जैसे गिनती है तो वह मौखिक बोलने से ज़्यादा रुचि मूर्त रूप से गिनने में लेता है, उसमें आनन्दित होता है। मापन है तो वह ख़ुद आस-पास की चीज़ों को मापकर देखना चाहता है, तुलना करना चाहता है, और साथियों से बातचीत करके उसकी पुष्टि करना चाहता है। वह अपने अनुभवों को उसमें जोड़ना चाहता है, और इस तरह के काम करते हुए वह बातचीत के अवसर भी तलाशता है।

चित्र 1: हर विद्यार्थी के सीखने की गति और तरीक़ा अलग होता है

प्राथमिक स्तर के बच्चे का सीखना स्वतंत्र होता है। कहा भी जाता है कि आप बच्चे को नियम में नहीं बाँध सकते। ऐसे में करके देखने, छूकर देखने का महत्त्व बढ़ जाता है। मेरे दृष्टिकोण से बच्चे का यह स्वाभाविक व्यवहार प्रारम्भिक गणित की मज़बूत आधारशिला है।

गणित किट का विचार

हमारे विद्यालय में शिक्षा से सरोकार रखने वाली संस्थाओं ने शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवाई है जिसमें 'गणित किट' भी है। इस किट में गिनती, समय, स्थानीय मान, पैटर्न और गणितीय खेलों से सम्बन्धित सामग्री है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के सीखने के जिन तरीक़ों का मैंने ज़िक्र किया है, उनके मद्देनज़र मुझे हमेशा ही लगता था कि बच्चों के साथ कुछ मूर्त वस्तुओं के साथ काम होना चाहिए। मेरे मन में गणित किट का ख़्याल तो था ही और किट मिल भी गई, लेकिन हमारे विद्यालय में सिर्फ़ एक किट होने के कारण उसका लाभ सभी बच्चों को नहीं मिल पा रहा था।

कक्षा में वह किट, प्रदर्शन का एक साधन मात्र बनकर रह गई थी। सवाल था, एक किट से 28 बच्चों को एक ही समय में ख़ुद करके देखने का अवसर कैसे दूँ? कक्षा में जो बच्चे ज़्यादा सक्रिय थे, अधिकतर वही उस किट का प्रयोग कर रहे थे। वहीं जो बच्चे थोड़े उदासीन एवं संकोची स्वभाव के थे, वे इस किट का इस्तेमाल करने में हिचकिचाते थे। इस किट के लिए कुछ निर्देश भी थे कि इसे खोना या तोड़ना नहीं है। यह भी एक वजह थी कि सभी बच्चों को उसका लाभ नहीं मिल पा रहा था, क्योंकि इस तरह यह किट अनुशासन के दायरे में भी बँध रही थी।

फिर इस किट में सभी तरह की अवधारणाओं पर काम करने के लिए भी सामग्री नहीं थी। उदाहरण के लिए, यदि कक्षा में मापन की अवधारणा पढ़ानी है, या क्षेत्रफल, परिमाप, भिन्न, आदि की अवधारणा पढ़ानी है तो उसके लिए किट में सामग्री नहीं थी। गणित किट की इन्हीं सीमाओं को देखते हुए मेरे मन में ख़्याल आया कि मैं एक ऐसी किट बच्चों को उपलब्ध करवाऊँ जिसमें प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई जाने वाली ज़्यादातर गणितीय अवधारणाओं से सम्बन्धित सहायक सामग्री हो। साथ ही, किट ऐसी हो जिसे हर बच्चा बिना हिचक के इस्तेमाल कर सके, और जो बच्चों के ही द्वारा उनके पास उपलब्ध संसाधनों से बनाई गई हो। इसमें बच्चों को ख़ुद से टीएलएम बनाने के अवसर मिलें। इस तरह बनाए गए टीएलएम के साथ बच्चों का एक भावनात्मक लगाव भी होगा। यह लगाव उन्हें अपनी किट के प्रति ज़िम्मेदार बनाने में मदद करेगा, और इससे बच्चों में किट को सँभालने, सहेजने जैसे मूल्य भी विकसित होंगे। मेरा सोचना था कि पाठ्यपुस्तक में आने वाले खेल और गतिविधियों के आधार पर भी सामग्री को उस किट में शामिल किया जाए जिससे पाठ्यपुस्तक एवं किट के बीच एक परस्पर सम्बन्ध बन सके, और किट पाठ्यपुस्तक का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन जाए। यह भी कि किट प्रत्येक बच्चे की पहुँच में हो ताकि वे उसका पूरा इस्तेमाल कर सकें, और सीख सकें। इसके अलावा कुछ और भी पहलू थे जिन्हें मैंने नीचे सूचीबद्ध किया है–

1. बच्चे स्वतंत्र रूप से सहायक सामग्री का इस्तेमाल कर सकेंगे।
2. बहुत-सी गणितीय अवधारणाओं को मूर्त रूप में अनुभव कर सकेंगे।
3. इस्तेमाल में प्रत्येक बच्चे की भागीदारी सुनिश्चित होगी।
4. बच्चे गणित किट का रखरखाव ख़ुद ज़िम्मेदारी से करेंगे।
5. यदि कोई टीएलएम टूटता या खोता है तो उसे दुबारा बनाया जा सकेगा।
6. जितनी ज़्यादा अवधारणाओं पर सहायक सामग्री उपलब्ध होगी उतनी ही बच्चों को अवधारणा स्पष्ट होने में सहायता मिलेगी।
7. बच्चे गणित आनन्द से सीखेंगे।
8. बच्चे कबाड़ से जुगाड़ लगाकर चीज़ें बनाना सीखेंगे।
9. बच्चे अपने घर और विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों को गणित से जोड़कर देख पाएँगे।
10. यह प्रक्रिया बच्चों को बातचीत के अवसर प्रदान कर रही होगी।

चित्र 2 : खेल और गतिविधियों से सीखना

चित्र 3 : खेल का खेल, सीखना का सीखना

गणित किट का निर्माण

इन बिन्दुओं ने गणित किट की आवश्यकता एवं स्वरूप निर्धारण करने में मेरी सहायता की। मैंने योजनाबद्ध तरीक़े से बच्चों के सामने गणित किट की अवधारणा को रखा, और उन शैक्षणिक सहायक सामग्रियों की सूची बनाई जो हमें गणित किट में चाहिए थी। यह सूची इस प्रकार थी–

1. सामग्री रखने के लिए एक बड़ा बॉक्स;
2. 1 से 100 तक की गिनती के कार्ड;
3. गिनमाला;
4. स्थानीय मान कार्ड;
5. इकाई, दहाई, सैकड़ा हेतु बेस टेन ब्लॉक्स;
6. पैटर्न हेतु वस्तुएँ एवं कार्ड;
7. द्विविमीय एवं त्रिविमीय आकृतियाँ;
8. घड़ी;
9. प्ले मनी;
10. गणितीय खेल संग्रह;
11. गणितीय कहानी, कविता संग्रह;
12. भिन्न से सम्बन्धित टीएलएम;
13. कविता, कहानी एवं रोल प्ले हेतु मुखौटे; एवं
14. मापन हेतु सामग्री।

सभी बच्चों ने अपनी-अपनी गणित किट बनाने की शुरुआत की।

किट की शुरुआत बॉक्स बनाने से हुई। बच्चे घरों से बड़े-बड़े गत्ते वाले बॉक्स लाए थे। मैंने उन्हें कलर पेपर, चार्ट, फेविकोल, कैंची, आदि उपलब्ध करवाई। बच्चों ने बेहद सुन्दर बॉक्स बनाया, और उन्हें गणित के चिह्न बनाकर सजाया। उन्होंने उस बॉक्स को नाम दिया 'मेरी गणित किट'। इस कार्य को करते हुए बच्चे एक दूसरे की मदद कर रहे थे, और कलर पेपर का चुनाव कर रहे थे। कुछ बच्चों ने पुरानी किताबों से चित्र काटकर बॉक्स पर चिपकाए और स्केच से उस बॉक्स को सजाया। बच्चों को गणित की कक्षा में इस प्रकार तल्लीन होकर देखने का भी अपना अलग ही सुखद अनुभव रहा। बच्चों को उत्साह था कि अब इसमें क्या-क्या रखने वाले हैं!

सबसे पहले मैंने बच्चों को पानी की बोतल के ढक्कन इकट्ठे करने को कहा। इनसे 50 व 100 ढक्कन की गिनमाला बनाई। गिनमाला में पाँच लाल, पाँच नीले, इस तरह अलग-अलग रंगों के ढक्कन का इस्तेमाल किया ताकि गिनने में आसानी हो। कुछ बच्चों ने मोतियों का इस्तेमाल करते हुए गिनमाला बनाई। गिनमाला के लिए हैंगिंग कार्ड भी बनाए। हैंगिंग कार्ड पर प्लास्टिक पेपर लपेटा गया ताकि उन पर नम्बर लिखकर मिटाए भी जा सकें। इसी तरह, बच्चों ने चार्ट पेपर की कटिंग कर 1 से 100 नम्बर के कार्ड, स्थानीय मान कार्ड और इकाई, दहाई व सैकड़ा के ब्लॉक बनाए।

गत्ते पर वृत्त बनाकर उसकी कटिंग करके उस पर घड़ी बनाई गई, और गत्ते की सुई बनाकर बटन व धागे से केन्द्र में स्टिच किया गया ताकि घड़ी की सुइयाँ घूम सकें और बच्चों को व्यावहारिक घड़ी जैसा अनुभव हो। उत्पादन तिथि, समय सीमा समाप्ति तिथि एवं सामग्री का वज़न देखने हेतु रैपर इकट्ठे कर किट में रखे गए। 25 पैसे, 50 पैसे जैसे पुराने सिक्कों को इकट्ठा करके बॉक्स में रखा गया। कार्ड पर प्ले मनी बनाई गई।

चित्र 4 : स्वयं करके देखना सीखने को स्थाई बनाता है

छोटे बॉक्स का इस्तेमाल करते हुए त्रिविमीय आकृतियाँ बनाकर उन पर तल, कोर व शीर्ष अंकित किए गए। द्विविमीय आकृतियों को पेपर कटिंग करके बनाया गया। मोटे चार्ट द्वारा मुखौटे बनाए गए। A4 साइज़ के पेपर पर गिनती लिखकर बोर्ड गेम बनाए गए, और उन पर खेलने के निर्देश अंकित किए गए। कलर पेपर काटकर पैटर्न बनाए गए। 10 मिली, 100 मिली, 250 मिली, 500 मिली, आदि अलग-अलग माप की ख़ाली बोतलों को भी गणित किट में जगह दी गई। भिन्न में 1/2, 1/4, 3/4 को दर्शाते हुए गत्ते पर कटिंग करके रखा गया। हमने कुछ गणितीय कविताएँ भी इकट्ठी कीं और उन्हें पेपर पर लिखकर गणित किट में रखा।

> **गणित में कविताएँ, लेन-देन का काम करते हुए रोल प्ले जैसे अवसर प्रदान करने पर बच्चों के चेहरे पर चमक आ जाती है, और वे गणित किट की गतिविधियों में बढ़-चढ़कर प्रतिभाग करते हैं।**

कक्षा में गणित किट का उपयोग

जब बच्चों के साथ संख्याओं पर काम करती हूँ तब सभी बच्चों को कार्ड से संख्या बनाने के लिए कहती हूँ। यदि संख्या ग़लत बनती है तब स्थानीय मान कार्ड का इस्तेमाल करने के निर्देश देती हूँ। इससे बच्चे संख्या बना पाते हैं, और संख्या को समझ भी पाते हैं। यही नहीं, बच्चों को विभिन्न संख्याएँ संख्या कार्ड द्वारा प्रदर्शित करने के लिए कहती हूँ। बच्चे इसे एक खेल के तौर पर करते हैं। मसलन, कौन संख्या को जल्दी ढूँढ़ पाते हैं, आदि। संख्या कार्डों की सहायता से और भी कई गतिविधियाँ कक्षा में की जाती हैं। जैसे– संख्या कार्डों को घटते और बढ़ते क्रम में जमाना, कुछ कार्डों को हटा लेना और फिर मिसिंग नम्बर के कार्ड को ढूँढ़ना, 0 से 9 अंकों के कार्ड टेबल पर बिछाकर मेरे द्वारा कही गई 4, 20, 042 जैसी संख्या को बनाकर दिखाना, बेस टेन स्ट्रिप से कही गई संख्या बनाने को कहना, आदि।

गिनमाला की मदद से बच्चों के साथ गिनती, 10-10 की गिनती, सम-विषम संख्या, 2-2 की कूद और जोड़ने-घटाने की प्रक्रिया पर काम करती हूँ। जैसे– गिनमाला पर 20 + 5 या 7 + 5 को जोड़कर हल बताना, इसी तरह घटाने का काम करना, आदि। इसी तरह 2 की कूद व 3 की कूद जैसे काम करने से बच्चे धीरे-धीरे पहाड़े समझने की तरफ़ बढ़े। गणित किट में जो आकृति व नम्बर कार्ड थे, उनसे हमने अलग-अलग पैटर्न भी बनाए।

मैंने पाया है कि इन गतिविधियों से बच्चों में संख्या की मात्रात्मक समझ भी विकसित हुई है। 10 और 100 के ब्लॉक का उपयोग कर जोड़-बाक़ी करने से उनमें हासिल के जोड़ व घटाने की समझ बनाने में मदद मिली है। संख्या व जोड़-घटा की समझ विकसित करने में 'प्ले मनी' खेलने से मदद मिलती है। जब बच्चे असल में लेन-देन की गतिविधि करते हैं तब वे समझ पाते हैं कि जोड़ और घटा में वे क्या कर रहे हैं।

मूर्त त्रिविमीय, द्विविमीय आकृतियों को छाँटना। जैसे– त्रिभुज की, वर्ग की आकृति दिखाओ, वर्ग एवं आयत की आकृति दोनों हाथों में लेकर इनमें समानता एवं अन्तर बताओ, आदि। इसी तरह त्रिविमीय आकृति में घन को हाथ में लेकर इसमें प्रदर्शित करो कि तल कहाँ पर है; कोर कहाँ पर है; किनारे कहाँ हैं; इनकी संख्या कितनी है; क्या आस-पास कोई आकृति है जो इनके जैसी है; आदि। अपने द्वारा बनाई गई घड़ी को हाथ में रखकर दिखाओ कि इस वक़्त क्या समय हुआ है, या 5:00 बजे, 5:15 बजे, 5:30 बजे और 5:45 बजे के समय को अपनी घड़ी में प्रदर्शित करके दिखाओ।

गणित किट के उपयोग के प्रभाव

इस तरह की गतिविधियाँ करते हुए बच्चे एक दूसरे को देखकर, पूछकर सीख रहे होते हैं। एक बड़े समूह के साथ इस प्रकार की गतिविधि हर बच्चे को सीखने का अवसर प्रदान कर रही है। मैंने यह भी पाया है कि बच्चे ऐसे में गणित विषय को बहुत पसन्द कर रहे हैं, और वे अपना पसन्दीदा विषय गणित को ही बताते हैं। गणित में कविताएँ, लेन-देन का काम करते हुए रोल प्ले जैसे अवसर प्रदान करने पर बच्चों के चेहरे पर चमक आ जाती है, और वे गणित किट की गतिविधियों में बढ़-चढ़कर प्रतिभाग करते हैं। आगे मेरी योजना इस गणित किट को और समृद्ध बनाने की है। मैं गणित की पाठ्यपुस्तक में आने वाले खेल और गतिविधियों को भी इस गणित किट में समाहित करने का प्रयास कर रही हूँ।

सरोजनी रावत राजकीय प्राथमिक विद्यालय खारास्रोत, नरेन्द्रनगर, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापिका हैं। उनकी बच्चों को गणित विषय पढ़ाने में विशेष रुचि है। आप शिक्षण के दौरान विद्यालय में बच्चों के साथ दीवार पत्रिका, गीत नृत्य, कविता जैसी सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन भी करवाती हैं। आप सभी को बालिका शिक्षा व पर्यावरण संरक्षण के बारे में प्रेरित करती हैं।

सम्पर्क : parmarsarojani@gmail.com

कक्षा शिक्षण में बातचीत है महत्त्वपूर्ण

अरविन्द कुमार सिंह

कक्षा में बच्चों से बातचीत के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन शिक्षक बच्चों से बातचीत की शुरुआत कैसे करें; विद्यालय व कक्षा की समय सारिणी में इसके लिए जगह कहाँ और कैसे बने; कक्षा में इसके लिए मौक़े कैसे बनें; और इस बातचीत की प्रकृति कैसी हो? इस लेख में लेखक ने इन सभी प्रश्नों पर अपने अनुभव-आधारित विचार प्रस्तुत किए हैं।

> शुरुआती कक्षाओं में बच्चों के साथ बातचीत के लम्बे सत्रों का आयोजन करने से उनकी समस्याओं के बारे में भी पता चलता है।

चित्र 1 : कक्षा की गतिविधियों में सारे विद्यार्थियों को शामिल करना ज़रूरी है

पिछले दिनों बाल पत्रिका *साइकिल* में एक कहानी पढ़ी– 'रोबी'। रोबी जब छठवीं में पहुँचा तो उसे ज़ोर का झटका लगा। झटके का नाम था, 'इंग्लिश मीडियम स्कूल'। पता नहीं, रोबी के पिता को अँग्रेज़ी का ऐसा क्या चस्का लगा कि उन्होंने रोबी को, जो अब तक बांग्ला मीडियम स्कूल में पढ़ता था, अचानक अँग्रेज़ी मीडियम में भिजवा दिया। रोबी को अँग्रेज़ी का ए, बी, सी, डी भी नहीं आता था। पहले ही हफ़्ते अँग्रेज़ी के सर ने रोबी से कहा, "इतने बड़े हो गए और अभी तक ए, बी, सी, डी नहीं आती? कल तक ए, बी, सी, डी रटकर आना।"

अगले दिन सर ने रोबी से पूछा, "ए, बी, सी, डी याद करके आए?"

रोबी बोला, "जी सर!"

मास्टरजी बोले, "तो फिर सुनाओ।"

रोबी ने सुनाना शुरू किया, "ए, एफ़, ज़ेड, एक्स, बी, ई, जी, एस, टी..."

मास्टरजी ने रोका, "रुको, रुको! ऐसे कैसे याद किया है? ए, बी, सी, डी, ई, एफ़, जी, एच, आई..., ऐसे सुनाओ।"

रोबी बोला, "क्यों सर, ऐसे ही क्यों? ए के बाद एस क्यों नहीं आ सकता, बी ही क्यों आता है?"

मास्टरजी तमतमा गए। बोले, "क्योंकि ऐसे ही होता है।"

रोबी बोला, "हर चीज़ का मतलब होता है। आप इसका मतलब समझा दीजिए, मैं वैसे ही याद कर लूँगा जैसे आपने बताया है।"

न तो मास्टरजी ए के बाद बी ही क्यों आता है और सी के बाद डी ही क्यों आता है, का मतलब बता पाए, न रोबी ने उसे कभी वैसे याद किया जैसे सब करते हैं।

ए के बाद एस क्यों नहीं आ सकता, बी ही क्यों आता है? इस प्रश्न का कोई सटीक जवाब नहीं है। इस तरह के न जाने कितने प्रश्न कक्षाओं में बच्चे अकसर पूछते हैं। और अकसर ऐसे प्रश्नों को पाठ्यक्रम के बाहर का प्रश्न बताकर बच्चों को चुप करवा दिया जाता है। ऐसा करते हुए हम बच्चों की जिज्ञासा का, उनकी अपनी बात या विचार रखने की क्षमता का भी दमन कर देते हैं। परिणामस्वरूप कुछ समय बाद बच्चा कक्षा में अपनी जिज्ञासा प्रकट करना छोड़ देता है।

मेरा मानना है कि कक्षा शिक्षण में बातचीत के सत्र होने बहुत ज़रूरी हैं ताकि बच्चे शिक्षण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल हो पाएँ। मैंने पाया है कि कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत करने पर बच्चे ख़ुद से ही बताना शुरू कर देते हैं कि उन्हें क्या आता है और क्या नहीं। शुरुआती कक्षाओं में बच्चों के साथ बातचीत के लम्बे सत्रों का आयोजन करने से उनकी समस्याओं के बारे में भी पता चलता है।

बातचीत की शुरुआत

मैंने अपनी कक्षा की समय सारिणी में एक कालांश कहानियों के लिए नियत किया है। इसका नाम है– 'बस एक कहानी'। इस कालांश का मुख्य उद्देश्य बच्चों को कहानी सुनने और उस पर बातचीत करने के पर्याप्त मौक़े देना है। इस कालांश में, मैं प्रतिदिन बच्चों को एक लघु कथा सुनाता हूँ। अपनी तैयारी के लिए मैं लाइब्रेरी की पुस्तकों का सहारा लेता हूँ। यदि कभी कहानी बड़ी होती है तब वह अगले दिन पूरी होती है। कहानी के मध्य में अथवा कहानी पूर्ण होने के उपरान्त मैं कहानी के सन्दर्भ पर आधारित प्रश्नों पर बच्चों से बातचीत करता हूँ। आगे इसके सोपानों पर चर्चा है।

सोपान 1 : कहानी पढ़कर सुनाना

"एक बार एक जंगल में एक बहुत मोटा मुर्ग़ा रहता था। वह हरे रंग का था। वह बहुत झूठ बोलता था और जंगल के सारे जानवरों को झूठ बोल-बोलकर परेशान करता रहता था...।"

सोपान 2 : प्रश्नोत्तरी

सामान्यत: कक्षा शिक्षण के दौरान हम बच्चों को कहानी सुनाकर कहानी-आधारित ऐसे प्रश्न पूछते हैं–

जंगल में कौन रहता था?

वह किस रंग का था?

वह क्या बोलता था?

समस्या की शुरुआत यहीं से हो जाती है। बच्चों से सीधे कहानी-आधारित प्रश्नों को पूछने पर कुछ बच्चे हाथ खड़ा करेंगे, कुछ उनका चेहरा देखेंगे या नज़रें छुपाएँगे, कुछ बच्चे बैठे-बैठे ही जवाब दे देंगे, वहीं जो चुप थे वो चुप ही रहेंगे। मुझे लगता है, प्रश्नों का चयन प्रकरण-आधारित न होकर सन्दर्भ-आधारित होना बेहतर रहता है। इससे सभी बच्चे बातचीत में जुड़ते हैं। मैं कहानियों पर कुछ इस तरह के प्रश्न पूछता हूँ–

एक पक्षी है जो कुकड़ू कू की आवाज़ करता है। आप जानते हैं उसको?

किसी बच्चे के घर में मुर्ग़ा पाला जाता है?

तुम्हारे घर में कौन-कौन से पक्षी और पशु पाले जाते हैं?

मुर्ग़ा कैसी आवाज़ करता है?

गाय, बकरी कैसी आवाज़ करती हैं?

चित्र 2 : सीखे हुए को साझा करने का आत्मविश्वास

बच्चे प्रश्नों के उत्तर देते हैं। कभी-कभी वे ख़ुद भी प्रश्न पूछ लेते हैं, और ऐसा भी होता है कि बच्चों के प्रश्नों से, उत्तरों से नए प्रश्न भी सामने आते हैं।

सोपान 3 : बातचीत के परिणाम

इस तरह की बातचीत के बाद मैं बच्चों से कहानी पर आधारित प्रश्न पूछता हूँ। जैसे–

जंगल में कौन रहता था?

वह कैसा था?

वह क्या बोलता था?

अकसर ज़्यादातर बच्चे उत्तर देते हैं, और यह प्रक्रिया उन्हें रुचिपूर्ण लगती है। बच्चे अपने दैनिक जीवन के अनुभवों और कहानी के अनुभवों में एक सम्बन्ध बनाते हुए सीखते हैं।

चित्र 3 : तरह-तरह की चिट्ठियाँ

बातचीत शुरू करने का एक तरीक़ा यह भी

कक्षा 3 की पुस्तक *हमारा परिवेश* के एक पाठ 'हमारा घर' का शिक्षण करने के दौरान की गई बातचीत।

यह कहानी है जया और जगत के दादी के साथ घूमने की। घूमते हुए जगत हर एक इमारत को घर समझने लगता है। घर और अन्य इमारतों में अन्तर उसे बताया जाता है।

इस प्रकरण पर शिक्षक के रूप में मेरी और बच्चों की बातचीत–

शिक्षक : क्या आपने अस्पताल देखा है?

बच्चे : हाँ, हम सभी ने अस्पताल देखा है।

शिक्षक : आप बताओ, अस्पताल और किसी अन्य इमारत में क्या अन्तर होता है? क्या हम किसी भी इमारत को अस्पताल बोल सकते हैं?

बच्चों ने कोई जवाब नहीं दिया।

तब मैंने सभी से कहा कि आप अपनी आँखें बन्द कर लें, और उस दिन के बारे में सोचना शुरू करें जब कभी आप अस्पताल में गए थे। जैसे–

आप अस्पताल में किस वजह से गए थे?

क्या आप ख़ुद बीमार थे, या किसी अन्य रिश्तेदार को देखने गए थे?

अन्दर आपको कुछ लोग दिखाई दिए होंगे। वे क्या-क्या कर रहे थे?

क्या वहाँ कोई निशान बने हुए थे?

किस तरह के निशान थे?

क्या वहाँ काम करने वाले लोगों की ड्रेस का रंग एक-सा था?

क्या वहाँ कुछ अजीब तरह की गन्ध या दुर्गन्ध आ रही थी?

बच्चों को आँखें बन्द रखते हुए एक-एक करके प्रश्न का उत्तर बताने को कहा। बच्चों ने बहुत सारी बातें बताईं। जैसे– उन्होंने प्लस का निशान देखा। सफ़ेद रंग का कोट पहने लोग देखे। स्टेथोस्कोप, नर्स, कैंची, पट्टी, बहुत सारे बेड, सिरिंज देखीं, अग्निशमन यंत्र देखा। उन्होंने बताया कि वहाँ दवाइयों और फिनाइल की गन्ध आ रही थी।

मैंने उनसे पूछा, "अब आपको समझ आया कि अस्पताल में क्या-क्या होता है?

इसी प्रकार, मैंने उनसे डाकख़ाने के बारे में बातचीत की। हालाँकि डाकख़ाने के बारे में बताने में सबसे बड़ी समस्या यह है कि आज के समय में चिट्ठियों का लिखना और उनका घरों पर आना लगभग समाप्त हो चुका है। फिर भी बातचीत की कोशिश की गई–

शिक्षक : यदि आपको अपने किसी रिश्तेदार को कोई बात बतानी हो तो आप क्या करते हैं?

बच्चे : हम उन्हें फ़ोन से इस बारे में बता देते हैं।

शिक्षक : यदि आपके पास फ़ोन न हो, और रिश्तेदार आपसे दूर रहते हों तब आप क्या करते हैं?

बच्चे : हमारे घर से कोई रिश्तेदार के घर पर उन्हें सूचना देने जाता है।

शिक्षक : यदि रिश्तेदार के घर जाने के लिए कोई व्यक्ति उपलब्ध न हो, या आप वहाँ नहीं जा सकते हों तब आप क्या करेंगे?

बच्चे निरुत्तर थे।

शिक्षक : क्या आपके यहाँ ऑनलाइन सामान आता है?

बच्चे : हाँ! हमारे कुछ रिश्तेदार अपने घर ऑनलाइन सामान मँगाते हैं।

मैंने ऑनलाइन सामान ऑर्डर करने से लेकर सामान घर तक पहुँचने तक की पूरी प्रक्रिया पर उनसे बातचीत की। यह भी

बात हुई कि मोबाइल के आने से पहले लोग टेलीफ़ोन का प्रयोग करते थे, और टेलीफ़ोन से पहले चिट्ठियाँ भेजी जाती थीं। मैंने डाकख़ाने से पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय पत्र, आदि का इन्तज़ाम किया और उन्हें कक्षा में बच्चों के सम्मुख रखा। इससे उन्हें प्रक्रिया समझने में मदद मिली। बच्चों को विद्यालय की मासिक बाल पत्रिकाओं को दिखाया और बात की कि यह पत्रिकाएँ इतनी दूर से किस प्रकार हम तक पहुँचती हैं। उन्हें पुस्तकों, कॉपी और अन्य सामान पर लिखे हुए एड्रेस को दिखाते हुए पते और पिनकोड पर बातचीत की।

> **बच्चे अपने दैनिक जीवन के अनुभवों और कहानी के अनुभवों में सम्बन्ध बनाते हुए सीखते हैं।**

बातचीत का एक और तरीक़ा

एकलव्य पब्लिकेशन द्वारा प्रति माह प्रकाशित की जाने वाली बाल विज्ञान पत्रिका *चकमक* के 'क्यों-क्यों' कॉलम में हर माह एक प्रश्न पूछा जाता है। इस कॉलम के प्रश्न भी कक्षा में बच्चों से बातचीत का एक ज़रिया बने हैं। अभी हाल ही में इस कॉलम में प्रश्न था, "हमें बड़ों की बात माननी चाहिए, वो भी अकसर बिना सवाल किए। क्या तुम्हें भी ऐसा ज़रूरी लगता है? और क्यों? और क्या तुम चाहोगे कि तुम्हारी बात भी लोग बिना सवाल किए मानें? और क्यों?" बच्चों ने इस प्रश्न पर बातचीत की, और फिर अपने उत्तरों को लिखा भी।

कक्षा में बातचीत के फ़ायदे

बातचीत दोतरफ़ा प्रक्रिया है। बच्चों से बात करते हुए बच्चे सीखते हैं और उनके जवाब हमें भी कुछ सिखाते हैं। बच्चों से बातचीत करते हुए मेरी जानकारी भी बहुत बढ़ी है। उनसे मुझे गाँव के परिवेश के बारे में सीखने को मिला है। मुझे फ़सलों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई है। जैसे– उन्हें कितना पानी दिया जाता है, और कब बोया व काटा जाता है। कई सब्ज़ियों व नए-नए व्यंजनों के बारे जानकारी प्राप्त हुई। जैसे– तोरई के फूलों की सब्ज़ी बनती है, यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी। बातचीत कई सम्भावनाओं को खोलती है। इनमें से कुछ हैं–

1. बातचीत में भाग लेते हुए बच्चों को किसी मुद्दे पर आगे खोज करने के लिए प्रोत्साहित महसूस कर सकते हैं।
2. कक्षा के माहौल को उत्साहपूर्ण बनाते हुए, यह बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक है।
3. सभी को अपनी बात रखने के पर्याप्त अवसर प्रदान करती है।
4. अवलोकन करते हुए आकलन करने का अवसर देती है।
5. बार-बार बातचीत से विषय की समझ बेहतर होती है जो अधिगम को स्थाई बनाने में मददगार होती है।
6. यह न्यूनतम अधिगम वाले बच्चों को कक्षा में सहभागिता प्रदान करने का मौक़ा देती है।

बातचीत के दौरान बच्चों को सोचने के पर्याप्त मौक़े मिलते हैं। बातचीत के टॉपिक से अपने-आप को जोड़ने के लिए बच्चों को अपनी पुरानी यादों या अपने किसी जीवन के प्रसंग के बारे में बताना पड़ता है। इस प्रकार, बातचीत में भी बच्चों के कम-से-कम तीन कौशलों-सुनने, बोलने और सोचने-पर कार्य तो होता ही है जोकि सीखने के लिए अति आवश्यक है। हमें यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि बच्चे किसी पाठ या प्रकरण के बारे में क्या सोचते और समझते हैं। और बातचीत इसमें मददगार होती है। शिक्षण के दौरान बातचीत करने से कक्षा में अकसर शान्त रहने वाले या किसी भी गतिविधि में भाग नहीं लेने वाले बच्चों की भी शैक्षणिक एवं ग़ैर-शैक्षणिक प्रगति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

सन्दर्भ

पाठ्यपुस्तक *हमारा परिवेश*, कक्षा 3, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश

अरविन्द कुमार सिंह पिछले 8 वर्षों से उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, ज़िला बुलंदशहर में सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। उनकी कक्षा के विद्यार्थी पिछले दो वर्षों से *उड़ान* नामक दीवार पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं। उनके विद्यालय के विद्यार्थियों के लेख, कविता, कहानी और चित्र बच्चों की पत्रिका *चकमक* में लगातार प्रकाशित हो रहे हैं।

सम्पर्क : arv.kiet2011@gmail.com

भय से बाधित होता है सीखना

किशन लाल सालवी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की कल्पना में एक अच्छा विद्यालय वह है जहाँ हर बच्चे के लिए सम्मान, सुरक्षा, सहानुभूति, ख़ुशी और सीखने के लिए प्रेरित करने वाला वातावरण हो। लेकिन "बच्चे दण्ड और भय से ही अच्छा पढ़ते हैं" की आम धारणा के कारण सही मायने में सीखना बाधित होता है। यह लेख पिटाई और डर से बच्चे के व्यक्तित्व व सीखने पर पढ़ने वाले दुष्प्रभावों की पड़ताल करता है, और बेहतर सीखने व इसके लिए अच्छे विद्यालय की कल्पना को आकार देने के अनुभव-आधारित तरीक़े सुझाता है।

भय के बारे में समाज का नज़रिया

मैं राजसमन्द, राजस्थान के एक छोटे-से गाँव के सरकारी प्राइमरी विद्यालय में शिक्षक हूँ। यहाँ तक़रीबन 15-16 वर्षों से पढ़ा रहा हूँ। गाँव के लोग कृषि पर निर्भर होने की वजह से बहुत समृद्ध नहीं हैं। जब मैंने विद्यालय में पढ़ाना शुरू किया, देखा कि ज़्यादातर अभिभावक कहते थे कि पढ़ने के लिए बच्चों को यदि मारना भी पड़े तो इस बात से उन्हें कोई दिक़्क़त नहीं है।

समाज की यह आम समझ है कि बच्चों को अगर सिखाना है तो उन्हें मारना ही पड़ेगा। शिक्षकों और अभिभावकों में यह आम धारणा है कि बच्चों से सम्बन्धित किसी भी समस्या का एक ही उपचार है, और वह है 'पिटाई'। वे यह भी मानते हैं कि पिटाई के भय से बच्चा कोई ग़लत काम नहीं करेगा और बेहतर इन्सान बन जाएगा। इसका एक अन्य पहलू भी है कि कोई शिक्षक बच्चों से बहुत प्यार करता है, इसीलिए उनकी इतनी पिटाई करता है कि कहीं वे बिगड़ न जाएँ। पर यह सभी धारणाएँ, सच्चाई से कोसों दूर हैं।

चित्र 1 : ख़ुश रहना, रुचि लेना सीखने के शुरुआती और महत्त्वपूर्ण पहलू हैं

चित्र 2 : साझेदारी से सीखने का सुख

भय से गुमसुम रहते हैं बच्चे

शुरू में, जब मैं विद्यालय आया, मैंने देखा कि बच्चों में बहुत झिझक थी। वे किसी भी विषय को समझने के लिए या नई चीज़ें सीखने के लिए शिक्षक के पास जाने में हिचकिचाते थे। उनको पढ़ाते समय मैंने पाया कि वे पढ़ाया हुआ समझ नहीं रहे थे। पाठ पढ़ाते समय उनकी तरफ़ से कोई सवाल नहीं आते थे। अगर मैं उनसे कोई सवाल पूछता तब भी उनका कोई जवाब नहीं आता था। ज़्यादातर समय वे मेरी कक्षा में गुमसुम से बैठे रहते थे। बच्चों में नए पाठ को लेकर कोई उत्सुकता नहीं होती थी। ऐसा लगता था कि वे शारीरिक रूप से तो कक्षा में हैं, लेकिन मानसिक रूप से नहीं। बच्चों के साथ कक्षा में कोई गतिविधि करने की कोशिश करता, उसमें उनकी सहभागिता बहुत कम रहती। उन्हें ज़बरदस्ती ही गतिविधियों में शामिल करवाया जाता।

डर सीखने को रोकता है

बच्चों को अगर सिखाना है तब वास्तव में हमें उन्हें पिटाई से दूर ही रखना पड़ेगा। पिटाई के सहारे उनसे बोलकर काम तो करवाया जा सकता है, लेकिन कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता, लर्निंग नहीं होगी। हमेशा बच्चे को पीटते रहने से, या पिटाई का डर बनाए रखने से उसका ध्यान हर समय उस तरफ़ रहेगा कि कहीं मेरी पिटाई न हो जाए। बच्चे को हमेशा यह डर लगा रहता है कि कहीं उससे कोई ग़लती न हो जाए। बच्चे ग़लती के डर से सीखने पर ध्यान ही नहीं दे पाते हैं। वे शिक्षक पर ज़रूर ध्यान देते हैं कि कब उनका हाथ उठेगा और हमारी पिटाई हो जाएगी। जो बच्चे भय में रहते हैं, वे सीख नहीं पाते हैं।

हमें इस बात को समझना पड़ेगा कि बच्चे विद्यालय में अपनी पहचान और स्वाभिमान लेकर आते हैं। वे ऐसी पारिवारिक पृष्ठभूमि से आते हैं जहाँ बच्चों को मारना जायज़ माना जाता है, जो कि सही नहीं है। ऐसी परिस्थिति में, वह घर से भी मार खाकर आए, और विद्यालय आकर भी मार खाए, यह मुनासिब नहीं। इससे उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है। ऐसा ज़्यादा दिनों तक नहीं चल पाता, और बच्चे विद्यालय से पलायन कर जाते हैं।

कहानी मुकेश की

कक्षा 5 में मुकेश नाम का बच्चा पढ़ता था। वह शुरू में बहुत झगड़ालू प्रवृत्ति का था। साथी बच्चों के साथ बात-बात पर झगड़ा करता। पढ़ाई में भी उसका ध्यान नहीं रहता। वह प्रतिरोध करता था जिस कारण उसके साथ काम करने में काफ़ी दिक़्क़त होती थी। फिर हमने उसके साथ बात की। पता चला कि उसका परिवार उस पर बहुत नियंत्रण करता है। वह अपने घर में बोली जाने वाली ग़लत शब्दावली का इस्तेमाल विद्यालय में करता। फिर हमने उससे अलग-अलग चीज़ों पर चर्चा करनी शुरू की। उसे उसकी अपनी भाषा में समझाना शुरू किया। उसे विभिन्न तरह की गतिविधियों में शामिल और प्रोत्साहित किया। उसके लिए ऐसी गतिविधियों का चयन किया जिन्हें वह कर पाए। जैसे, उसे यह समझा दिया कि संज्ञा क्या होती है, और फिर पाठ्यपुस्तक के एक पाठ में से उसे संज्ञा शब्दों को छाँटने के लिए कहा। जब उसने यह काम पूरा किया, उसका आत्मविश्वास देखते ही बना।

सुबह की सभा में उसे बोलने, अपनी बात रखने के लिए प्रोत्साहित किया। गत वर्ष, जब मई में समर कैम्प लगा था तब यह बच्चा किसी भी गतिविधि में सहभागिता नहीं कर रहा था। लेकिन बाद में धीरे-धीरे गतिविधियों में उसकी भागीदारी बढ़ने लगी। अब वह बच्चा पढ़ने-लिखने की अच्छी स्थिति पर है। सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि मुकेश अब कक्षा में अधिक समय व्यतीत करने लगा है क्योंकि उसे कक्षा में स्वीकार्यता मिली है। उसका ख़ुद पर विश्वास बना रहे, इसके लिए हम उसे समय-समय पर उसका पोर्टफ़ोलियो दिखाते रहते हैं ताकि वह ख़ुद की प्रगति देख सके।

मुकेश जब कक्षा 4 में पढ़ता था तब उसे हिन्दी पढ़ने में तो दिक़्क़त थी ही, पर अँग्रेज़ी की किताब पढ़ने में ज़्यादा दिक़्क़त थी। लेकिन वह अब दोनों विषय अच्छे से पढ़ रहा है।

कक्षा प्रक्रिया को कैसे भयमुक्त बनाया ?

1. डण्डे या डर के किसी भी माध्यम को कक्षा से दूर रखा

मैंने महसूस किया है कि डर जैसी चीज़ हमारे विद्यालय के बच्चों के साथ नहीं होनी चाहिए। अगर हम बच्चों को मानवीय और शिक्षासम्मत तरीक़े से सिखाना चाहते हैं, हमें सज़ा के लिए काम में आने वाली डण्डे जैसी चीज़ें कक्षा से हटानी होंगी। हमारा उद्देश्य है कि बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी व निडर होकर दौड़ते हुए विद्यालय आएँ। उन्हें विद्यालय में मज़ा आए, तभी लगेगा कि यह विद्यालय है। अन्यथा विद्यालय उनको सज़ा लगता है। इसके लिए हमने भय और सज़ा के माहौल को मिटाने के लिए भरसक कोशिशें कीं।

> **कक्षा में सभी बच्चों को सवाल करने की आज़ादी है। बच्चे पाठ से सम्बन्धित और अन्य सभी तरह के सवाल कर सकते हैं।**

चित्र 3 : अर्थपूर्ण बातचीत से सीखते हैं बच्चे

2. बच्चों की भाषा का उपयोग और प्रोत्साहन

अगर हम बच्चों का भय दूर कर लेंगे तब वे बिना हिचक अपनी बात कह पाएँगे। इसके लिए मैंने शिक्षण के दौरान अपना व्यवहार बदला। मैं उनसे आराम से बात करता, उससे भी ज़रूरी, उनकी बात को ध्यान से सुनता, उनके साथ दोस्ताना व्यवहार रखता। बच्चों की हिचकिचाहट दूर करने के लिए उनकी भाषा में बात करने लगा, उनके अनुकूल होने लगा, और उनकी छोटी-छोटी उपलब्धियों को प्रोत्साहित करने लगा। ऐसा करने से बच्चे धीरे-धीरे मेरे नज़दीक आने लगे हैं।

3. स्वतंत्र अभिव्यक्ति के मौक़े देना

शिक्षण के दौरान पाया कि भय की अनुपस्थिति में बच्चे में आत्मविश्वास आता है, और आत्मसम्मान भी बढ़ता है। हमने बच्चों के संकोच को दूर करने के लिए बहुत सारी गतिविधियों की रूपरेखा बनाई, सुबह की सभा में बच्चों का भाग लेना अनिवार्य किया। छोटे-से-छोटा बच्चा भी प्रार्थना सभा में सामने आएगा और बिना डरे, बिना हिचके अपनी बात पूरे आत्मविश्वास के साथ रखेगा। फिर चाहे वह कहानी हो, कविता हो या किसी अन्य तरह की प्रस्तुति। इसका प्रभाव यह हुआ कि अब ज़्यादातर बच्चे बेझिझक सुबह की सभा में अपनी बात रखते हैं।

कई बार प्रार्थना सभा में बच्चे व्यक्तिगत बातें भी साझा करते हैं। इसे हम बढ़ावा भी देते हैं। हमारा मानना है कि जब बच्चे अपनी व्यक्तिगत बातें रख रहे होते हैं, वे विद्यालय के साथ अपना एक अन्तरंग रिश्ता भी बना रहे होते हैं। इसलिए जब बच्चे अपने निजी अनुभव रखते हैं, उन्हें रोका नहीं जाता।

4. गतिविधि–आधारित शिक्षण

कक्षा में अधिकतर शिक्षण गतिविधि-आधारित होता है। इसकी वजह से बच्चों को ज़्यादा नियंत्रित करने की ज़रूरत नहीं पड़ती। ऐसी बहुत सारी गतिविधियाँ बनाई गई हैं जिनमें ज़्यादा-से-ज़्यादा बच्चे भाग ले सकें। उदाहरण के लिए, एक 'शब्द खेल' बनाया है जिसमें बच्चे ख़ुद जाकर डिब्बे से शब्द कार्ड उठाते हैं। अगर बच्चा उस शब्द को सही तरीक़े से पढ़ लेता है, वह एक क़दम आगे बढ़ जाता है। इस तरह ये शब्द कार्ड सारे बच्चों के पास घूमते हैं। जो बच्चा जितने ज़्यादा शब्द पढ़ पाता है, वह उतना ही आगे बढ़ जाता है। ये गतिविधियाँ बच्चों को रुचिकर भी लगती हैं, और सीखने से उनका जुड़ाव भी बनाती हैं। इससे कक्षा में अव्यवस्था की स्थिति नहीं बनती है। इसी प्रकार कक्षा शुरू होने से पहले की गतिविधियाँ भी बच्चों को व्यवस्थित बनाती हैं। जैसे– कौन-सा समूह सफ़ाई कर रहा होगा, कौन पानी भर रहा होगा, कौन पौधों को पानी दे रहा होगा, आदि।

5. रोक–टोक मुक्त वातावरण

बच्चों पर किसी भी तरह की रोक-टोक नहीं लगाई जाती। उन्हें अगर पानी पीने जाना है या टॉयलेट जाना है, वे ख़ुद उठकर चले जाते हैं और वापस आ जाते हैं। इसी तरह, किसी बच्चे को अपनी बात कहनी है, बिना रोक-टोक कार्यालय में आकर अपनी बात कह सकता है। कार्यालय से किसी सामान के इस्तेमाल को लेकर भी कोई पाबन्दी नहीं है। नियम यही है, सामान जहाँ से उठाया गया है उसे वहीं व्यवस्थित जमा दिया जाए।

6. समस्या–समाधान की व्यवस्था

बहुत बार बच्चों की पिटाई इसीलिए करते हैं क्योंकि वे आपस में लड़ते हैं। उस समय जिस बच्चे ने दूसरे बच्चे को पीटा होता है, या फिर जो कम पिटा हुआ लगता है, हम उसे सज़ा दे देते हैं। इससे बच्चों के बीच नाराज़गी बढ़ जाती है। वे सोचते हैं कि मुझे उसकी वजह से सज़ा दी गई है। अगर बच्चों की लड़ाई में से सज़ा को बाहर निकाल दिया जाए तब बच्चे बहुत जल्दी लड़ाई भुला देते हैं, और एक साथ खेलने या काम करने लग जाते हैं। इसीलिए जब हम दो बच्चों को लड़ते देखते हैं तब दोनों को पहले एक साथ बुलाकर बात करते हैं, फिर एक-एक करके अलग से बातचीत की जाती है। उस समय बच्चे की सबसे बड़ी ज़रूरत उसे सुना जाना होती है न कि दूसरे को दण्डित करवाना।

7. सवाल करने की आज़ादी

कक्षा में सभी बच्चों को सवाल करने की आज़ादी है। बच्चे पाठ से सम्बन्धित और अन्य सभी तरह के सवाल कर सकते हैं। हम इस बात की कोशिश करते हैं कि बच्चों को सवालों के सन्तोषजनक जवाब मिलें ताकि उनकी जिज्ञासा शान्त हो सके। बच्चे किसी जिज्ञासा के चलते ही सवाल पूछते हैं। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि जब हम बच्चों को सवाल करने की स्वतंत्रता देते हैं, वहीं हमारी भी जवाबदेही तय हो जाती है। फिर बच्चा अगर हमसे कोई निजी सवाल भी कर बैठे तो उसे डाँटकर चुप नहीं करा सकते। मिसाल के तौर पर, अगर मुझे विद्यालय में आने में कभी देरी हो जाती है और बच्चे पूछते हैं कि सर, आज आप लेट कैसे हो गए। यहाँ मेरी ज़िम्मेदारी बनती है कि बच्चों को पूरी सच्चाई के साथ जवाब दूँ। सवाल करने की इस प्रक्रिया में शिक्षक और विद्यार्थी, दोनों की एक दूसरे के प्रति बराबर की जवाबदेही रहती है।

मेरी समझ

- भय और पिटाई से बच्चे सीखते नहीं, बल्कि उनकी सीखने की गति और धीमी हो जाती है। और कुछ परिस्थितियों में भय के कारण सीखना-समझना हमेशा के लिए अवरुद्ध हो जाता है।
- भय की वजह से बच्चे धीरे-धीरे अपना आत्मविश्वास खोते चले जाते हैं, और कोई भी नया काम शुरू करने या सीखने में उनकी झिझक हमेशा बनी रहती है।
- डर दिखाने के अलावा भी बहुत सारे तरीक़े हो सकते हैं जिनके ज़रिए बच्चों को व्यवस्थित कर रचनात्मक कार्यों में संलग्न किया जा सकता है।
- अगर कक्षा में हर कार्य को करने की एक प्रणाली एवं समय तय किया जाता है तब बच्चों को अपना दिन और समय व्यवस्थित करने में मदद मिलती है।
- बचपन का डर जीवनपर्यन्त साथ बना रहता है। अवचेतन स्तर पर उसकी उपस्थिति में बच्चों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास बाधित हो जाता है।

किशन लाल सालवी राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गाडरियावास, बामनियाँ कलाँ, ज़िला राजसमन्द, राजस्थान में विगत 17 वर्षों से शिक्षक हैं। उनकी विद्यार्थियों को अँग्रेज़ी और पर्यावरण अध्ययन विषय पढ़ाने में विशेष रुचि है। साहित्यिक रचनाएँ, विशेष रूप से कहानियाँ पढ़ना उन्हें बहुत पसन्द है।

सम्पर्क : kishankunj2@gmail.com

एक विद्यालय का रूपान्तरण

एम वल्ली और के गांधीमती

पुदुकुप्पम के सरकारी प्राथमिक विद्यालय का रूपान्तरण इस बात का जगमगाता उदाहरण है कि किस प्रकार जुनून, रचनात्मकता और सामुदायिक सहभागिता से किसी संस्था को पुनर्जीवित किया जा सकता है। जो विद्यालय बन्द होने की कगार पर था, वही विद्यालय अब अकादमिक रूप से एक बेहतर केन्द्र के रूप में उभरा है।

चित्र 1 : आज़ादी, आनन्द और आत्मविश्वास से लबरेज़ बचपन

पुदुचेरी के एक छोटे-से तटीय गाँव पुदुकुप्पम के बीचोबीच एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय था जो बन्द होने की कगार पर था। इस विद्यालय में केवल 16 विद्यार्थी नामांकित थे। अतः शिक्षा निदेशालय को लगा कि यह विद्यालय समुदाय के लिए ज़्यादा फ़ायदेमन्द नहीं है, और इसलिए इसे पास के एक विद्यालय के साथ मिला देना चाहिए। लेकिन इस निर्णय ने एक असाधारण परिवर्तन को जन्म दिया जिसका नेतृत्व एक भावुक शिक्षक और एक समर्पित टीम ने किया। इन लोगों ने तय किया कि वे अपने विद्यालय को गुमनामी के अँधेरे में खोने नहीं देंगे।

यदि एक संस्था के रूप में किसी विद्यालय को प्रभावी ढंग से कार्य करना है और प्रगति करनी है तो इसके लिए कई संसाधनों की आवश्यकता होती है। मसलन, एक अच्छा बुनियादी ढाँचा, कुशल मानव संसाधन, समर्पित शिक्षक, मज़बूत नेतृत्व और सबसे महत्त्वपूर्ण, वहाँ के समुदाय की सद्भावना। सरकारी विद्यालय अकसर असन्तोषजनक / निम्नस्तरीय शिक्षा प्रदान करने की ग़लत धारणा का शिकार हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप नामांकन कम हो जाता है, और अन्ततः या तो उन्हें बन्द कर दिया जाता है या उनका विलय कर दिया जाता है। इस विद्यालय का भी यही हश्र होने वाला था। यह एक प्रेरणादायक कहानी है कि कैसे एक संघर्षरत विद्यालय ने इस ग़लत धारणा को दूर किया, शिक्षा को फिर से परिभाषित किया, और अपने विद्यार्थियों व समुदाय के लिए उम्मीद की किरण बन गया।

समुदाय और विद्यालय के बीच की खाई को पाटना

सालों से गाँव वाले यह मानते आ रहे थे कि सरकारी विद्यालय निजी विद्यालयों की तुलना में निम्न स्तर की शिक्षा प्रदान करते हैं। सुरक्षा सम्बन्धी चिन्ताएँ, पुरानी शिक्षण पद्धतियाँ और बुनियादी ढाँचे की कमी के कारण अभिभावक अपने बच्चों का

नामांकन कराने से और भी ज़्यादा हिचकिचाते थे। सरकारी विद्यालयों को अकसर उन विद्यार्थियों के लिए एक अन्तिम विकल्प के रूप में देखा जाता था जो अकादमिक या सामाजिक रूप से संघर्ष करते थे। इसलिए विद्यालय को पुनर्जीवित करने की दिशा में पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण क़दम यह था कि इस धारणा को बदला जाए।

विद्यालय ने इस दृष्टिकोण को बदलने का दृढ़ संकल्प लिया, और एक आकर्षक एवं गतिशील शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए एक महत्त्वाकांक्षी मिशन शुरू किया। केवल कक्षा शिक्षण पर ध्यान देने की बजाय, स्टाफ़ ने विद्यालय और गाँव वालों के बीच की खाई को पाटने के लिए समुदाय-संचालित कार्यक्रमों और गतिविधियों की एक शृंखला शुरू की। इसमें वार्षिक समारोह, खाद्य समारोह, सीखने का समारोह, वाचन समारोह, विज्ञान मेला, *तिरुक्कुरल* (पवित्र श्लोक) प्रतियोगिताएँ, किसान दिवस समारोह, कला प्रदर्शनी, खेल प्रतियोगिताएँ, आदि शामिल थीं।

इन गतिविधियों ने न केवल विद्यालय के जीवन्त माहौल को दर्शाया, बल्कि सरकारी शिक्षा के प्रति समुदाय की रुचि को भी फिर से जगाया। अब अभिभावक और गाँव वाले विद्यालय को एक असफल संस्था की बजाय एक बेजोड़ केन्द्र के रूप में देखने लगे।

लोकप्रिय कार्यक्रमों द्वारा समुदाय को जोड़ना

विद्यालय ने समुदाय को विद्यालय से जोड़ने, और दोनों के बीच एक मज़बूत तालमेल बनाने के लिए कई तरह की गतिविधियों का आयोजन किया। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

फ़ूड फ़ेस्टिवल

पारम्परिक भोजन का जश्न मनाने, और खाने की स्वस्थ आदतों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित फ़ूड फ़ेस्टिवल एक ऐसा वार्षिक कार्यक्रम बन गया है जिसका इन्तज़ार सभी बहुत उत्साह के साथ करते हैं। अभिभावकों ने घर पर बने व्यंजनों का प्रदर्शन किया, पोषण के महत्त्व पर ज़ोर दिया और विद्यार्थियों को जंक फ़ूड से होने वाले नुक़सान के बारे में बताया। इस उत्सव में वस्तु विनिमय प्रणाली (बार्टर सिस्टम) भी थी। इसमें गाँव के लोगों ने खाद्य पदार्थों का आदान-प्रदान किया जिससे सामुदायिक बन्धन मज़बूत हुए।

सीखने का समारोह

इस समारोह से यह ग़लतफ़हमी दूर हो गई कि सरकारी विद्यालयों में केवल रटने पर ही ध्यान दिया जाता है। ओरिगेमी एवं क्राफ़्ट, मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने और कहानी सुनाने जैसी गतिविधियों ने विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता दिखाने का अवसर दिया। अभिभावक अपने बच्चों की प्रतिभा देखकर हैरान रह गए, और विद्यालय की शिक्षण पद्धति पर उनका भरोसा और मज़बूत हुआ।

विद्यार्थी दिवस समारोह

विद्यार्थी दिवस पर, कक्षा दो के एक विद्यार्थी ने राज्य स्तरीय पठन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीता। इस उपलब्धि को गाँव में बैनर लगाकर, और गाँव भर में घोषणा करके प्रचारित किया गया। इससे विद्यालय की प्रतिष्ठा और बढ़ गई। अभिभावकों को अपने बच्चों के सफलता समारोह में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया जिससे उनमें भागीदारी और गर्व की गहरी भावना पैदा हुई।

स्वतंत्रता दिवस परेड

स्वतंत्रता सेनानियों की वेशभूषा में सजे विद्यार्थियों ने शानदार परेड में भाग लिया। इस परेड ने दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, और वे विद्यालय के पुनरुत्थान पर आश्चर्यचकित हो गए। ऐतिहासिक घटनाओं के नाटकीय मंचन ने अमिट छाप छोड़ी, और समुदाय ने विद्यालय की सराहना की, अतः इसकी गतिविधियों में और अधिक रुचि उत्पन्न हुई।

तिरुक्कुरल प्रतियोगिता

तिरुक्कुरल सराहना प्रतियोगिता में भागीदारी एक और निर्णायक क्षण था। एलकेजी और यूकेजी के विद्यार्थियों ने *तिरुक्कुरल* को इतने सही तरीक़े से याद करके सुनाया कि सभी हैरान रह गए। इस प्रदर्शन के लिए उन्हें प्रतिष्ठित '*तिरुक्कुरल* उपलब्धि' पुरस्कार मिला।

चित्र 2 : अपने बनाए प्रोजेक्ट के बारे में बताते विद्यार्थी

चित्र 3 : अपने काम को प्रदर्शित करते विद्यार्थी

पोंगल त्योहार

विद्यालय में किसान दिवस के उपलक्ष्य में पोंगल उत्सव का आयोजन किया गया। इस उत्सव में अभिभावकों ने बड़ी संख्या में भागीदारी की। कार्यक्रम में स्थानीय किसानों को सम्मानित किया गया, और विद्यार्थियों ने किसान विषय पर आधारित गाने एवं नृत्य प्रस्तुत किए। विद्यालय परिसर को पारम्परिक रूप से सजाया गया था जो गाँव की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता था।

वार्षिकोत्सव

विद्यालय का वार्षिकोत्सव भी एक शानदार आयोजन सिद्ध हुआ। इस उत्सव में अभिभावकों और गाँव वालों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। अभिभावकों ने उपहार ख़रीदने, सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार करने, और विद्यालय को सजाने में अपना योगदान दिया। चार घण्टे के समारोह में रंगारंग कलात्मक प्रदर्शन हुए जिनसे समुदाय के मन में विद्यालय का स्थान और ऊँचा हुआ।

चुनौतियाँ

इन कार्यक्रमों के आयोजन में कई चुनौतियाँ सामने आईं। जब हमने पहला विज्ञान मेला आयोजित किया था तो इसने समुदाय का ज़्यादा ध्यान आकर्षित नहीं किया, लेकिन अब यह एक सफल वार्षिक आयोजन है। मैंने सभी विद्यार्थियों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया था। इसके आयोजन के लिए हमने कुछ सामग्री भी ख़रीदी थी। चूँकि अभिभावकों ने मुझसे अपने बच्चों के प्रोजेक्ट बनाने में सहायता करने को कहा था, इसलिए हमने विद्यालय के समय में मिलकर काम किया। मेरी कक्षा में, हमने ऊपरी दीवार पर सभी नौ ग्रहों को प्रदर्शित किया, और सौरमण्डल को जीवन्त बनाने के लिए रंगीन रोशनी एवं गेंदों का प्रयोग किया। विद्यार्थियों ने बड़े गर्व के साथ अपनी बनाई हुई चीज़ों का प्रदर्शन किया। इससे पूरा कमरा उत्साह और आश्चर्य से भर गया।

किन्तु प्रदर्शनी वाले दिन न तो गाँव वाले आए न ही अभिभावक। केवल शिक्षक, निरीक्षण अधिकारी और 16 विद्यार्थियों में से केवल दो विद्यार्थियों के अभिभावक ही मौजूद थे। अगर लोग प्रदर्शनी देखने के लिए आएँगे ही नहीं तो भला यह उत्सव कैसा होगा! इस बात से हमें बहुत निराशा हुई। उस दिन हमने निर्णय लिया कि हम घर-घर जाकर अभिभावकों और गाँव वालों को विद्यालय में आकर विद्यार्थियों का काम देखने के लिए आमंत्रित करेंगे। धीरे-धीरे लोग आने लगे। विज्ञान मेले का प्रसारण टेलीविज़न पर भी किया गया, और जब अभिभावकों ने अपने बच्चों को समाचारों में देखा तो उन्हें बहुत गर्व हुआ। अगले दिन अभिभावक सुबह की सभा में आए, और अपना आभार व्यक्त किया। मेरे मन में तो जैसे उत्साह की अनगिनत तरंगें उठने लगीं... इस शो ने दर्शकों का मन मोह लिया था। विद्यालय में ऐसा कोई उत्सव पहले कभी नहीं मनाया गया था।

विद्यार्थियों के सीखने का प्रदर्शन

सरकारी विद्यालयों में लोगों का विश्वास बढ़ाने के लिए अकादमिक गतिविधियाँ और विद्यार्थियों का सीखना महत्त्वपूर्ण

चित्र 4 : सभी को सीखने के समान अवसर और सीखने का उत्साह

है। इसलिए अब हम विद्यार्थियों के अधिगम / सीखने को समुदाय के सामने प्रदर्शित करने पर भी ध्यान दे रहे हैं।

प्रिंट-रिच अधिगम स्थान

गहन अधिगम (इमर्सिव लर्निंग) के महत्त्व को समझते हुए विद्यालय ने अपनी कक्षाओं में प्रिंट-रिच वातावरण बना लिया है। दीवारों पर लगे रंग-बिरंगे चार्ट, विषय-विशेष प्रदर्शन और विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए पोर्टफ़ोलियो ने सीखने को एक इंटरैक्टिव अनुभव बना दिया। यह दृष्टिकोण विद्यालय तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने अभिभावकों को घर पर भी इसी प्रकार का वातावरण बनाने के लिए प्रेरित किया।

पढ़ने का त्योहार (रीडिंग फ़ेस्टिवल)

रीडिंग फ़ेस्टिवल ने अनोखी चुनौतियाँ पेश कीं जिनसे विद्यार्थियों की सहभागिता और सीखने की क्षमता बढ़ी। इन चुनौतियों में मिरर रीडिंग, समाचार पढ़ना, रिवर्स या ज़िगज़ैग रीडिंग, तमिल और अँग्रेज़ी में कहानी की किताब पढ़ना, नक़ली / नाटकीय बाज़ार में नक़दी का लेन-देन करना और चीज़ों का वज़न करना शामिल है। शिक्षकों और ग्राम प्रधानों ने इस उत्सव की बहुत सराहना की। यूकेजी विद्यार्थी की 1,000 शब्दों को पढ़ने की क्षमता ने सभी को अचम्भित कर दिया।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर ध्यान देना

बुनियादी शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए, विद्यालय ने किंडरगार्टन और निम्न प्राथमिक कक्षाओं को फिर से सशक्त करने पर ध्यान दिया। कक्षाओं को जीवन्त, प्रिंट-रिच सीखने का स्थान बनाया गया जिसने युवा विद्यार्थियों की कल्पना को आकर्षित किया। अलग-अलग तरह की इंटरैक्टिव शिक्षण पद्धतियाँ शुरू की गईं। इनमें कहानी सुनाना; कठपुतली का खेल और नाटक; इंटरैक्टिव सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) उपकरण एवं दृश्य सहायक सामग्री; ड्रेस-अप और भ्रमण जैसी आकर्षक गतिविधियाँ; व्यक्तिगत अभ्यास पत्र और विषय-विशिष्ट नोटबुक आदि शामिल थे। अभिभावकों को मासिक कक्षा गतिविधियों का अवलोकन करने के लिए आमंत्रित किया गया। इससे पारदर्शिता और विश्वास की भावना पैदा हुई। सुबह की सभा और विद्यालय

के कार्यक्रमों में छोटे विद्यार्थियों को भी शामिल किया गया जिनसे संस्था के साथ उनका जुड़ाव और मज़बूत हुआ।

> **किसी विद्यालय को प्रभावी ढंग से कार्य करना है और प्रगति करनी है तो इसके लिए कई संसाधनों की आवश्यकता होती है। मसलन, एक अच्छा बुनियादी ढाँचा, कुशल मानव संसाधन, समर्पित शिक्षक, मज़बूत नेतृत्व और सबसे महत्त्वपूर्ण, वहाँ के समुदाय की सद्भावना।**

महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ

विद्यालय के इस नए दृष्टिकोण का फल जल्द ही मिल गया। विद्यार्थियों ने अकादमिक और पाठ्येतर गतिविधियों में बढ़िया प्रदर्शन किया। कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं : यूकेजी के विद्यार्थियों ने रेडियो प्रसारण पर *संगम साहित्य* से 99 फूलों के नाम बताए; 100 *तिरुक्कुरल* पेश करने के लिए प्रतिष्ठित 'तिरुवल्लुवर पुरस्कार' जीतना; विद्यार्थियों द्वारा रचित चित्र और शब्द पुस्तकें प्रकाशित करना; लगातार तीन वर्षों तक पठन प्रतियोगिताओं में राज्य स्तर पर अव्वल आना; और हस्तलेखन प्रतियोगिताओं में लगातार दो साल राज्य स्तर पर अव्वल रहना।

सामुदायिक विश्वास और बढ़ता नामांकन

यह आँकड़े एक दिलचस्प कहानी बयाँ करते हैं। शैक्षिक वर्ष 2017-18 में विद्यालय में मात्र 14 विद्यार्थी थे, और 2021-22 तक यह संख्या 57 हो गई थी। नामांकन बढ़ने का यह सिलसिला लगातार बना हुआ है। नामांकन में यह बढ़ोतरी संस्थान में समुदाय के नए विश्वास को उजागर करती है। जो अभिभावक पहले अपने बच्चों को विद्यालय भेजने में हिचकिचाते थे, वे अब इसकी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे हैं।

दृढ़ता का प्रमाण

पुदुकुप्पम के सरकारी प्राथमिक विद्यालय का रूपान्तरण इस बात का जगमगाता उदाहरण है कि किस प्रकार जुनून, रचनात्मकता और सामुदायिक सहभागिता से किसी संस्था को पुनर्जीवित किया जा सकता है। जो विद्यालय बन्द होने की कगार पर था, वही विद्यालय अब सीखने, सांस्कृतिक गौरव और अकादमिक रूप से बेजोड़ केन्द्र के रूप में उभरा है। यह यात्रा शिक्षकों और नीति निर्माताओं के लिए एक प्रेरणा है, जो यह साबित करती है कि दृढ़ संकल्प और अभिनव सोच के साथ कोई भी विद्यालय चुनौतियों पर विजय प्राप्त कर सकता है, और पहले से कहीं ज़्यादा मज़बूत हो सकता है। इस विद्यालय की कहानी केवल किसी संस्था को बचाने के बारे में ही नहीं बताती, बल्कि यह तो शिक्षा को फिर से परिभाषित करने, विश्वास का पुनर्निर्माण करने, और एक ऐसा भविष्य बनाने के बारे में है जहाँ हर विद्यार्थी को बेहतर करने के अवसर मिलें।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

एम वल्ली पिछले 17 वर्षों से सरकारी विद्यालयों में प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका रही हैं। उनका मानना है कि शिक्षा को आनन्ददायक और विद्यार्थी-केन्द्रित होना चाहिए; इसे जिज्ञासा, रचनात्मकता और तर्कसंगत सोच को पोषित करना चाहिए। वे कक्षाओं को सुरक्षित स्थानों के रूप में देखती हैं जहाँ हर बच्चे की क्षमता को पहचाना और विकसित किया जाता है।

सम्पर्क : vallimani1922@gmail.com

के गांधीमती का शिक्षा के क्षेत्र में तीन दशकों का अनुभव है। उनका अनुभव क्षेत्र विद्यालयी कक्षाओं से बीएड कॉलेजों तक फैला हुआ है। वर्तमान में, वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, पुदुचेरी में सन्दर्भ व्यक्ति हैं। वे ऐसे शिक्षकों के साथ मिलकर काम करती हैं, जो परिवर्तनकारी सीखने की जगहों को बढ़ावा देते हैं और चिन्तनशील, शोध-आधारित शिक्षण प्रथाओं तथा निरन्तर विकास एवं शैक्षिक नवाचार के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करते हैं।

सम्पर्क : gandhimathy@azimpremjifoundation.org

आँगनवाड़ी में एक दिन

रेखा चौहान

आँगनवाड़ी में बच्चों के सीखने में, शिक्षक और कक्षा के वातावरण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जब शिक्षक बच्चों को सही मायने में समझते हैं, और ज़िम्मेदारी से उन्हें उम्र के हिसाब से सीखने की गतिविधियों में शामिल करते हैं तब बच्चे न केवल अच्छी तरह से सीखते हैं और विद्यालय के लिए तैयार हो जाते हैं, बल्कि उनमें एक आत्मविश्वास भी आता है। इस आत्मविश्वास से उनमें सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

एक दिन अपने काम के सिलसिले में, मैं बेंगलूरु के कलानगर में, आँगनवाड़ी केन्द्र गई। सुबह के 9:30 बजे थे, और शिक्षिका मुनीलक्ष्मम्मा केन्द्र पर ही थीं। उनके साथ कोई सह-शिक्षिका नहीं थीं, इसलिए मुनीलक्ष्मम्मा ने एक बच्चे की माँ को सहयोग करने के लिए बुला लिया था। ऐसी स्थितियों में वे अकसर ऐसा ही करती हैं।

कुछ ही देर में बच्चे एक-एक करके आँगनवाड़ी में आने लगे। जैसे ही कोई बच्चा आँगनवाड़ी में दाख़िल होता, शिक्षिका उसका नाम पुकारतीं, और उसे मुस्कुराकर "गुड मॉर्निंग!" कहतीं। हर बच्चा "गुड मॉर्निंग!" कहकर मैडम को जवाब देता, और ख़ुश होकर 'खेलने के लिए बनाए गए एक कोने'[1], जहाँ खिलौने आदि रखे थे, की ओर चला जाता। बच्चा अपनी पसन्द के खिलौने या खेलने से जुड़ा कोई सामान चुनता, और साफ़-सुथरे ढंग से बिछाए गए मैट पर उसे सुभीते से रखकर खेलता। यह एक मज़ेदार गतिविधि थी क्योंकि इसकी वजह से बच्चों में आँगनवाड़ी केन्द्र में आने की उत्सुकता रहती है। जब बाद में आने वाले बच्चे खिलौने माँगते हैं तो बच्चे उन्हें साझा करते हैं। खेलने के बाद, प्रत्येक बच्चा सावधानीपूर्वक खिलौनों को वापस अपनी जगह पर रखता है। यह गतिविधि बच्चों को स्वाभाविक रूप से वस्तुओं को चुनने, साझा करने, व्यवस्थित करने और उन्हें वापस रखने में जूझने वाले दूसरों की सहायता करने व

> **"इस आँगनवाड़ी में बच्चों को चीज़ों को देखकर, छूकर और ख़ुद को अभिव्यक्त करके सीखने के भरपूर मौक़े मिले।"**

चित्र 1: अपनी पसन्द के खेल खेलते आँगनवाड़ी विद्यार्थी

अपने सामान की ज़िम्मेदारी लेने जैसे कौशल विकसित करने में मदद करती है।

दिन की शुरुआत

सुबह 10 बजे तक 16 बच्चे आ चुके थे। प्रार्थना का समय हो गया था। जब सभी बच्चे अपनी आँखें बन्द करके प्रार्थना पर ध्यान केन्द्रित कर रहे थे तब एक बच्चा बार-बार उछलकर बैठने लगा। शिक्षिका धीरे से उस बच्चे के पास गईं, उसका हाथ पकड़ा, और उसके पास खड़ी हो गईं। उन्होंने स्थिति को इतने प्यार से सुलझाया कि न तो उस बच्चे को न ही अन्य बच्चों को इसका पता चला।

बच्चों की उपस्थिति भी अलग तरीक़े से ली गई। प्रत्येक बच्चे के नाम का टैग एक ट्रे में रखा हुआ था। बच्चे फ़र्श पर गोल घेरे में बैठे थे। शिक्षिका एक बच्चे का नाम पुकारतीं, वह बच्चा आता और ट्रे से अपने नाम का टैग उठाकर अपने गले में पहन लेता। जो बच्चे ऐसा नहीं कर सकते थे, शिक्षिका उनकी मदद

चित्र 2 : डॉक्टर-डॉक्टर का खेल और मैडम का हेल्थ चेकअप करती छात्रा

करतीं और टैग को उनके गले में डालने से पहले दोहरातीं, "यह आपके नाम का टैग है।" नाम का टैग पहनने के बाद, बच्चों के चेहरे मुस्कान से चमक उठे। उसके बाद शिक्षिका ने बचे हुए नाम के टैग उठाए और पूछा, "आज आँगनवाड़ी में कौन नहीं आया है?" जैसे ही बच्चों ने अपने अनुपस्थित साथियों के नाम बताए, शिक्षिका ने उन्हें दिखाने के लिए उनके सम्बन्धित टैग उठाए। गतिविधि का समापन सभी बच्चों द्वारा अपने नाम टैग वापस ट्रे में रखने के साथ हुआ।

अगला क़दम

शिक्षिका ने बच्चों को तारीख़ (वर्ष, महीना, सप्ताह और दिन) के बारे में बताया। उन्होंने बच्चों से पूछा, "आज के दिन मौसम कैसा है? क्या गर्मी है या ठण्ड है, या बारिश हो रही है?" बच्चों ने जवाब दिया, "अन्दर न तो गर्मी है न ही ठण्ड।"

शिक्षिका ने कहा, "ठीक है, तो क्या हम सब बाहर जाकर देख सकते हैं कि कैसा लग रहा है?" फिर वे सभी बच्चों को बाहर ले गईं। उन्होंने बच्चों को एक या दो मिनट तक धूप में खड़े रहने दिया, और फिर पूछा, "अब अपने सिर को छुएँ और बताएँ कि कैसा लग रहा है।" बच्चों ने अपने सिर को छुआ और कहा, "गर्मी है।"

उन्होंने बच्चों से एक-एक करके तीन सवाल पूछे, "क्या बारिश हो रही है? क्या ठण्ड है? क्या हवा चल रही है?" बच्चों ने पहले दो सवालों के जवाब में 'नहीं' कहा, और तीसरे सवाल का जवाब 'हाँ' में दिया। शिक्षिका ने पूछा, "हम कैसे जानते हैं कि हवा चल रही है?" बच्चों के पास इसका जवाब नहीं था। इसलिए शिक्षिका ने पास के ही एक पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा, "बच्चो, उस पेड़ को देखो! क्या वह हिल रहा है?" बच्चों ने जवाब दिया, "वह हिल रहा है।" शिक्षिका ने उन्हें हवा के चलने का पता लगाने के सन्दर्भ में और उदाहरण दिए। जैसे– कपड़ों का हिलना, सूखे पत्तों का हवा की दिशा में चलना, इत्यादि।

इसके बाद शिक्षिका बच्चों को वापस कक्षा में ले गईं। यह बच्चों के लिए दूध पीने और बाजरे के लड्डू खाने का समय था। एक बच्चे की माँ ने उस दिन सभी बच्चों के लिए लड्डू बनाए थे, और दूध उबाला था। बच्चों को गोल घेरे में बिठाया गया, और उस बच्चे की माँ की मदद से शिक्षिका ने प्रत्येक बच्चे को एक गिलास दूध और एक लड्डू दिया।

इसके बाद बच्चों ने पानी पिया, शौचालय का उपयोग किया, और कक्षा में वापस आकर फिर से एक घेरे में बैठ गए। दो बच्चों की स्वेच्छा सहयोग करने वाली माताएँ भी उनके साथ बैठीं। शिक्षिका ने शिक्षण सामग्री तैयार की।

परिवेश के बारे में बातचीत

शिक्षिका और बच्चों के बीच 'प्रार्थना स्थल' के बारे में बातचीत शुरू हुई। शिक्षिका ने बच्चों के साथ इस अवधारणा के बारे में बातचीत की। शुरुआत अलग-अलग प्रार्थना स्थलों की तस्वीरों से भरी एक ट्रे लाकर की। उन्होंने एक-एक तस्वीर दिखाकर शुरुआत की। सबसे पहले, उन्होंने एक चर्च की तस्वीर दिखाई

और पूछा, "बच्चो, यह क्या है?" रेबेका, जो पास में बैठी थी, ने फ़ौरन कहा, "मैडम, यह एक चर्च है।" फिर सभी बच्चों ने दोहराया, "चर्च।" शिक्षिका ने फिर पूछा, "तुमने इसे कहाँ देखा है?" बच्चों ने बारी-बारी से जवाब दिया, "मैंने इसे सड़क के किनारे देखा है"; "मैंने इसे अपने गाँव में देखा है"; इत्यादि। रेबेका ने कहा, "मैं अपने माता-पिता के साथ हर रविवार वहाँ जाकर प्रार्थना करती हूँ।"

> **प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल (ईसीसी) जीवन का एक महत्त्वपूर्ण चरण है, और यह भविष्य में होने वाली शिक्षा और विकास की नींव के रूप में कार्य करती है।**

उसके बाद शिक्षिका ने एक मन्दिर की तस्वीर उठाई। ज़्यादातर बच्चों ने कहा, "मैडम, हमने यह देखा है", और एक-एक करके बताना शुरू किया कि उन्होंने मन्दिर कहाँ-कहाँ देखे हैं—सड़क के किनारे, अपने घरों के पास, आदि। इसके बाद शिक्षिका ने एक मस्जिद की तस्वीर दिखाई। इसे देखते ही अरबिया ने उत्साहित होकर ऊँची आवाज़ में कहा, "यह एक मस्जिद है!" जब शिक्षिका ने पूछा, "लोग वहाँ क्या करते हैं?" अरबिया ने जवाब दिया, "वे वहाँ नमाज़ पढ़ते हैं।" बाद में शिक्षिका ने बच्चों को तीनों तस्वीरें दिखाईं और कहा, "बच्चो, इन्हें प्रार्थना स्थल कहते हैं।" शिक्षिका ने बच्चों को एक गीत सिखाया, और बच्चों ने उसके बाद गाया। फिर बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी अन्य कविताएँ गाने लगे जिनसे वे भली-भाँति परिचित थे।

एक और गतिविधि

इस गतिविधि के लिए शिक्षिका ने पहले से ही तैयारी कर रखी थी। उन्होंने आठ कटोरे लिए, और उनमें अलग-अलग मात्रा में चावल व दाल रखी। उन्होंने बच्चों के सामने कटोरों वाली एक ट्रे रखी, और उन्हें अलग-अलग मात्राएँ समझाईं। उन्होंने कहा, "इसे बहुत ज़्यादा इसलिए कहा जाता है क्योंकि कटोरा ऊपर तक भरा हुआ है।" उन्होंने प्रत्येक मात्रा को समझाना जारी रखा—थोड़ा ज़्यादा, कम, और बहुत कम।

इसके बाद शिक्षिका ने प्रत्येक बच्चे को एक-एक करके बुलाया, उसे एक निश्चित मात्रा बताई, और बच्चे से उस मात्रा वाला कटोरा उठाकर उन्हें देने को कहा। ज़्यादातर बच्चों ने सही कटोरा उठाया, लेकिन उनमें से दो थोड़े असमंजस में थे। शिक्षिका ने उन्हें समझाया।

अब शिक्षिका ने बच्चों को बुलाकर उनसे कहा कि वे उनके सामने रखे कंकड़ों के डिब्बे में से उनके द्वारा बताई गई संख्या में कंकड़ (पाँच से कम) चुनें और उन्हें दें। बच्चों ने ठीक उतने ही कंकड़ चुने जितने कि कहे गए थे— 3, 2, 1, 4, इत्यादि। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों को उन संख्याओं को दोहराने का मौक़ा मिला जिन्हें वे जानते हैं। इसके बाद शिक्षिका ने फ़्लैश कार्ड का इस्तेमाल करके बच्चों को 'ಸ' (स) और 'ಜ' (जा)* अक्षरों से परिचित कराया। उन्होंने पूछा, "बच्चो, क्या तुम मुझे ऐसे शब्द बता सकते हो जो ಸ अक्षर से शुरू होते हैं?" फ़ौरन ही, बच्चों ने ಸಮ (समा), ಸರಸ್ವತಿ (सरस्वती), ಸಾಕು (साकू), ಸಂತೆ (सन्थे), आदि जैसे शब्दों के साथ जवाब देना शुरू कर दिया। फिर इन अक्षरों से शुरू होने वाले चित्रों और शब्द कार्डों के साथ-साथ अक्षर फ़्लैश कार्ड का इस्तेमाल करके, शिक्षिका ने अक्षरों से परिचय को गहरा करने में बच्चों की मदद की।

चित्र 3 : कुछ नया जानने का सुखद आश्चर्य

रचनात्मक गतिविधि

शिक्षिका ने बड़े और छोटे बच्चों को दो छोटे समूहों में विभाजित किया, और उन्हें अलग-अलग घेरे में बैठाया। बड़े बच्चों की मदद से सभी बड़े बच्चों को पेंसिल, शीट और क्रेयॉन वितरित किए गए। फिर उन्हें प्रार्थना स्थलों के चित्र बनाने और उन्हें रँगने का निर्देश दिया गया। छोटे बच्चों के समूहों को प्रार्थना स्थलों के चित्रों के साथ पहले से तैयार शीट प्रदान की गई, और चित्रों को रँगने में शिक्षिका ने उनकी मदद की।

कहानी का समय

सभी के साथ एक छोटा-सा खेल खेलने के बाद शिक्षिका ने बच्चों को बारिश की आवाज़ वाली ताली बजाने को कहा। फिर उन्होंने पूछा, "बच्चो, अभी क्या समय हो गया है?" तुरन्त, सभी बच्चे ख़ुशी से चिल्लाए, "कहानी... कहानी!" उस पल में उनका उत्साह और ख़ुशी साफ़ दिखाई दे रही थी। शिक्षिका ने तस्वीरों का इस्तेमाल करके प्रार्थना स्थलों से सम्बन्धित एक सुन्दर कहानी सुनाना शुरू की। कहानी सुनाने की शैली बातचीत जैसी थी। यह रश्मि के अपने दादा-दादी के घर जाने, उनके साथ गाँव के मेले, वहाँ मन्दिर जाने, अपनी दादी से मन्दिर के बारे में सवाल पूछने के बारे में थी। जैसे— यह कब बनाया गया था; क्या मेला तब भी होता था जब तुम छोटी बच्ची थीं; और भी बहुत कुछ।

इसके अलावा, इसमें ऐसे क्षण शामिल थे जब रश्मि ने अपनी दादी के घर पर त्योहार की सजावट में भाग लिया, उसकी दादी ने विभिन्न प्रकार के नाश्ते तैयार किए, और उसने वे नाश्ते अपने पड़ोसियों के साथ साझा किए। शिक्षिका ने उन्हें मेलों में जाने, नए कपड़े पहनने, और अन्य चीज़ों के अपने अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया। फिर शिक्षिका ने कहा, "हमने आज के लिए तय सभी गतिविधियाँ समाप्त कर ली हैं। क्या अब हम इन सभी चीज़ों को वापस रख दें?" जैसे ही उन्होंने यह कहा, बच्चों ने बेहद अनुशासित तरीक़े से हर चीज़ वापस अपनी जगह पर रखने में शिक्षिका की मदद की।

दोपहर का पौष्टिक भोजन

सभी दोपहर के भोजन के लिए तैयार हो गए। जिन बच्चों को शौचालय का उपयोग करने की आवश्यकता थी, उन्होंने शौचालय का उपयोग किया, फिर सभी ने अपने हाथ धोए, और एक गोल घेरे में बैठ गए। उस दिन का भोजन चावल के साथ साग और दाल-साँभर था, साथ में एक अण्डा भी था। स्वैच्छिक रूप से सहयोग करने वाली माताओं ने दोपहर के भोजन के बाद बच्चों को हाथ धोने में मदद की। फिर उन्होंने कक्षा को साफ़ किया, चटाई बिछाई, और बच्चों को आराम करने देने के लिए उस स्थान को आरामदायक बनाया। बच्चे थोड़ी-थोड़ी दूरी पर चटाई पर लेट गए। शिक्षिका ने सो रहे बच्चों को धीरे से चादर ओढ़ा दी। दोपहर के क़रीब 3:15 तक बच्चे एक-एक करके जागने लगे। उनमें से कुछ अपने-आप शौचालय गए, और चुपचाप वापस आकर बैठ गए। कुछ बच्चे अभी भी गहरी नींद में थे, इसलिए शिक्षिका ने उन्हें धीरे से जगाया। फिर शिक्षिका ने 'टोपी बेका टोपी' (क्या आपको टोपी चाहिए) नामक एक मज़ेदार खेल कराया। इस खेल को बच्चों ने बड़े आनन्द के साथ खेला। जैसे ही अभिभावक पहुँचे, प्रत्येक बच्चे को उनके साथ घर भेज दिया गया।

सारांश

आँगनवाड़ी में पूरा दिन बिताना मेरे लिए कई मायनों में बिल्कुल नया अनुभव था। इस अनुभव ने मुझे यह समझने में मदद की कि शिक्षिका का व्यवहार और सीखने का वातावरण शिक्षा में महत्त्वपूर्ण है। इस आँगनवाड़ी में, बच्चों को चीज़ों को देखकर, छूकर और ख़ुद को अभिव्यक्त करके सीखने के भरपूर मौक़े मिले। शिक्षिका ने बच्चों को उनके परिचित उदाहरणों का उपयोग करके, और उन्हें अपने अनुभव साझा करने का मौक़ा देते हुए, प्यार से विभिन्न अवधारणाओं को धैर्यपूर्वक समझाया। बच्चों को खेल, गतिविधियों और व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से सीखने के भरपूर अवसर दिए गए। बच्चों को पौष्टिक भोजन भी मिला। सीखने की गतिविधियों को उनके विकास के सभी क्षेत्रों को पोषित करने के लिए सोच-समझकर डिज़ाइन किया गया था। आँगनवाड़ी में कोई सह-शिक्षिका नहीं थीं, इस वजह ने अभिभावकों और समुदाय के प्रतिनिधियों के समर्थन और सहयोग को प्रोत्साहित किया जिन्होंने शिक्षिका की मदद के लिए क़दम बढ़ाए।

देश या राज्य की सभी आँगनवाड़ियों में ऐसा समृद्ध वातावरण नहीं है। आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं / शिक्षिकाओं के लिए ऐसे प्रशिक्षणों की कमी है जो बच्चों को गहराई से समझने, और उन्हें सीखने की प्रक्रिया में प्रभावी ढंग से शामिल करने के लिए उनको तैयार कर पाएँ। कुल मिलाकर, सीखने को स्वास्थ्य, पोषण और टीकाकरण के समान महत्त्व नहीं मिला है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल (ईसीसी) जीवन का एक महत्त्वपूर्ण चरण है, और यह भविष्य में होने वाली शिक्षा और विकास की नींव के रूप में कार्य करती है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2020* भी इसके महत्त्व पर ज़ोर देती है। हालाँकि शिक्षा विभाग और सरकार, दोनों को सभी आँगनवाड़ियों में इस पहलू पर ध्यान केन्द्रित करने की महती आवश्यकता है।

[1] किसी भी आँगनवाड़ी में नाटक और खेल का कोना एक ऐसी जगह है जहाँ बच्चे जल्दी आकर निर्धारित गतिविधियाँ शुरू होने तक खेलते हैं। यह कोना बिल्डिंग ब्लॉक, तरह-तरह की गुड़ियों, छोटी गाड़ियों, आदि जैसी विभिन्न खेल सामग्रियों से सुसज्जित होता है।

**कन्नड़ लिपि ['ಸ' (स) और 'ಜ' (जा)] के अक्षर*

कन्नड़ से अँग्रेज़ी में निवेदिता गौड़ा द्वारा अनुवादित और मधुकर एस पुट्टी द्वारा पुनर्निरीक्षण
अँग्रेज़ी से हिन्दी में सम्पादकीय टीम द्वारा अनुवादित।

रेखा चौहान को सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए काम करने वाले बेंगलूरु स्थित एनजीओ 'प्रजयत्न' के साथ काम करने का 10 साल से ज़्यादा का अनुभव है। हालाँकि उनका काम मुख्य रूप से शोध और दस्तावेज़ीकरण पर केन्द्रित रहा है, लेकिन वे शिक्षकों, अभिभावकों और बच्चों के लिए रिपोर्ट व मार्गदर्शन सामग्री तैयार करने में अहम भूमिका निभाती हैं। उनके अध्ययनों और रिपोर्टों ने शैक्षिक नीति निर्माण, समग्र बाल विकास और सामुदायिक सशक्तिकरण का समर्थन किया है।

सम्पर्क : rekha@prajayatna.in

किताबों से जुड़ाव बनाने के लिए कुछ प्रयास

दीपाली शुक्ला

विद्यालय में पुस्तकालय की सार्थकता तब और बढ़ जाती है जब शिक्षिका के प्रयास से बच्चों की किताबों से गहरी दोस्ती बन जाती है। यह लेख किताबों के साथ खेल खेलने की एक ही ऐसी दिलचस्प, आनन्ददायक और चुनौती भरी गतिविधि के बारे में है। इसकी प्रक्रियाओं से बनने वाले मौक़ों से बच्चे मिलकर कहानी की किताबें पढ़ते हैं, उनके बारे में सोचते हैं, और आपस में चर्चा करते हुए कल्पनाशील, मज़ेदार सवाल रचते हैं।

चित्र 1: पढ़ने के बाद सोचते, आपस में चर्चा करते विद्यार्थी

मैं हिनोतिया के सरकारी विद्यालय में बच्चों के साथ बातें कर रही थी। बच्चों ने विद्यालय की लाइब्रेरी की किताबों को पढ़ना शुरू कर दिया था। उनका कहना था कि उन्होंने सब किताबें पढ़ ली हैं। हमने कुछ कहानियों को एक दूसरे से साझा किया। बच्चे उत्साह से बता रहे थे कि कहानी क्या है। काफ़ी बच्चे ऐसे थे जिन्होंने कहा कि किताब पढ़ ली है, पर उन्हें कहानी अभी याद नहीं है। कहानियों पर बात करने के बाद बच्चों का कहना था कि कोई खेल खिलाओ। मैं सोच रही थी कि क्या खेल खेला जाए जिससे बच्चे किताबों के और क़रीब आ सकें, उनका कहानी से जुड़ाव मज़बूत हो, और किताबों पर गहराई से सोचने का मौक़ा मिल सके। सहसा मुझे यह सूझा कि क्यों न सवालों के ज़रिए किताबों की ओर मुड़ा जाए। इससे बच्चों को यह मौक़ा होगा कि वो किताबों को पढ़ेंगे, उन पर सवाल बनाएँगे। यह सवाल एकदम सीधे न हों, और ऐसे भी न हों जो केवल हाँ या नहीं तक ही सीमित हों, बल्कि सवाल ऐसे हों जो सोचने और कहानी के अलग-अलग हिस्सों के बारे में विचार करने का मौक़ा दें।

मैंने 4 बिग बुक चुनीं। बच्चों को 4 समूहों में बाँटा, और हर समूह में एक बिग बुक देकर कहा कि समूह को साथ में किताब पढ़कर उससे कुछ चुनौती भरे मज़ेदार सवाल बनाने हैं जिससे दूसरा समूह उस सवाल के संकेत से किताब को पहचानकर उसका नाम बता सके। हाँ, किताब को धीमे से पढ़ना है ताकि बाक़ियों को पता न चले कि समूह के पास कौन-सी किताब है।

यह सब बच्चे मिडिल स्कूल के थे। मैं देख रही थी कि बच्चे शुरू में सवाल को लेकर कुछ उलझन में थे। मैंने हर समूह में जाकर सवाल बनाने की प्रक्रिया को सुना और फिर सुझाव दिए। उन्हें यह भी कहा कि वह जैसे सवाल बना सकते हैं, बनाएँ।

इसके लिए बच्चों के पास पर्याप्त समय था। वे बार-बार कहानी को पढ़ रहे थे। जब हर समूह ने सवाल बना लिए तब एक-एक समूह ने अन्य समूहों के साथियों से सवाल पूछना शुरू किया। वह कौन-सी किताब है जिसमें ख़ूब सारे पक्षी हैं? ऐसी कौन-सी किताब है जिसमें हर पेज पर एक जानवर है? अन्य समूह के साथी अन्दाज़ा लगा रहे थे। एक समूह ने पहले सवाल के संकेत के आधार पर किताब का नाम बताने में सफलता हासिल की। बच्चे आपस में सवालों पर प्रतिक्रिया भी दे रहे थे। क्या सवाल ठीक था या और बेहतर हो सकता था? यह सवाल बच्चों को किताबों से जुड़ने और उन्हें दोबारा से पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। तुरन्त सोची गई इस गतिविधि के ज़रिए किताब पढ़ने के बाद पाठक प्रतिक्रिया को जानने का एक सिरा दिखा। दूसरा, सवालों को लेकर कैसे काम किया जाए, इसकी एक राह भी मिली। महत्त्वपूर्ण बात यह कि एक समूह में कहानी को पढ़कर चर्चा करना, उसके लिए सवालों को सामूहिक रूप से सोचना, अपने सवाल को लेकर तर्क करना, यह सब होने की भी सम्भावना दिखी। इस तरह चारों समूहों के सवालों और किताबों की खोज के जवाबों की प्रक्रिया को पूरा किया गया।

> **मुझे यह सूझा कि क्यों न सवालों के ज़रिए किताबों की ओर मुड़ा जाए। इससे बच्चों को यह मौक़ा मिलेगा कि वो किताबों को पढ़ेंगे, उन पर सवाल बनाएँगे।**

इस गतिविधि पर बच्चों की प्रतिक्रिया ने यह इशारा किया था कि इसे फिर से बच्चों के साथ करके देखने की ज़रूरत है। ऐसा इसलिए, क्योंकि इस गतिविधि के ज़रिए न केवल बच्चों का किताबों के साथ जुड़ाव बनाने का उद्देश्य था, बल्कि कहानी को गहराई से पढ़ना, उसके पात्रों और घटनाओं को लेकर सोचना, उस पर ऐसे सवालों को सोच पाना जो विवरणात्मक हों, और हाँ या नहीं के बजाय क्यों और कैसे की सोच की ओर ले जाने वाले हों। इसी के साथ, सवालों को बनाने की चुनौती को बच्चे किस तरह से मज़े लेकर करते हैं, और आपस में मिलकर सीखने की यह प्रक्रिया कैसे और ज़्यादा कारगर हो सकती है। इसलिए इस गतिविधि को 'चकमक क्लब' (एक तरह की लाइब्रेरी) संचालित करने वाले बच्चों के साथ करने की योजना बनाई। चकमक क्लब में बच्चे 100 से अधिक किताबों को पढ़ चुके हैं। इनमें कुछ किताबें ऐसी हैं जो बच्चों के अनुसार 10 बार से भी ज़्यादा पढ़ी गई हैं। इसलिए इस गतिविधि के लिए उन किताबों का चयन किया गया जो बच्चों की सबसे प्रिय किताबें रही हैं। *बरास्ता तरबूज़, खिचड़ी, गीत का कमाल, जूँ और टू*, ये किताबें सभी चकमक क्लब में सबसे प्रिय किताबों में थीं। *बरास्ता तरबूज़* एक लड़के सासौ के प्रेम और उसके द्वारा बनाए गए उपहार के बारे में बात करती है। इसमें कई स्थापित सोच पर भी सवाल हैं। *खिचड़ी* एक बुन्देलखण्डी लोककथा है। इसमें बिरजू की खिचड़ी शब्द रटने के तरीक़े से दिलचस्प परिस्थितियाँ बनती हैं। यह परिस्थितियाँ पाठक को अचम्भित करती हैं, और शिक्षा के एक गम्भीर मसले को उभारती हैं। *गीत का कमाल* भी एक बुन्देलखण्डी लोककथा है जो गीत द्वारा किए गए कमाल को रोचक ढंग से प्रस्तुत करती है। *जूँ और टू* में बच्ची द्वारा दुनिया की पड़ताल और उससे जुड़े सवाल हैं।

बच्चों के साथ यह गतिविधि दो बार की गई। एक बार बड़ों ने सत्र संचालित किया, और दूसरी बार बच्चों ने। उद्देश्य था कि बच्चे अपने हमउम्र साथियों के साथ किताबों पर संवाद करें, सवालों पर प्रतिक्रिया दें और इस पूरी प्रक्रिया का अनुभव करें। इस बार छह समूह बनाए गए। हर समूह को एक-एक किताब दी गई। किताब पर अख़बार का कवर चढ़ाया गया जिससे समूहों को एक दूसरे की किताब न दिखे। समूह में ऐसे बच्चे थे जो अच्छे से पढ़ पाते थे और ऐसे भी थे जो पढ़ने के शुरुआती स्तर पर थे। सवाल बनाने की प्रक्रिया में जाने से पहले बच्चों के साथ गतिविधि को लेकर बात की गई। साथ में कहानी पढ़ने, उस पर चर्चा करने और फिर 3 सवाल बनाने का निर्देश दिया गया। यह भी बताया गया कि आप चाहें तो 3 से अधिक सवाल भी बना सकते हैं। हर समूह में एक वयस्क साथी को अवलोकन के लिए शामिल किया गया। इसके बाद समूहों में काम शुरू हुआ। बच्चे किताब के शीर्षक को देखकर आपस में चर्चा करने लगे। हर समूह में जो किताब थी वो आधे से अधिक बच्चों ने पहले पढ़ी थी। चेहरों पर मुस्कान खिल चुकी थी। धीमे-धीमे कहानी को पढ़ने का काम शुरू हो गया। बच्चे यह जानते थे कि बाक़ी समूहों ने भी यह किताब पढ़ी है, इसलिए कुछ ऐसा चुनौती भरा सवाल सोचना होगा जो मज़ेदार हो, और किताब का रहस्य तुरन्त न खोले। मिलकर सवाल बनाने का काम शुरू हुआ। कुछ समूह ऐसे थे जिनमें बच्चों ने अपने-अपने सवाल बनाने का काम किया, और फिर सभी सवालों में से पूछे जाने वाले सवाल चुनने का निर्णय लिया।

आइए, कुछ किताबें और उनके सवालों को देखते हैं–

किताब का नाम : *घर का सपना*

सवाल 1 : वो कौन था, जो ख़ूब रोया, बहुत रोया, अपने-आप को बहुत भिगोया?

सवाल 2 : कौन था, जो था बहुत चिड़चिड़ा, नाक भौं रही उसकी चढ़ी?

सवाल 3 : अनजाने लोगों से कौन दु:खी था और क्यों?

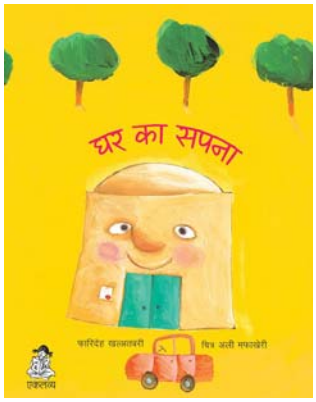

चित्र 2 : लेखक के द्वारा उपयोग में लाई गई किताब

इन सवालों पर थोड़ा ठहरकर विचार करें तो सवाल पात्र और उसकी विशेषता के साथ ही कहानी की किसी ख़ास घटना पर आधारित हैं। काफ़ी हद तक इनमें किताब से जुड़े संकेत हैं।

सवाल बनाने के बाद हर समूह को यह मौक़ा दिया गया कि वो बाक़ी समूहों से एक-एक करके सवालों को पूछें और वह समूह किताब का नाम बताएँ। सवाल पूछने वाले समूह की ही यह ज़िम्मेदारी थी कि वो देखे कि कौन-से समूह ने सबसे पहले

जवाब देने के लिए हाथ उठाया। बच्चों ने समूह के एक साथी को इसकी ज़िम्मेदारी दी। एक साथी सवाल पूछ रही थी। *घर का सपना* किताब के सवालों के समय दूसरे सवाल पर ही एक समूह ने किताब का नाम बता दिया। यह बड़ा मज़ेदार था कि उस समूह के एक बच्चे ने बताया कि घर, हर बार आने वाले मेहमानों से नाराज़ हो जाता था। इससे उसने पहचाना कि यह किताब कौन-सी है। घर ऐसा क्यों कर रहा था? इस पर जवाब मिला कि वह चाहता था कि उसमें बच्चे आकर रहें। फिर बच्चों ने अपने गाँव के ऐसे घरों के बारे में बताया जो ख़ाली हैं और जर्जर हो रहे हैं। इस पूरी बातचीत में बच्चे छाए रहे क्योंकि वे न केवल कहानी के बारे में बात कर रहे थे, बल्कि अपने सवाल पर आपस में तर्क भी कर रहे थे। वह सवाल उन्होंने क्यों पूछा, इसको बता रहे थे। दूसरे समूह के बच्चों के सवाल को लेकर अपने तर्क थे। यह ज़रूरी भी है कि संवाद के ज़रिए अपने-अपने तर्कों पर चर्चा की जाए। विस्तृत चर्चा के बाद बच्चे और सवाल बनाने के लिए उत्साहित थे। चार बच्चों ने इस सत्र को अगले दिन संचालित करने की ज़िम्मेदारी ली। किताबों का चयन बच्चों ने किया। निर्देश कैसे देंगे, इसको लेकर बड़ों से चर्चा की। बच्चों ने जो किताबें चुनीं, वह ऐसी थीं जो हाल ही में उनके पास पहुँची हैं। कई बच्चों ने उनको पढ़ा है। यहाँ दो किताबों से बने एक-एक सवाल को देखते हैं–

किताब का नाम : *बरास्ता तरबूज़*

सवाल : मुझे खा, पर मेरे बच्चे को छोड़ दे, यह किस किताब में होता है? इस सवाल के जवाब में कई किताबों के नाम आए, पर *बरास्ता तरबूज़* का नाम न आया। हाँ, जब समूह ने यह सवाल पूछा कि इस किताब में तीन जानवर हैं तब फिर एक समूह ने इस किताब का नाम बताया। यह मज़ेदार था कि फिर एक समूह कहानी के ख़ास हिस्सों, जैसे– सासौ का तीन जानवरों को ख़रीदना, आख़िरी तरबूज़ को खा जाना, प्रेमिका के लिए नया उपहार अपने हाथों से बनाना, पर बात करने लगा। बच्चों को यह बताना अच्छा लगा कि सासौ को अपने जानवरों की कितनी फ़िक्र है। वह सबको ख़ुद अपने सिर पर उठाकर आगे बढ़ता है।

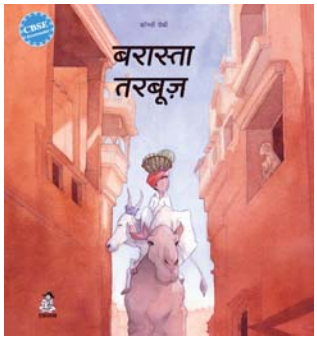

चित्र 3 : लेखक के द्वारा उपयोग में लाई गई किताब

इस खेल प्रक्रिया से हमउम्र साथियों के साथ सीखने का एक बढ़िया मौक़ा था। यह मौक़ा किताबों को पढ़ने से अधिक उस किताब के साथ एक पाठक के रूप में संवाद करने और कहानी से इतर सवालों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह बच्चों को सबसे रोचक लगा क्योंकि यहाँ उन्हें ख़ुद यह प्रक्रिया करनी थी, सवाल सोचने थे और किताबों का चयन भी ख़ुद ही करना था। वयस्क साथी केवल सन्दर्भदाता की भूमिका में थे। एक तरह से किताबों के प्रति अपनापन भी बच्चे महसूस कर रहे थे। सवालों पर काम करने का यह अभ्यास किताबों की बारीक़ियों की ओर ले जाने की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण था, और किताब को पढ़कर कुछ नया विचारने की ओर भी ले जाने वाला था। बन्द छोर के सवालों से हटकर बात करने वाले सवालों की यह चुनौती बच्चों के लिए सकारात्मक पक्ष की तरह थी।

एक किताब में काफ़ी कुछ होता है, टेक्स्ट और चित्र, दोनों को पढ़ने में बहुत कुछ नया मिलता है।

शिक्षकों या सन्दर्भदाताओं के लिए ज़रूरी बातें :

1. बच्चों ने जिन किताबों को पढ़ा है उनका इस्तेमाल इस गतिविधि के लिए करें।
2. गतिविधि के लिए चयनित किताबों को आप ख़ुद भी अच्छे से पढ़ लें ताकि मज़ेदार सवाल बनाने में बच्चों की मदद कर सकें।
3. पहली बार जिस भी तरह के सवाल आएँ, उनको वैसे ही गतिविधि में पूछने दें। बच्चों को सवालों पर प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित करें।
4. पूरी प्रक्रिया का अवलोकन आपको मदद करेगा कि बच्चे किताबों से किस तरह से जुड़ पा रहे हैं, इसलिए आप सवाल बनाकर देने की जल्दबाज़ी न करें।
5. शुरुआत 2 से 3 सवाल बनाने से की जा सकती है।

सन्दर्भ

लेख 'पढ़ना किसे कहते हैं?', अंक 29, *शैक्षणिक संदर्भ*, एकलव्य, भोपाल

लेख '*पढ़ना है समझना*', एनसीईआरटी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

लेख 'पढ़ना, लिखना और समझना', अंक 52, *शैक्षणिक संदर्भ*, एकलव्य, भोपाल

दीपाली शुक्ला एकलव्य संस्था के प्रकाशन कार्यक्रम से एक दशक से अधिक समय से जुड़ी हैं। बाल साहित्य पढ़ना पसन्द है। लाइब्रेरी और रीडिंग पर काम करती हैं। 'लाइब्रेरी से दोस्ती' कोर्स से जुड़ी हैं। बच्चों और शिक्षकों के साथ बाल साहित्य को लेकर चर्चा करना भी अच्छा लगता है।

सम्पर्क : deepalishukla99@yahoo.com

दूसरी भाषा को सीखने-सिखाने के अनुभव

आकाश शांडिल्य

विद्यार्थियों को दूसरी भाषा के तौर पर अँग्रेज़ी भाषा सिखाने का सबसे अच्छा तरीक़ा कौन-सा है? इसका जवाब जानने के लिए लेखक ने चौथी और पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों के साथ उनकी मूल भाषा के गीतों और कविताओं का उपयोग करने का एक शैक्षणिक प्रयोग किया। इस दौरान उन्होंने समुचित व्याकरण शिक्षण और बातचीत के अवसरों के बीच सन्तुलन बनाने की कोशिश की।

अँग्रेज़ी भाषा की कक्षाओं में शिक्षण के तरीक़े के रूप में अनुवाद को एक उपेक्षा की नज़र से देखा जाता है। लेकिन भारतीय कक्षाओं में अनुवाद और व्याकरण पढ़ाने का, काफ़ी इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि अधिकांश विद्यार्थियों और शिक्षकों का अँग्रेज़ी से परिचय बहुत सीमित होता है। वैसे दूसरी भाषा सीखने (Second Language Acquisition) पर किए गए हालिया शोध में व्याकरण के महत्त्व पर फिर से विचार किया गया है। अब कई शोधकर्ता मानने लगे हैं कि द्वितीय भाषा की कक्षाओं में व्याकरण शिक्षण को नज़रन्दाज़ नहीं करना चाहिए। वे शिक्षक भी ऐसा मानते हैं जो एक ऐसे परिवेश में द्वितीय भाषा के तौर पर अँग्रेज़ी पढ़ा रहे हैं, जहाँ अँग्रेज़ी का माहौल ही नहीं होता, और इसलिए वे लक्षित भाषा को पढ़ाने के लिए व्याकरण शिक्षण पर निर्भर रहते हैं।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए, बाड़मेर ज़िले के एक दूर-दराज़ के गाँव के सरकारी विद्यालय में चौथी कक्षा के 5 और पाँचवीं कक्षा के 12 विद्यार्थियों के साथ एक सप्ताह की योजना तैयार की गई थी। इस योजना का उद्देश्य यह था कि द्वितीय भाषा को सिखाने के लिए कक्षा में पर्याप्त व्याकरण शिक्षण व बातचीत के अवसरों के बीच सन्तुलन बनाया जाए, और पारम्परिक व्याकरण अनुवाद पद्धति का इस्तेमाल न किया जाए। अतः यह योजना बनाई गई कि विद्यार्थियों के साथ कुछ मारवाड़ी लोकगीतों का अनुवाद किया जाए, और इस दौरान भाषा संरचनाओं पर उनके साथ चर्चा की जाए ताकि वे बातचीत में उन संरचनाओं का इस्तेमाल कर पाएँ। अँग्रेज़ी भाषा में दक्षता की बात करें तो 17 में से 15 विद्यार्थी अँग्रेज़ी वर्णमाला से परिचित थे, और उनमें से 14 अपने आस-पास की चीज़ों के नाम अँग्रेज़ी में बता सकते थे। लेकिन उनमें से किसी ने भी अँग्रेज़ी वाक्यों का इस्तेमाल नहीं किया था। इस प्रयोग में 17 में से 2 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे।

> **अब कई शोधकर्ता मानने लगे हैं कि द्वितीय भाषा की कक्षाओं में व्याकरण शिक्षण को नज़रन्दाज़ नहीं करना चाहिए।**

हमने योजना को कैसे लागू किया?

इस प्रक्रिया की शुरुआत एक ऐसी कक्षा से हुई जिसमें पड़ोस में होने वाली शादी के कारण उपस्थिति कम थी। उपस्थित 5 विद्यार्थियों के साथ कुछ मारवाड़ी और हिन्दी गीत / कविताएँ, जैसे 'धोरा रे धोरा में म्हारी रेलगाड़ी चाले', 'म्हारो मन करे मावड़ी' और 'इक बुढ़िया ने बोया दाना' पर काम किया गया। इनमें से 'म्हारो मन करे मावड़ी' को दो बार गाया गया, और एक दीवार पर चिपका दिया गया। विद्यार्थियों को बताया गया कि हम इस गीत का अँग्रेज़ी में अनुवाद करेंगे। अनुवाद के लिए इस कविता को चुनने का कारण यह था कि इसमें कुछ बुनियादी अँग्रेज़ी संरचनाओं को दोहराया गया था। विद्यार्थियों से कहा गया कि वे अगले दिन अपने अन्य सहपाठियों को यह कविता सुनाने के लिए तैयार रहें। अगले दिन जब कक्षा में ज़्यादा विद्यार्थी उपस्थित थे तो उनसे कविता को दो बार सुनाने के लिए कहा गया, जिसमें से एक बार उन्हें चार्ट की ओर इशारा भी करना था।

जब सभी पाठ्य (टेक्स्ट) से परिचित हो गए तो उनसे दिए गए पाठ्य के अर्थ पर चर्चा करने के लिए कहा गया। विद्यार्थी एक समूह के रूप में पूरी कविता समझा पाए। इस अभ्यास के बाद पाठ्य का अनुवाद करने का काम शुरू हुआ। पहला वाक्यांश था 'म्हारो मन करे...'। शिक्षक ने इसके अनुवाद के लिए 'I wish...' वाक्यांश दिया, और विद्यार्थी 'कई-कई...' का अनुवाद 'many' के रूप में कर पाए। 'हो जाओ' के लिए 'become' का प्रयोग किया गया।

अनुवाद ब्लैकबोर्ड पर भी लिखा गया जिसे विद्यार्थियों ने अपनी नोटबुक में लिख लिया। इसके बाद विद्यार्थियों से कहा गया कि 'I wish...' वाक्यांश का प्रयोग अपने वाक्यों में करें जिनमें वे अपनी इच्छाएँ बताएँ। विद्यार्थियों ने चित्र 1 में दिखाए गए वाक्य बनाए, जिन पर बाद में कक्षा में चर्चा की गई। विद्यार्थियों को 'I wish I become...', 'I wish I could...', और 'I wish I had...' जैसे वाक्यांश दिए गए। इनका प्रयोग करके उन्होंने वाक्य बनाए जिनमें उन्होंने अपनी इच्छाओं के बारे में बताया। 'Have' और 'can' के इस्तेमाल पर भी चर्चा की गई। इससे वे यह समझ पाए

कि 'can' के बाद कोई क्रिया आएगी और 'have' के बाद कोई चीज़ (संज्ञा) आएगी।

जो 12 विद्यार्थी उपस्थित थे, उनमें से 3 को इस काम के लिए शिक्षक की मदद की ज़रूरत पड़ी। इस अभ्यास को करते समय शिक्षक ने महसूस किया कि ज़्यादातर विद्यार्थी दी गई संरचनाओं में तो अपने इनपुट आसानी से जोड़ रहे थे, लेकिन अगर उन्हें ख़ुद इन संरचनाओं का उपयोग करना है तो 'I wish I have' को 'I wish…' और 'I have…' में तोड़ना होगा तथा 'I can...', 'I am…' और 'I have…' पर काम करना होगा, इससे विद्यार्थियों को आसानी होगी।

अगले दिन विद्यार्थियों ने कविता और अनुवाद को सुधारना, और धीरे-धीरे अगली पंक्ति का अनुवाद करना शुरू कर दिया। चूँकि कविता कवि की इच्छाओं को विस्तार से बताती है, इसलिए विद्यार्थी 'I wish…' से एक नया वाक्य बनाने की शुरुआत कर पाए।

अन्य शब्दों से भी विद्यार्थी परिचित थे, और वे उनका अँग्रेज़ी में अनुवाद कर सके, सिवाय 'धोरा' के, जिसका मतलब है रेत का टीला। इस वाक्य का अनुवाद करते समय शिक्षक ने विद्यार्थियों के साथ अँग्रेज़ी की सब्जेक्ट-वर्ब-ऑब्जेक्ट (SVO) संरचना पर भी चर्चा की। उन्हें बताया कि इन वाक्यों में जो काम कर रहा है वह पहले आएगा, काम दूसरे स्थान पर आएगा, और जो कुछ भी बाक़ी है वह काम के बाद रखा जाएगा। कक्षा ने 'I am reading a book' जैसे वाक्यों की सहायता से इसका अभ्यास भी किया। इसका अभ्यास अनुवाद पद्धति की मदद से किया गया था, और ऐसा लग रहा था कि विद्यार्थी अगले वाक्यों की सही व्याकरणिक संरचना को समझ पा रहे थे। अन्त में, विद्यार्थियों को तीन वाक्य बनाने और उनका अनुवाद करके अपनी नोटबुक में लिखने का काम दिया गया।

अगले दिन पाठ्य की एक और पंक्ति का अनुवाद किया गया। इसमें विद्यार्थियों ने 'I am…' की जगह 'He / She / Name is…' का प्रयोग करके कुछ नए वाक्य बनाने का अभ्यास किया। इस अभ्यास के लिए चौथी कक्षा की वर्कबुक की वर्कशीट 56 और पाँचवीं कक्षा की वर्कबुक का भी उपयोग किया गया। वर्कशीट में दी गई गतिविधि के अनुसार विद्यार्थियों को अपने दोस्तों से कुछ प्रश्न पूछकर उनके लिए एक परिचय कार्ड तैयार करना था। जब विद्यार्थियों को स्वयं प्रश्न बनाने में कठिनाई हुई तो उन्हें वर्कशीट में दिए गए प्रश्न समझाए गए, और अपने दोस्तों से ये प्रश्न अँग्रेज़ी में पूछने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस प्रकार एक निर्देशित लेखन अभ्यास के माध्यम से सीखी हुई संरचनाओं का बातचीत में उपयोग करने में वर्कशीट से काफ़ी सहायता मिली।

अभ्यास के लिए अन्य गतिविधियाँ

इसी प्रकार अगले दिनों में कविता की शेष पंक्तियों का भी अनुवाद किया गया। कविता की एक पंक्ति का अनुवाद करने और पिछले पाठ्य को दुबारा जाँचने के साथ-साथ, विद्यार्थियों ने कुछ संरचनाओं का अभ्यास किया, शब्दावली खेल खेले, और बचे समय में अपने स्वयं के वाक्यों का निर्माण और अनुवाद किया।

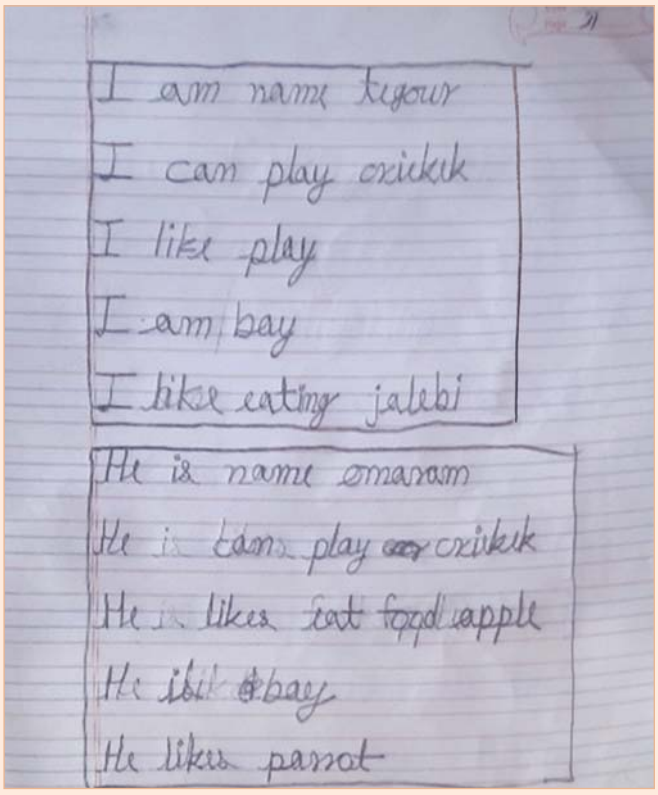

चित्र 1 : विद्यार्थी के काम का नमूना

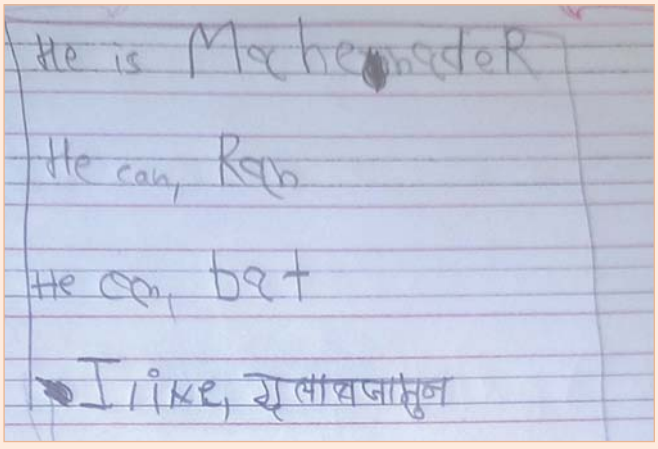

चित्र 2 : विद्यार्थी के काम का नमूना

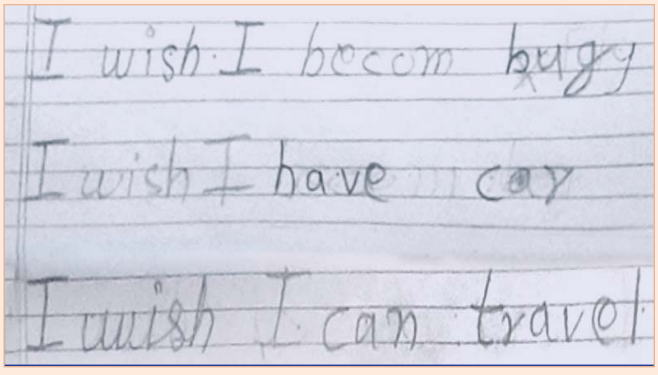

चित्र 3 : विद्यार्थी के काम का नमूना

इन अभ्यासों के दौरान विद्यार्थियों को अपने साथियों के उत्तर या पिछली चर्चाओं के उदाहरणों को देखकर अपनी ग़लतियाँ सुधारने के लिए प्रोत्साहित किया गया। तीन विद्यार्थी ज़रा धीमी गति से काम करते थे, इसलिए शिक्षक ने उनकी मदद की। बाक़ी विद्यार्थी अपने काम में लगे रहे। इन अभ्यासों को करते हुए कक्षा में एक शब्द दीवार भी बनाई, जहाँ सभी नए सीखे गए शब्दों को लिखा गया। इसके साथ ही, नई वाक्य संरचनाओं के लिए वाक्य पट्टियाँ (स्ट्रिप्स) भी बनाई गईं।

आकलन

छठे दिन कविता का अनुवाद पूरा हुआ। इसके बाद विद्यार्थियों का एक छोटा-सा आकलन यह जानने के लिए किया गया कि उनमें से कितनों ने इन संरचनाओं का स्वतंत्र रूप से उपयोग करना सीख लिया है। विद्यार्थियों से कहा गया कि वे अपने बारे में और अपने दोस्तों के बारे में पाँच वाक्य लिखें। जैसे, वे कौन हैं; वे क्या कर सकते हैं (मसलन, वे दौड़ सकते हैं, लेकिन उड़ नहीं सकते); उन्हें क्या पसन्द है; आदि। आकलन के लिए लगभग 11 विद्यार्थी मौजूद थे। इनमें से दो ये कार्य नहीं कर पा रहे थे, अतः शिक्षक ने उनकी मदद की। चार विद्यार्थी बिना किसी ग़लती के इन कार्यों को कर पाए, जबकि अन्य पाँच को अपने उत्तरों की दुबारा जाँच करनी पड़ी ताकि वे ख़ुद उन्हें सही कर सकें। जिस विद्यार्थी का उत्तर चित्र 2 में दिखाया गया है, वह संरचनाओं के सही इस्तेमाल को समझ गया था, लेकिन एक अन्य विद्यार्थी (चित्र 3) अभी भी उनका इस्तेमाल करने की कोशिश में लगा हुआ है।

कुछ विचार

इस योजना पर विद्यार्थियों के साथ काम करते समय व्याकरण पढ़ाने, अनुवाद और बातचीत करने के बीच सन्तुलन के बारे में निम्नलिखित विचार सामने आए :

1. प्रासंगिक पाठ्य पर काम करना

अपने आस-पास के माहौल से लिए गए पाठ्य का अनुवाद करने से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास आया। इससे वे प्रेरित भी हुए क्योंकि वे मूल कविता के सन्दर्भ को अच्छी तरह से समझ पाए। अपनी स्थानीय भाषा के शब्दों के इस्तेमाल से इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों की रुचि बढ़ाने में मदद मिली। इससे उन्हें नए शब्दों और वाक्यांशों को जल्दी से समझने में मदद मिली।

2. अनुवाद का कार्य

विद्यार्थियों को अनुवाद करने का कार्य अच्छा लग रहा था जिससे वे नई चीज़ें सीखने के लिए उत्सुक हो रहे थे। उनमें से कई नए पाठ्य को समझने की कोशिश भी कर रहे थे। तीन विद्यार्थियों को छोड़कर बाक़ी सभी अनुवादित पाठ्य को पढ़ सकते थे, और उसे काफ़ी हद तक समझ भी सकते थे। उनमें से कुछ ने ख़ास शब्दों या वाक्यांशों के अर्थ या अनुवाद के बारे में प्रश्न भी पूछे। लगता था कि अनुवाद का यह कार्य उन्हें दूसरी भाषा के बारे में अधिक जानने के लिए प्रेरित कर रहा है। अन्त में, विद्यार्थियों ने यह प्रस्ताव भी रखा कि हम पहले दिन वाले सेट से एक और कविता का अनुवाद करें।

3. शब्दावली

स्थानीय सन्दर्भ और मारवाड़ी कविता से जुड़कर विद्यार्थी नई शब्दावली को अधिक आसानी से समझ सके। अधिकांश विद्यार्थी 'to become', 'to wish', और 'to ride' जैसी क्रियाओं के अर्थ और इस्तेमाल को भी समझ सके।

4. संरचना पर ज़ोर

कविता से ली गई कुछ संरचनाओं के अभ्यास पर ज़ोर देने से विद्यार्थियों में वाक्य निर्माण की प्रक्रिया शुरू करने में मदद मिली। व्याकरणिक संरचना पर स्पष्ट चर्चा केवल अँग्रेज़ी की SVO संरचना को समझाने के लिए की गई थी। इसके बाद विद्यार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया गया कि वे ख़ुद अपने उत्तरों को सही करें। पाँच दिनों के बाद, थोड़ी-सी मदद से, वे अँग्रेज़ी में अपनी बात कह पा रहे थे। उदाहरण के लिए, जब विद्यार्थियों ने कहा, "हम खेलना चाहते हैं", तो उनसे कहा गया कि वे अँग्रेज़ी में वही बात कहें, और वे "We want to play" जैसा कुछ बोल पाए। ये अभ्यास तब किए गए जब कक्षा में बातचीत के दौरान ऐसे वाक्य सामने आए।

चित्र 4 : प्रिंट-रिच कक्षा और ख़ुश छात्रा

5. अनुवाद की सीमाएँ

विद्यार्थियों ने ख़ुद अपने वाक्य बनाए और उनका अनुवाद किया। इस प्रक्रिया ने उन्हें कुछ अँग्रेज़ी संरचनाओं (मुख्य रूप से SVO संरचना) और अवयवों (सही सर्वनाम, सहायक क्रिया, रूप, आदि) के सही इस्तेमाल और उन पर विचार करने में मदद की। हालाँकि, जब उनसे आख़िरी दिन के बारे में एक छोटा-सा विवरण लिखने के लिए कहा गया तो अधिकतर विद्यार्थियों ने कुछ निश्चित संरचनाओं का पालन किया। इससे पता चलता है कि उनका ध्यान सही संरचनाओं पर था, न कि इस बात पर कि वे वास्तव में क्या कहना चाहते हैं। इससे यह संकेत भी मिलता है कि विद्यार्थी अभी तक अँग्रेज़ी में सोच नहीं पा रहे थे। वे अपनी मातृभाषा में सोच रहे थे, और फिर उसे अँग्रेज़ी में व्यक्त करने का प्रयास कर रहे थे। अगर विद्यार्थियों को सीधे दूसरी भाषा में सोचने में सक्षम बनाना है तो यह ज़रूरी है कि बातचीत की

अँग्रेज़ी से उनका सम्पर्क बढ़े, साथ ही उन्हें अँग्रेज़ी में बोलने और लिखने के अधिक अवसर दिए जाएँ।

6. संरचनाओं का विस्तार

जब विद्यार्थियों को अन्तिम दिन लिखने का कार्य दिया गया तो कुछ विद्यार्थी अपने ही तरीक़े से अतिरिक्त विवरणात्मक शब्दों का उपयोग करते दिखे। उदाहरण के लिए, वाक्यों का विस्तार करते हुए एक विद्यार्थी ने लिखा, "He likes to eat food apple"; या एक अन्य विद्यार्थी, जिसने अपने लेखन कार्य में कुछ ग़लतियाँ की थीं, ने लिखा, "He can book read"। इस तरह के विस्तार कक्षा की बातचीत में भी देखे गए। इससे यह संकेत मिलता है कि हालाँकि विशिष्ट और सीमित संरचनाओं पर बहुत अधिक ज़ोर दिया गया था, फिर भी ये विद्यार्थी अपनी गति से, अपने तरीक़े से भाषा सीख रहे थे।

निष्कर्ष

संरचना पर ज़ोर देते हुए पाठ्य के अनुवाद पर काम करने से इन विद्यार्थियों को संवादात्मक अँग्रेज़ी सीखने में मदद मिली। अभी तक जो विद्यार्थी केवल अँग्रेज़ी के शब्दों का इस्तेमाल करते थे, वे अब अँग्रेज़ी में अपने विचार व्यक्त करने के बारे में सोचने लगे हैं। जहाँ तक संवादात्मक प्रवाह (communicative fluency) की क्षमता प्राप्त करने का सवाल है, यह एक लम्बी प्रक्रिया लगती है और शिक्षण तथा सन्दर्भों की सीमाओं को देखते हुए अनुवाद और बुनियादी व्याकरण जैसे अभ्यासों की मदद से पढ़ाना विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकता है। दूसरी ओर, ये अभ्यास भी तभी पूर्ण कहे जा सकते हैं जब इनके साथ कुछ ऐसी गतिविधियाँ भी जोड़ी जाएँ जो विद्यार्थियों को सही संरचनाओं की चिन्ता किए बग़ैर भाषा का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करती हों। छठे दिन विद्यार्थियों को जो लेखन कार्य दिया गया था, उसमें कुछ विद्यार्थियों ने मिश्रित भाषा का उपयोग किया, और सही व्याकरणिक संरचनाओं पर ध्यान दिए बिना अपने ही तरीक़े से अपने बारे में लिखने का प्रयास किया। यह बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि इस प्रकार के लेखन कार्य के लिए व्याकरण की शुद्धता की कोई पाबन्दी न लगाई जाए, और इन विद्यार्थियों को धीरे-धीरे अपनी भाषा के प्रयोग पर विचार करके अपनी ग़लतियों को सुधारने का अवसर दिया जाए।

> **स्थानीय सन्दर्भ और मारवाड़ी कविता से जुड़कर विद्यार्थी नई शब्दावली को अधिक आसानी से समझ सके।**

जैसा कि पहले बताया गया है, वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए, केवल एक सन्तुलित दृष्टिकोण ही उपयोगी प्रतीत होता है। विद्यार्थियों से ऐसे अभ्यास करवाने चाहिए जिनसे वे शुरुआती इस्तेमाल के लिए कुछ संरचनाएँ सीख सकें, और फिर अपनी भाषा पर सोच-विचार कर सकें। साथ ही, उन्हें सटीकता की चिन्ता या भय के बिना दूसरी भाषा में (मौखिक और लिखित रूप में) पूरे पाठ्य से जुड़ने के लिए बहुत सारे अवसर और जानकारी दी जानी चाहिए।

सन्दर्भ

Nassaji, H., & Fotos, S. (2011). *Teaching grammar in second language classrooms: Integrating form-focused instruction in communicative context.* Routledge

आकाश शांडिल्य अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बाड़मेर, राजस्थान में अँग्रेज़ी के सन्दर्भ व्यक्ति हैं। आप विशेष रूप से अँग्रेज़ी भाषा शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक क्षमता निर्माण और विषयवस्तु निर्माण पर काम करते हैं।

सम्पर्क : akash.shandilya@azimpremjifoundation.org

प्रोत्साहन और आत्मविश्वास रचनात्मक लेखन के लिए ज़रूरी

विवेक सोनी

लेखन एक तरह का संवाद है जिसके ज़रिए बच्चे अपने अनुभव और विचारों को व्यक्त करते हैं। बच्चे यह लेखन रचनाशील तरीक़े से कर सकें, यह बहुत कुछ बच्चों के लेखन पर शिक्षक की प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है। यदि शिक्षक की प्रतिक्रिया बच्चे के लेखन को सकारात्मक तरीक़े से आगे बढ़ाने वाली और प्रोत्साहन व आत्मविश्वास का माहौल रचने वाली होती है तब रचनात्मक लेखन के फलने-फूलने की सम्भावना कई गुना बढ़ जाती है।

विगत 15 वर्षों की अपनी स्कूल विज़िट के दौरान मैंने महसूस किया है कि बच्चों को लिखना सिखाने की प्रक्रिया में अकसर उन्हें ब्लैकबोर्ड या कॉपियों पर लिखे हुए की नक़ल करने या प्रश्नोत्तर लिखने के लिए कहा जाता है। इससे उनकी रचनात्मकता दब जाती है, और भविष्य में वह ख़ुद से सोचकर लिखने में चुनौती महसूस करते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में यह भी देखने को मिलता है कि कक्षा में रचनात्मक लेखन के लिए बच्चों को पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते हैं। शिक्षक अकसर बच्चों को लेखन में शुद्धता, व्याकरण और वर्तनी पर ध्यान देने के लिए कहते हैं। विगत महीनों के विभिन्न कक्षाओं के भाषा की दक्षताओं पर आधारित टूल के अध्ययन से पता चला है कि प्राथमिक से माध्यमिक स्तर के 40 से 50 प्रतिशत विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से लिखने में कठिनाई महसूस करते हैं।

चित्र 1: कहानी पढ़ने के बाद कहानी के बारे में अपने विचार लिखते विद्यार्थी

> **मैंने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया कि वे डायरी लेखन को एक रचनात्मक और व्यक्तिगत प्रक्रिया मानें, न कि महज़ एक स्कूल असाइनमेंट।**

यदि हम पिछले सालों में सरकार द्वारा आयोजित नेशनल अचीवमेंट सर्वे के आँकड़ों पर ग़ौर करते हैं तब यह आँकड़े भी इसी ओर इशारा करते दिखते हैं। उदाहरण के तौर पर, पाँचवीं कक्षा के एक विद्यार्थी को दो अलग-अलग विषयों पर कुछ वाक्यों को लिखना था। दोनों विषय विद्यार्थियों के अनुभव से जुड़ते हुए भी थे, लेकिन वह ख़ुद से सोचकर लिखने के इस अभ्यास को ठीक से नहीं कर पाए। इससे मुझे समझ में आया कि उन्हें अपनी कक्षाओं में रचनात्मक लेखन के अनुभव नहीं मिल पा रहे हैं। यह समस्या प्राथमिक स्तर से ही शुरू होती है तथा उच्च कक्षाओं में और गहरा जाती है। विद्यार्थियों को अपने विचारों को व्यवस्थित करने, और उन्हें प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए अभ्यास की ज़रूरत महसूस होती है। इसके लिए विद्यालयों में नियमित प्रयास की ज़रूरत है।

रचनात्मक लेखन के उद्देश्य

प्राथमिक स्तर पर विद्यालय आने वाले बच्चे अपनी कल्पना की दुनिया में खोए रहते हैं, और नए-नए विचारों को प्रकट करते हैं। वह अपनी भावनाओं को बिना किसी रोक-टोक के व्यक्त करते हैं और सीखने के प्रति गहरी उत्सुकता रखते हैं। अकसर उनकी इस कल्पना और उत्सुकता का ध्यान हम अपने शिक्षण के दौरान नहीं रख पाते हैं, इस कारण हमारा शिक्षण कार्य परम्परागत तरीक़ों से ही चलता रहता है। अगर इस समय लिखना सिखाने की प्रक्रिया में उनका सही ढंग से मार्गदर्शन किया जाए तो हम उन्हें बेहतर लेखक बना सकते हैं।

रचनात्मक लेखन का उद्देश्य बच्चों को सोचने के लिए प्रेरित करना, अपने अनुभवों को व्यवस्थित करना, और लेखन की पारम्परिक संरचनाओं से आगे बढ़कर कुछ नया सृजन करने के लिए प्रोत्साहित करना है। बच्चे चाहे दूसरी कक्षा में हों

या पाँचवीं में, उन्हें अपनी कल्पनाओं के लिए खुला छोड़ देना चाहिए। उन्हें अपनी रुचियों के बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, और विभिन्न लेखन शैलियों व विधाओं के साथ प्रयोग करने के अवसर देने चाहिए, फिर चाहे वह कहानी हो, कविता हो, या वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित लेखन।

रचनात्मक लेखन की प्रक्रिया

रचनात्मक लेखन वह प्रक्रिया है जिसमें लेखक अपनी कल्पना का उपयोग करके कहानी, कविता, नाटक या अन्य विधाओं में रचनात्मकता रूप से अपने विचारों को व्यक्त करता है। यह बच्चों के लिए अपनी कल्पनाओं और विचारों को नए और अनोखे तरीक़ों से व्यक्त करने का एक शानदार मौक़ा होता है। यह लेखन शुद्ध लिखने, व्याकरण या वर्तनी सुधारने के बारे में नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो आत्माभिव्यक्ति को बढ़ावा देती है, आत्मविश्वास का निर्माण करती है, और लेखन के प्रति रुचि को प्रेरित करती है।

रचनात्मक लेखन की रणनीतियाँ

बच्चों में रचनात्मक लेखन को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों को रचनात्मक लेखन की गतिविधियों से जुड़ी नई और विविधतापूर्ण रणनीतियों को अपनाने की आवश्यकता है। जैसे– बच्चों को कहानियाँ सुनाना, चित्रों के आधार पर कहानियाँ, कविताएँ, नाटक आदि लिखवाना। इसके साथ ही, विद्यालयों में पुस्तकालयों का विकास और पुस्तक प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रमों का आयोजन भी बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देने में सहायक हो सकता है। रचनात्मक लेखन के दौरान पाठों में विद्यार्थियों को किसी विषय पर अपना दृष्टिकोण बताने के लिए भरपूर मौक़े प्रदान किए जाने की ज़रूरत महसूस होती है।

रचनात्मक लेखन : कक्षाओं के अनुभव

रचनात्मक लेखन बच्चों को महज़ शब्दों को काग़ज़ पर उतारने का अवसर नहीं देता, बल्कि यह उनकी कल्पनाओं, विचार और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने का एक अद्वितीय माध्यम भी बनता है। यह उनके मानसिक और भावनात्मक विकास में सहायक होता है।

कहानी लिखना

अपनी स्कूल विज़िट के दौरान मैंने कक्षाओं में रचनात्मक लेखन की गतिविधियों को आयोजित करने की कोशिश की तो बच्चों की प्रतिक्रियाएँ अविस्मरणीय थीं। कुछ कक्षाओं में, मैंने बच्चों को कहानियाँ लिखने के लिए प्रेरित किया जिनमें उन्हें अपनी पसन्दीदा जगह के बारे में विस्तार से लिखना था। शुरुआत में, बच्चों के लिए यह विचार करना कठिन था कि वह क्या लिखें। लेकिन जैसे-जैसे उन्होंने अपनी सोच को साझा करना शुरू किया, उनकी रचनात्मकता का स्तर देखकर मुझे काफ़ी सन्तुष्टि मिली। बच्चों ने अपने विचारों को दिलचस्प तरीक़े से व्यक्त किया। कुछ ने अपनी कल्पना से पूरी एक नई दुनिया बना दी, वहीं कुछ बच्चों ने अपनी पसन्दीदा जगहों का विस्तृत और मन को छूने वाला वर्णन किया।

इसके बाद, मैंने बच्चों को कुछ चुनिन्दा किताबों के चित्रों के आधार पर कहानियाँ लिखने के लिए प्रेरित किया। यह चित्र *बरखा* सीरीज़ की, *शरबत, मिली की साइकिल, ऊन का गोला, मिमी के लिए क्या लूँ?* और *पका आम* किताबों के थे। चित्रों को देखकर बच्चों ने अपने विचारों और भावनाओं को काग़ज़ पर उकेरा। एक बच्ची ने एक चित्र से प्रेरित होकर एक छोटे-से गाँव की कहानी लिखी जिसमें वह गाँव हर किसी के लिए एक सुरक्षित ठिकाना था। इस प्रक्रिया में, उन्हें अपनी कल्पनाशीलता को गहराई से व्यक्त करने का मौक़ा मिला।

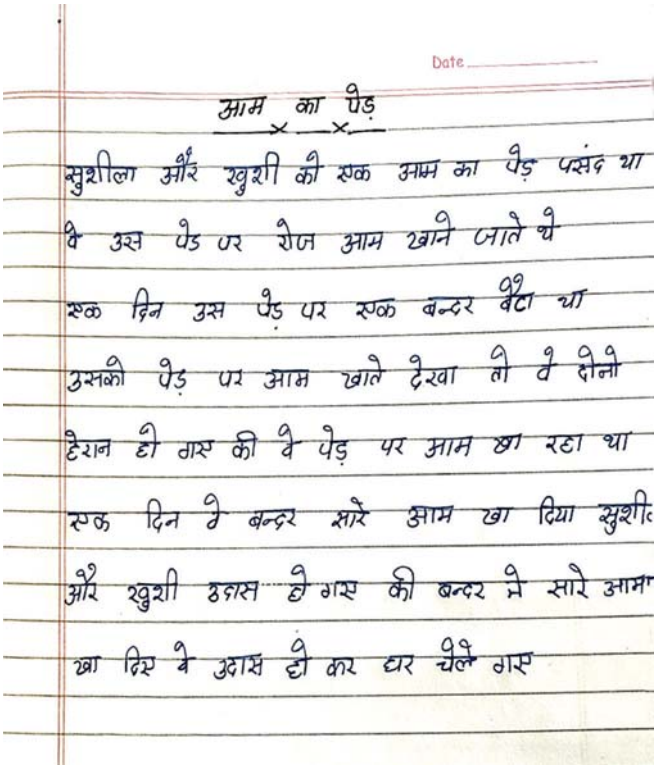
Date

आम का पेड़

सुशीला और खुशी की एक आम का पेड़ पसंद था
वे उस पेड़ पर रोज आम खाने जाते थे
एक दिन उस पेड़ पर एक बन्दर बैठा था
उसको पेड़ पर आम खाते देखा तो वे दोनो
हैरान हो गए की वे पेड़ पर आम खा रहा था
एक दिन वे बन्दर सारे आम खा दिया सुशी
और खुशी ठहास हो गए की बन्दर ने सारे आम
खा दिए वे उदास हो कर घर चले गए

चित्र 2 : विद्यार्थी के काम का नमूना

कविता लेखन

जब मैं स्कूल विज़िट पर जाता, बच्चों को कविताएँ लिखने के लिए भी प्रेरित करता था। इसके लिए बच्चों को कुछ चित्र व शब्द दिए जाते थे। शुरुआत में, बादल, जंगल, मेला, नानी, दादी, खेल, पक्षी, आदि जैसे किसी शब्द पर सभी बच्चे मिलकर कविता की एक-एक पंक्ति ब्लैकबोर्ड पर सामूहिक रूप से बनाते थे, और फिर अपनी-अपनी कविताएँ नोटबुक में रचते थे। यह देखना दिलचस्प था कि कैसे बच्चों ने सरल शब्दों में अपनी भावनाओं को पंक्तियों में पिरोने की कोशिश की। कभी-कभी तो वह इतने उत्साहित हो जाते थे कि अपनी कविताओं को पूरी कक्षा में पढ़कर सुनाते। एक दिन, एक बच्चे ने अपनी कविता में एक पक्षी की स्वतंत्रता का वर्णन किया जो अपने पंख फैलाकर आकाश में उड़ता है। उसमें निहित सन्देश ने पूरी

कक्षा को प्रभावित किया। अलग-अलग विद्यालयों में बच्चों के इस सृजनात्मक पक्ष को देखकर मुझे तरह-तरह के अनुभव प्राप्त हुए।

दैनिक डायरी लेखन

विद्यालयों में विज़िट के दौरान यह अनुभव हुआ कि जो शिक्षक अपने विद्यालयों के बच्चों के साथ नियमित रूप से दैनिक डायरी लेखन पर कार्य कर रहे थे, उन बच्चों का लेखन अन्य बच्चों की तुलना में काफ़ी बेहतर था। अकादमिक सत्रों में शिक्षकों ने अपने विद्यालयों में दैनिक डायरी लेखन के प्रभावों के बारे में अपने दिलचस्प अनुभव रखे। इनमें प्राथमिक विद्यालय बैरांगना के शिक्षक महेशजी ने दैनिक डायरी के माध्यम से बच्चों के लेखन में आए सकारात्मक बदलावों के अनुभव साझा किए।

चित्र 3 : एक छात्रा द्वारा लिखी गई कविता

इसके बाद, मेरा महेशजी के विद्यालय जाना हुआ। वहाँ मैंने बच्चों से गाँव के समीप स्थित ट्राउट फ़िश के मछली पालन तालाबों पर उनके अनुभव लिखने को कहा। बच्चों ने अपनी कॉपी में मछली पालन की प्रक्रिया को स्पष्टता और गहराई के साथ अच्छे से दर्ज किया। यह दर्शाता है कि बच्चों ने इस अनुभव को न केवल समझा, बल्कि उसे अपने शब्दों में अच्छी तरह से व्यक्त भी किया। यह उनके अनुभवात्मक लेखन कौशल की प्रगति को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इसलिए लेखन को बेहतर करने के लिए, मैं बच्चों में दैनिक डायरी लेखन को सबसे ऊपर रखता हूँ। जब मैंने विद्यार्थियों को दैनिक डायरी लेखन के अभ्यास के लिए प्रेरित किया तब मुझे नहीं पता था कि यह साधारण-सा अभ्यास उनके लेखन कौशल में इतना बड़ा सकारात्मक बदलाव ला सकता है। शिक्षकों ने भी इस बात से अवगत करवाया कि शुरू में कुछ बच्चों ने इसे एक और नीरस काम माना और कुछ को तो यह बिल्कुल ही नया और कठिन लगा। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, मैंने देखा कि यह अभ्यास उनके लेखन को सुधारने के साथ-साथ उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ा रहा है। मैंने बच्चों को बताया कि डायरी लेखन का उद्देश्य महज़ रोज़ की घटनाओं का वर्णन करना नहीं है, बल्कि अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को शब्दों में व्यक्त करना है। यह उन्हें न केवल लेखन के लिए प्रेरित करता था, बल्कि उनकी सोचने की क्षमता और आत्मविश्लेषण की प्रक्रिया को भी बढ़ावा देता था।

बच्चों के लेखन की इस प्रक्रिया में यह देखने को मिला कि शुरू में उनका लेखन सरल और असंगत था, लेकिन जैसे-जैसे वह इसे रोज़ करते गए उनके शब्दों में गहराई आई। पहले जहाँ वह केवल 'आज मैंने क्या किया' लिखते थे, अब वह अपनी दिनचर्या से जुड़ी भावनाओं और अनुभवों पर भी लिखने लगे। उदाहरण के लिए, एक विद्यार्थी ने एक दिन लिखा, "आज मैंने अपने दोस्त से झगड़ा किया, लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि मैं ग़लत था। अब मैं अपनी ग़लती मानकर उससे माफ़ी माँगने की सोच रहा हूँ।" ऐसे विचारों का लिखना केवल लेखन को ही बेहतर नहीं बनाता, बल्कि बच्चों को अपने अनुभवों से सीखने का भी मौक़ा देता है। मैंने बच्चों को समझाया कि डायरी लेखन का अभ्यास न केवल उनकी वर्तनी और व्याकरण को सुधारेगा, बल्कि यह उनकी सोच और विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में भी मदद करेगा।

> **शिक्षकों का मुख्य उद्देश्य बच्चों को न केवल अकादमिक रूप से, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी विकसित करना होता है।**

डायरी लेखन ने बच्चों को आत्ममूल्यांकन की प्रक्रिया से भी जोड़ा। जब वह अपने दिन के बारे में सोचते और उसे लिखते तो उन्हें ख़ुद ही समझ में आता कि क्या अच्छा हुआ, और क्या सुधारने की ज़रूरत है। कई बच्चों ने यह महसूस किया कि डायरी में लिखने से उनके भीतर छिपी हुई भावनाएँ बाहर आती हैं जिससे वह अपनी परेशानियों और ख़ुशियों को बेहतर तरीक़े से समझ पाते हैं। डायरी लेखन केवल एक कक्षा का काम नहीं, बल्कि एक आदत बननी चाहिए।

मैंने बच्चों को प्रोत्साहित किया कि वह डायरी लेखन को एक रचनात्मक और व्यक्तिगत प्रक्रिया मानें, न कि महज़ एक स्कूल असाइनमेंट। उनके लेखन में अब आत्मविश्वास और परिपक्वता आ गई है। इस अनुभव ने मुझे यह सिखाया कि शिक्षकों का मुख्य उद्देश्य बच्चों को न केवल अकादमिक रूप से, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी विकसित करना होता है। दैनिक डायरी लेखन इसके लिए एक बेहद प्रभावी तरीक़ा हो सकता है।

समस्याएँ और समझ का तालमेल

शुरुआत में ज़्यादातर बच्चों का दैनिक डायरी लेखन नीरस था। उनके लेखन को समझने में कठिनाई होती थी। कई बच्चों ने इसे अतिरिक्त और उबाऊ काम माना जिससे शुरुआत में उन्हें लिखने में कठिनाई हुई। बच्चों का आरम्भिक लेखन बहुत सरल और असंगत था। वह केवल रोज़ की घटनाओं का वर्णन करते जिनमें गहरी सोच या भावनाओं की कमी दिखाई देती थी। उनके लेखन में वर्तनी और वाक्य संरचना की ग़लतियाँ सामान्य थीं, और भाषा में प्रवाह की भी कमी थी। लेकिन बच्चों के साथ निरन्तर काम करते-करते उनके लेखन में धीरे-धीरे सुधार हुआ। यह दर्शाता है कि लगातार अभ्यास और प्रोत्साहन से ही उनकी सोच और लेखन में गहराई आई। मुझे समझ में आया कि समस्याओं के लिए तैयार रहना होगा, संयम रखना होगा, और बेहतर नतीजों के लिए इन्तज़ार भी करना होगा।

मुझे यह महसूस हुआ कि रचनात्मक लेखन बच्चों के समग्र विकास के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इससे उन्हें न केवल भाषा और अभिव्यक्ति के कौशल में सुधार करने का अवसर मिलता है, बल्कि उनकी कल्पनाशक्ति, आत्मविश्वास और समस्या सुलझाने की क्षमता को भी बढ़ावा मिलता है। सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में काम करते हुए मुझे यह समझ में आया कि लिखना सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों को केवल शुद्ध लेखन, व्याकरण या वर्तनी के बारे में सिखाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके रचनात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने का भी उतना ही महत्त्व है। बच्चों को अपनी रचनात्मकता को प्रकट करने के लिए सही वातावरण और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। इसके लिए शिक्षक का सकारात्मक दृष्टिकोण और बच्चों को अवसर देना बेहद महत्त्वपूर्ण होता है।

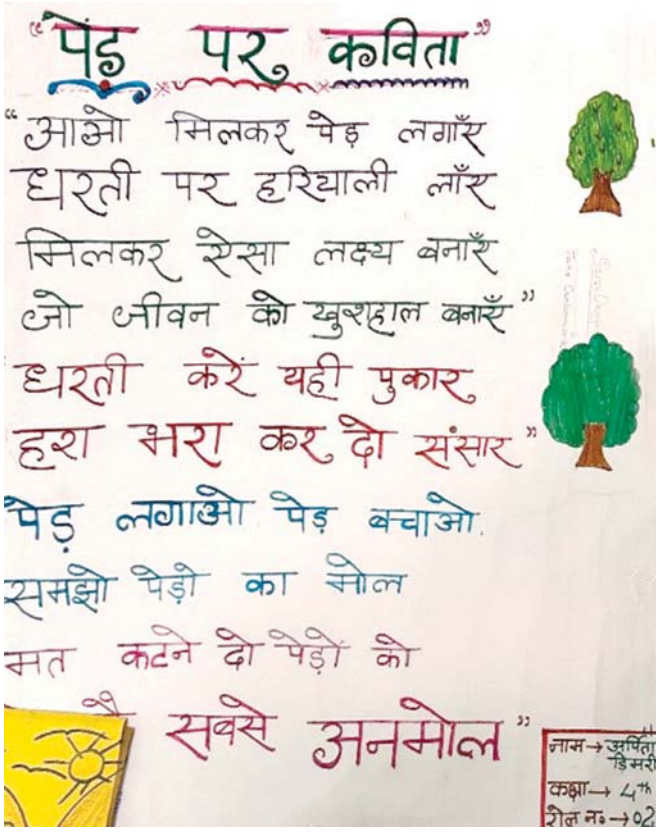

चित्र 4 : एक छात्रा द्वारा लिखी गई कविता का नमूना

सन्दर्भ

अभिव्यक्ति और माध्यम, 'सृजनात्मक लेखन' कक्षा 11-12 के लिए हिन्दी (आधार और ऐच्छिक पाठ्यक्रम) की पाठ्यपुस्तक, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

प्राथमिक कक्षाओं में हिन्दी भाषा शिक्षण हैंडबुक, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

नेशनल अचीवमेंट सर्वे 2021, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

बरखा सीरीज़, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

विवेक सोनी ने हिन्दी व अँग्रेज़ी भाषा शिक्षणशास्त्र का अध्ययन किया है। आप पिछले 16 सालों से भाषा व शिक्षक शिक्षा के अध्ययन, शोध कार्यों से जुड़े हुए हैं। वर्तमान में, आप अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन चमोली, उत्तराखण्ड में सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में काम कर रहे हैं।

सम्पर्क : vivek.soni@azimpremjifoundation.org

सिखाने के लिए बच्चों को समझना ज़रूरी

दीपिका डोबले

मेरी प्राथमिक शाला ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। मैं कक्षा 4 और 5 के बच्चों के साथ काम कर रही हूँ। जब बच्चों के साथ काम शुरू किया तो महसूस किया कि बच्चे बातचीत में अपने अनुभव बेहतर तरीक़े से नहीं रख पा रहे हैं न ही उनकी रुचि पढ़ने और रोज़ विद्यालय आने में है। मैंने बच्चों की उपस्थिति बेहतर करने, उन्हें बोलने और अपनी बात कहने-सुनने के अधिक मौक़े देने के लिए अपने विद्यालय में कुछ नए प्रयास शुरू किए हैं। यहाँ मैं अपने काम के ऐसे दो अनुभव रख रही हूँ।

मैंने बच्चों की मदद से कार्डशीट पर Hug, Hi-Fi, Shake hand और नमस्ते जैसे 'वेलकम वर्ड' लिखकर कक्षा के दरवाज़े के पास चिपकाए। प्रार्थना सभा के बाद जब बच्चे कक्षा में प्रवेश करते हैं, मैं ख़ुद उनका स्वागत करती हूँ। बच्चे Hug, Hi-Fi, Shake hand और नमस्ते, इन चार में से किसी एक शब्द पर उँगली रखते हैं या बोलते हैं। इस तरह से उनका स्वागत किया जाता है। इस गतिविधि से बच्चों और मेरे बीच तालमेल बढ़ा है, बच्चे आपस में घुलने-मिलने लगे हैं, और अपने मन की बात साझा करते हैं। हमने माचिस के कुछ ख़ाली बॉक्स इकट्ठे किए और उसके बाहरी आवरण पर सफ़ेद काग़ज़ चिपकाया। इसके बाद सभी बच्चों से उनकी पासपोर्ट साइज़ फ़ोटो मँगवाई गईं और वे माचिस की डिब्बी की ऊपरी सतह पर चिपका दी गईं। माचिस के भीतरी हिस्से, जिसमें तीलियाँ रखी जाती हैं, की पीछे की सतह पर सफ़ेद काग़ज़ चिपकाकर एक किनारे पर A और दूसरे पर P लिख दिया गया। यह कार्य बच्चों के साथ मिलकर किया। अब जो बच्चे उपस्थित होते हैं, वे अपने माचिस बॉक्स से ख़ुद उपस्थिति प्रदर्शित कर देते हैं। उपस्थिति लगाने का यह तरीक़ा रचनात्मक होता है। इसी तरह से, जो बच्चे अनुपस्थित होते हैं उनकी अनुपस्थिति मैं कर देती हूँ। इससे हुआ यह कि बच्चों में रोज़ विद्यालय आने तथा अपनी उपस्थिति लगाने की आदत बनी, और उन सबकी उपस्थिति नियमित होने लगी।

बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर देने के लिए कक्षा को भाषा-समृद्ध बनाना बहुत ज़रूरी हो गया था। कक्षा में सभी बच्चों के नाम का चार्ट बनाकर लगाया और कविता व कहानियों के चित्र पोस्टर बनाकर लगाए। शब्द-चित्र, संख्या-चित्र कार्ड, आदि बनाए गए। कक्षा में दो सीखने के कोने भी बनाए। पहला, किताबों का कोना और दूसरा, बच्चों के काम को प्रदर्शित करने का कोना। इन सबको बनाने में भी बच्चों की भागीदारी रही। अब बच्चे इन सामग्रियों को पढ़ने व सीखने की प्रक्रिया में इस्तेमाल करते हैं। उनके सहयोग से कुछ सामग्रियाँ समय-समय पर बदली भी जाती हैं। बच्चों के साथ स्थानीय परिवेश के मुद्दों, जैसे गाँव में घटी किसी घटना के अनुभव, तीज-त्योहार मनाने के अनुभव, कहीं घूमने या यात्रा के अनुभवों पर बात करना, या किसी बच्चे का जन्मदिन मनाना, आदि गतिविधियाँ बच्चों के साथ मिलकर नियमित रूप से करनी शुरू कीं। बच्चों को रोज़ कविता-कहानियाँ सुनाना व सुनना और उन पर चर्चा करना शुरू किया। अब सभी बच्चे ख़ूब बातचीत करते हैं, और अपने अनुभव साझा करते हैं।

एक बार मैं बच्चों को 'पत्र लेखन' समझा रही थी। इस दौरान मैंने बच्चों के साथ संचार माध्यम के तरीक़ों और उनकी उपयोगिता पर बातचीत की। सभी बच्चों ने इस चर्चा में भाग लिया और सन्देश पहुँचाने के तरीक़ों, जैसे पत्र, ईमेल, व्हाट्सऐप, फ़ोन कॉल, आदि पर अपने अनुभव रखे। बच्चों ने बताया कि जब रिश्तेदार, परिचित लोग या दोस्त घर से दूर होते हैं तो उनसे बातचीत करने के लिए संचार माध्यम की ज़रूरत होती है। बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर देने के लिए उन्हें लिखित व चित्रात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित किया गया। बच्चों के लेखन में ग़लतियाँ नहीं ढूँढ़ीं, बल्कि उनकी लिखी हुई सामग्री और चित्रों को चार्ट पेपर लगाकर दीवार पर प्रदर्शित किया। इससे सभी बच्चे एक दूसरे का लिखा हुआ पढ़ सके, और एक दूसरे के लिखे में हुई ग़लती को पहचानकर ख़ुद से सही भी कर सके। अब सभी बच्चे बेझिझक होकर अपनी बातें, अपने विचार लिखते हैं। अब तक बच्चों के साथ किए गए काम से मैंने यह महसूस किया है कि मुझे कक्षा के हर बच्चे को समझना होगा, और उनके सीखने की ज़रूरत एवं तरीक़ों के बारे में जानना होगा। बच्चे अब मुझसे व आपस में एक दूसरे से घुल-मिल गए हैं। वे ख़ाली समय में कक्षा के लर्निंग कॉर्नर में मौजूद किताबों, सामग्री-पोस्टर, आदि को ख़ुद से पढ़ते रहते हैं, और उन पर चर्चा करते हैं। अब सभी बच्चे नियमित तौर पर विद्यालय आ रहे हैं, और उनमें बोलने व अपनी बात कहने का आत्मविश्वास आया है।

दीपिका डोबले, शिक्षिका, प्राथमिक शाला संदई, रहली, ज़िला सागर, मध्य प्रदेश

माँ, मैं पढ़ना चाहती हूँ, मुझे स्कूल भेजो!

रिंकू सिंह

यह बात उन दिनों की है जब मेरी नियुक्ति उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर ज़िले के उच्च प्राथमिक विद्यालय, नगला सारंगपुर में अध्यापक के पद पर हुई। मैंने बच्चों के साथ शुरुआत बातचीत करके उनसे दोस्ती करने से की और बातचीत के दौरान कक्षा 8 के बच्चों से पूछा, "आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं?" एक बच्ची को छोड़कर कुछ बच्चे डॉक्टर या इंजीनियर बनना चाहते थे, कुछ फ़ौज में जाना चाहते थे। लेकिन एक बच्ची गुमसुम बैठी थी। उसका नाम रज़िया था। मैंने दुबारा प्रश्न किया, तब उसने कहा, "मैं कुछ भी बनना नहीं चाहती।" मुझे आश्चर्य हुआ। कारण जानने पर उसने बताया, "मेरे पिता नहीं चाहते मैं आगे पढ़ाई करूँ।" मैंने रज़िया को सान्त्वना दी, "मैं तुम्हारे पिता से बात करूँगा, तुम अच्छे से पढ़ाई करो।" फिर साथी अध्यापकों और ग्रामवासियों से रज़िया के पिता के बारे में पता किया। सबने मिलकर पिता से चर्चा की। उनकी सोच का निष्कर्ष निकाला कि वह नहीं चाहते कि अब उनकी बच्ची आगे पढ़े। वह जितना पढ़ चुकी है, उतना पर्याप्त है।

मैं समझ गया कि पिता को अलग तरीक़े से समझाना पड़ेगा। इसके लिए कक्षा में सामूहिक रूप से छोटी-छोटी गतिविधियाँ आयोजित करनी शुरू कीं। मैंने पाया कि रज़िया कक्षा की होशियार छात्राओं में से एक है। यह भी जानता था कि इन गतिविधियों में वह बहुत अच्छा करेगी। हमने गाँव के लोगों से अनुरोध किया कि वे इस बच्ची की शिक्षा जारी रखने के लिए सहयोग करें। गतिविधियों में रज़िया का प्रदर्शन अच्छा रहने पर अन्य अभिभावकों के साथ उनके पिता को बुलाकर सम्मानित करेंगे। योजना बनाकर विद्यालय में विज्ञान, गणित, चित्रकला, खेल एवं सामान्य ज्ञान की सामूहिक गतिविधियाँ कराईं। रज़िया का प्रदर्शन सभी गतिविधियों में कमाल का रहा। योजना मुताबिक़, विद्यालय में बच्ची के पिताजी को सम्मानित किया गया। यह भी कहा, "आपकी बेटी हमारे गाँव की शान है, वह गाँव का नाम रोशन करेगी। आप उसके बहुत अच्छे पिता हैं।" यह सिलसिला रज़िया की कक्षा 8 पूर्ण होने तक चलता रहा।

कक्षा 8 उत्तीर्ण करने पर मैंने रज़िया के पिताजी से उसके कक्षा 9 में प्रवेश के बारे में कहा। उन्होंने कहा, "मास्टरजी, मैंने विद्यालय आकर देखा कि मेरी बेटी पढ़ने में अच्छी है, पर अब मैं बेटी को आगे नहीं पढ़ाना चाहता।" मैंने पूछा, "आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?" उन्होंने अपनी वही पुरानी धारणाएँ दोहराईं। फिर नरम लहजे में कहा, "मैं अपनी बेटी को ज़्यादा नहीं पढ़ाना चाहता, पढ़ा-लिखा के मुझे क्या करना है। शादी ही तो करनी है। फिर आगे जाएगी तो समाज बहुत ख़राब है, इसलिए उसे बाहर पढ़ने भी नहीं भेजना चाहता। घर पर रहेगी और घर के काम करेगी।"

मैंने फिर से गाँव के कुछ सामाजिक सरोकार रखने वाले व्यक्तियों से रज़िया के एडमिशन के लिए सहायता माँगी। सभी ने रज़िया के पिता को फिर से समझाया। मैं जानता था कि पिता यह भी कह सकते हैं कि मेरे पास आगे पढ़ाने के लिए पैसे नहीं हैं। हमने इसका भी इन्तज़ाम किया। हम उनके घर गए और हमने अपनी स्नेहिल-सी ज़िद उनसे की। बातचीत के बाद रज़िया की मम्मी ने हमारा सहयोग किया। उन्होंने कहा, "सर, आप सब जाइए। मैं रज़िया के पापा को एडमिशन के लिए राज़ी करती हूँ।" उसकी भी बहुत इच्छा थी आगे पढ़ने की। उसने मम्मी से कहा, "माँ, मैं पढ़ना चाहती हूँ, मुझे स्कूल भेजो!" तब उन्होंने कहा, "मैं अपनी बेटी को आगे पढ़ाऊँगी।" अन्त में रज़िया के पिताजी ने मुझे कहा, "मेरे पास आगे पढ़ाने के लिए पैसे नहीं हैं।" उनका इतना कहना था कि मैंने तुरन्त उनके सामने फ़ीस लायक़ रक़म रख दी। उनको उम्मीद नहीं थी कि ऐसा होगा, और वह चुप हो गए।

अगला दिन बड़ा सुखद रहा। हमें बेसब्री से इन्तज़ार था। रज़िया को लेकर मम्मी विद्यालय आईं। हमने उनको फ़ीस दी, और बच्ची का एडमिशन कक्षा 9 में हो गया। जैसी कि उम्मीद थी, रज़िया ने कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। कक्षा 11 में प्रवेश के समय दुबारा दिक़्क़त आई। उसके पिता ने फिर कहा, "सर, अब तो मैं बेटी को बिल्कुल नहीं पढ़ाऊँगा। वह बड़ी हो गई है। उसके साथ कुछ भी ग़लत घटना हो सकती है।" रज़िया के लिए 11वीं में प्रवेश का संघर्ष ज़्यादा रहा। मैंनें गाँव के लोगों के समर्थन से रज़िया के पिता से फिर बात की और कहा, "आपको रज़िया को पढ़ाना होगा। मैं ज़िम्मेदारी लेता हूँ सारी बातों की।" पिता ने कहा, "बच्ची मेरी है। आप मेरी बच्ची के लिए क्यों इतनी ज़िद कर रहे हैं?" मैंने विनम्रता से कहा, "यह बच्ची आपकी नहीं, देश की

बेटी भी है। एक अध्यापक होने के नाते मैं एक ज़िम्मेदार नागरिक देश को देना चाहता हूँ। एक प्रतिभा जो अपने हुनर के दम पर देश के लिए बहुत योगदान कर सकती है, उसे ज़ाया नहीं होने देना चाहता।" परिणाम बहुत सुखद रहा। अगले दिन रज़िया मम्मी को साथ लेकर विद्यालय आई। रज़िया का कक्षा 11 में एडमिशन हो गया।

रज़िया ने कक्षा 12 की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की, और अब वह स्नातक प्रथम वर्ष में अध्ययनरत है।

मेरे मन को यह सवाल बेचैन करता रहता है कि ऐसी न जाने कितनी रज़िया, सीमा, निशा होंगी जो ऐसे हालात की बेड़ियों को काट नहीं पाती होंगी। जिन्हें इस तरह सहयोग नहीं मिल पाता होगा। मैंने तो एक ही रज़िया की पढ़ाई सुनिश्चित की है। काश, देश की सारी लड़कियाँ, लड़के ख़ूब पढ़ सकें!

टिंकू सिंह, सहायक अध्यापक, उच्च प्राथमिक विद्यालय नगला सारंगपुर, ज़िला बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

पीयर लर्निंग से आया मेरी कक्षा में बदलाव

श्रुति वी

एक दोपहर को मैंने अपने विद्यार्थियों को कुछ पढ़ने का काम दिया। मैंने देखा कि विद्यार्थी टेक्स्ट से जूझ रहे थे। मैं सोच में पड़ गई। हालाँकि कुछ विद्यार्थी आसानी से शब्दों को समझ पा रहे थे, लेकिन कुछ झिझक रहे थे। वे टेक्स्ट की पंक्तियों पर उँगली रख-रखकर, वाक्यों को डिकोड करने की कोशिश कर रहे थे। मैं जानती थी कि यह बुद्धिमत्ता का मामला नहीं था। असल में, यह अवसर, सहयोग और आत्मविश्वास का मामला था। पढ़ने के अवसर और सहयोग मिलने से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है जो उनके पढ़ने को आसान बनाता है।

अतः मैंने विद्यार्थियों के साथ एक बेहद सरल, लेकिन असरकारी, प्रक्रिया 'पीयर लर्निंग' पर काम करने का फ़ैसला किया। लेकिन मुझे पता था कि अगर मैंने यह काम ध्यानपूर्वक नहीं किया तो यह चुनौती आ सकती है कि कुछ विद्यार्थी स्वयं को दूसरों से 'कमतर' महसूस करें, और कुछ ख़ुद को 'श्रेष्ठ' समझने लगें। और मैं नहीं चाहती थी कि ऐसा हो। इसलिए इस काम को करते हुए मैं काफ़ी सचेत थी।

सबसे पहले, मैं अपने L3 विद्यार्थियों के साथ बैठी। ये विद्यार्थी अँग्रेज़ी अच्छे से पढ़-लिख सकते थे, और अकादमिक रूप से मज़बूत थे। उन्हें यह बताने की बजाय, कि वे 'होशियार' हैं, मैंने कुछ इस तरह उनसे बातचीत की, "आपके कुछ सहपाठियों को घर पर आपके जैसा सहयोग नहीं मिलता है। सोचो कि अगर किसी चीज़ को समझने के लिए आपको अकेले ही जूझना है, उसमें आपकी मदद करने वाला कोई नहीं है तो यह कितना कठिन होगा! और कभी-कभी, परिवार ही एकमात्र सपोर्ट नहीं होता जिसकी हमें ज़रूरत होती है, दोस्त और भी बेहतर मेंटर हो सकते हैं। क्या आपको ऐसा नहीं लगता?"

मैंने उनके हाव-भाव बदलते देखे। उन्होंने सिर्फ़ दायित्व से ही सिर नहीं हिलाया, वे समझ गए थे। कुछ ने तो यह भी बताया कि कैसे उन्हें भी एक बार मदद की ज़रूरत पड़ी थी। इस संवाद ने जैसे मुझे आगे बढ़ने के लिए हरी झण्डी दे दी थी।

फिर मैंने अपने L1 विद्यार्थियों से बात की जो अँग्रेज़ी में बात करने में झिझकते थे, और ख़ुद को पीछे महसूस करते थे। मैंने उन्हें सच बताया, "आप सभी एक ही उम्र के हैं। आप सभी की सीखने की क्षमता भी एक जैसी है। बस, आप में से कुछ ने ज़्यादा अभ्यास किया है। आप भी बाक़ी लोगों की तरह ही सुबह उठते हैं, खाते हैं, खेलते हैं, और हँसते हैं। आप अपनी क्षमताओं के कारण पीछे नहीं हैं, आपको बस थोड़ी-सी मदद चाहिए। और हम यह सुनिश्चित करेंगे कि आपको यह मदद मिले।"

मैंने विद्यार्थियों को सुना भी। कुछ विद्यार्थियों ने माना कि उन्हें अकेले पढ़ना पसन्द नहीं है। दूसरों ने कहा कि उन्हें शिक्षकों द्वारा अनदेखा किया जाता है। कुछ ने क़बूल किया कि उनके माता-पिता उनके विद्यालय के काम में उनकी मदद नहीं कर सकते। उनकी ईमानदारी ने इस बात को और पुख़्ता किया कि इस योजना पर काम करने की ज़रूरत क्यों है।

हर सोमवार, सर्कल टाइम के दौरान, हम बातचीत करते थे—न केवल पढ़ाई के बारे में, बल्कि टीम वर्क, पढ़ाई-लिखाई में उनके संघर्ष और प्रगति के बारे में भी। यह एक ऐसा स्थान बन गया जहाँ विद्यार्थी अपने विचार साझा करने में सुरक्षित महसूस करते थे। जब पढ़ने की बात आई तो मैंने L1 और L3 विद्यार्थियों को एक साथ रखा। लेकिन एक बदलाव के साथ—L1 विद्यार्थियों को पहले पढ़ना था, और जो उन्होंने समझा था उसे समझाना था, जबकि L3 विद्यार्थी सुनते थे। फिर L3 विद्यार्थी, L1 विद्यार्थियों को जहाँ-जहाँ समझने में दिक़्क़त होती थी उस रिक्तता को पूरा करने में उनकी मदद करते थे। यह एकतरफ़ा पठन नहीं था, बल्कि एक आदान-प्रदान था। एक दिन, जब एक L1 विद्यार्थी कक्षा में ज़ोर से बोलकर पढ़ रहा था तो वह एक शब्द को लेकर झिझक रहा था, क्योंकि वह

इस शब्द के उच्चारण को लेकर असमंजस में था। इससे पहले कि मैं बीच में बोल पाती, उसके पास ही बैठे एक L3 विद्यार्थी ने उसकी मदद करने के लिए उस शब्द का सही उच्चारण उसे धीरे से बता दिया। L1 विद्यार्थी ने इस बार आत्मविश्वास के साथ इसे दोहराया, और पढ़ना जारी रखा। इस क्षण मुझे एहसास हुआ कि विद्यार्थी अब महज़ निर्देशों का पालन नहीं कर रहे थे, वे स्वाभाविक रूप से एक दूसरे की मदद कर रहे थे।

कुछ ही दिनों में एक अनोखी-सी बात हुई। L1 विद्यार्थियों ने झिझकना बन्द कर दिया। वे ज़्यादा मुखर होने लगे, ज़्यादा पढ़ने लगे, और बिना किसी झिझक के मदद भी माँगने लगे। और L3 विद्यार्थी धैर्यपूर्वक सुनने लगे, तथा अवधारणाओं को छोटी अवधारणाओं में विभाजित कर समझाना सीख गए।

बेशक, यह सब सहज नहीं था। कुछ विद्यार्थियों में श्रेष्ठता या हीनता की भावना विकसित हुई। कुछ L3 विद्यार्थियों ने अन्य विद्यार्थियों पर रौब जमाना शुरू कर दिया, जबकि कुछ L1 विद्यार्थियों ने 'कम सक्षम' महसूस करते हुए ख़ुद को अलग कर लिया।

इसके समाधान के लिए, मैंने इन कम सक्षम विद्यार्थियों को L2 विद्यार्थियों के साथ जोड़ा। ये श्रेष्ठ तो नहीं थे, लेकिन L1 विद्यार्थियों की मदद कर सकते थे, और अन्तर को पाट सकते थे। इस सन्तुलन से बेहतर परिणाम मिले। जिन शरारती विद्यार्थियों ने सहयोग करने से इन्कार किया, उनके लिए मैंने व्यक्तिगत रूप से क़दम उठाया। मैं उनके साथ तब तक काम करती रही जब तक कि वे पूरे समूह में ठीक से शामिल नहीं हो गए। कई सप्ताह बीत गए, अब बदलाव को नकारा नहीं जा सकता था। L1 विद्यार्थी अब बोलने से नहीं डरते थे। L3 विद्यार्थी ज़्यादा सहानुभूतिपूर्ण हो गए। विद्यार्थियों के बीच की दूरी मिटने लगी, और उनमें दोस्ती हो गई।

एक दिन, एक सत्र में मैंने देखा कि एक L1 विद्यार्थी एक शब्द पर झिझक रहा था। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाती, उसके L3 पार्टनर ने मुस्कुराते हुए कहा, "कोई बात नहीं, अपना समय लो। मैं भी इससे जूझता था।" तब मुझे पता चला कि अब यह सिर्फ़ पढ़ाई-लिखाई के बारे में ही नहीं था। यह विश्वास, मदद और आत्मविश्वास के बारे में था। पीयर लर्निंग से भाषा कौशल में सुधार से कहीं ज़्यादा हुआ। इसने एक ऐसी कक्षा बनाई जहाँ कोई भी अकेला महसूस नहीं करता।

श्रुति वी, शिक्षिका, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, ज़िला कलबुर्गी, कर्नाटक

"मिल-जुलकर बनाते हैं बेहतर विद्यालय" : ममता जैन

मोहम्मद तसलीम

चित्र 1 : सुबह की सभा में खेल भी शामिल हैं

मध्य प्रदेश के खरगोन ज़िले में एक विद्यालय है ईजीएस बेड़ीपुरा। यहाँ की प्रधानाध्यापिका ममता जैन ने विद्यालय में आने वाले हर विद्यार्थी के साथ, उनके अभिभावकों के साथ एक सुन्दर रिश्ता क़ायम किया है जिसके चलते वो विद्यालय को बेहतर बना पाई हैं। विद्यालय में 125 विद्यार्थी हैं, और लगभग सभी विद्यार्थियों की उपस्थिति नियमित रहती है। 2006 से वे इस विद्यालय में हैं। बहुत सारे उतार-चढ़ाव से गुज़रते हुए साथी शिक्षकों का, समुदाय का भरोसा हासिल करते हुए विद्यार्थियों के आनन्द और सीखने को सुनिश्चित करना उनका मुख्य उद्देश्य है। विद्यालय को बेहतर बनाने में किस तरह की योजनाएँ काम आती हैं; कैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा; विद्यार्थियों का सीखने का स्तर कैसा है; आदि सवालों पर ममता जैन से बात की अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथी तसलीम ने। प्रस्तुत हैं बातचीत के कुछ अंश :

ममता जैन

तसलीम : आप शिक्षण की प्रक्रिया में विद्यालय के वातावरण को अहम मानती हैं। इसे बेहतर बनाने के लिए अपने विद्यालय में क्या प्रयास किए हैं?

ममता : सकारात्मक, प्रेरक और सहयोगी वातावरण विद्यार्थियों को सीखने के लिए उत्साहित करता है। विद्यालय का माहौल तभी आबाद होता है जब उसे सँवारने में शिक्षकों के प्रयास, विद्यार्थियों की सक्रियता और समुदाय की भागीदारी हो।

विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में हमारे प्रयास सिर्फ़ किताबों तक सीमित नहीं हैं। हम टीएलएम, खेल, पुस्तकालय और दूसरे अनुभव-आधारित तरीक़ों से विद्यार्थियों को सीखने से जोड़ते हैं। रोज़ाना 40-45 मिनट की मॉर्निंग असेम्बली में कहानी, कविता, पहेलियाँ, सामान्य ज्ञान, योग अभ्यास और शारीरिक क्रियाएँ करवाई जाती हैं जो विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास में सहायक होती हैं। महत्त्वपूर्ण दिनों व स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक मौक़ों पर विद्यार्थियों से सम्बन्धित विषयों पर बात रखना व लेखन करवाया जाता है जिससे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता और आत्मविश्वास बढ़ता है।

तसलीम : क्या आप इसके लिए विद्यार्थियों के अभिभावकों से भी बात करती हैं, उन्हें भी इस प्रक्रिया में शामिल करती हैं?

ममता : हाँ, अभिभावकों के साथ नियमित संवाद को अपने काम का ज़रूरी हिस्सा मानती हूँ। मेरी कोशिश होती है कि हर अभिभावक विद्यार्थी की शिक्षा में भागीदार बने। जब वे विद्यालय आते हैं तब उनसे विद्यार्थियों की प्रगति, व्यवहार और रुचियों पर चर्चा करती हूँ। इससे विद्यार्थियों की ज़रूरतों को समझने में मदद मिलती है, और पढ़ाने की दिशा भी साफ़ होती है।

यह भी देखती हूँ कि जब अभिभावकों को अनुभव होता है कि विद्यालय उनके बच्चे के हर तरह के विकास के लिए गम्भीर है, वे मदद करने ख़ुद ही आगे आते हैं। वे विद्यालय की गतिविधियों, स्वच्छता अभियान, बाल सभा या उत्सवों के आयोजन में उत्साह से भाग लेते हैं। इससे विद्यालय और समुदाय के बीच भरोसे एवं सहभागिता का एक मज़बूत पुल बनता है।

तसलीम : आपने वातावरण निर्माण में मॉर्निंग असेम्बली का ज़िक्र किया है। इसके उद्देश्य और विद्यालय की गतिविधियों के बारे में थोड़ा विस्तार से बताइए।

ममता : मॉर्निंग असेम्बली वह समय है जहाँ सीखना और आनन्द साथ-साथ चलते हैं। जहाँ बड़े समूह में विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के मौक़े मिलते हैं। असेम्बली की गतिविधियों से विद्यार्थियों की उपस्थिति और सीखने के प्रति रुचि में उल्लेखनीय बदलाव आया है। अब विद्यार्थी विद्यालय जल्दी पहुँचने की कोशिश करते हैं, उन्हें जिज्ञासा रहती है कि आज सभा में क्या नया होगा! हालाँकि हर बार कुछ नया करवाना चुनौतीपूर्ण होता है।

सभा की शुरुआत पाठ्यपुस्तकों की कविताओं और कहानियों से करते हैं। विद्यार्थी ख़ुद से लिखी या कही-सुनी कविता, कहानियाँ, पहेलियाँ भी सुनाते हैं। फिर हिन्दी, अँग्रेज़ी और संस्कृत में वस्तुओं के नाम, महीनों के नाम, पर्यायवाची शब्द, संख्याओं और पहेलियों, आदि पर रोचक गतिविधियाँ कराते हैं। जो विद्यार्थी कक्षा में अपनी बात रखने में कभी-कभी संकोच या असमर्थता महसूस करते हैं, वे यहाँ सहज रूप से बोलने-बतियाने में आत्मविश्वासी बनते हैं। प्रयास रहता है कि सभी विद्यार्थी किसी-न-किसी गतिविधि में ज़रूर प्रतिभाग करें।

तसलीम : प्रिंट-रिच वातावरण का अर्थ अकसर कक्षा की दीवारों का पठन सामग्री से सजा-सँवरा हुआ होना मान लिया जाता है। लेकिन आपके विद्यालय में बात थोड़ी आगे जाती हुई दिखती है। ज़रा बताइए कि किस तरह प्रिंट-रिच वातावरण विद्यार्थियों के सीखने में मददगार हो रहा है?

ममता : आपने ठीक सवाल किया। शुरू के दिनों में मुझे भी लगता था कि प्रिंट-रिच वातावरण का अर्थ है पठन सामग्री से सजी दीवारें। लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि सुन्दर सज्जा से ज़्यादा ज़रूरी है उपयोगिता। ऐसी सामग्री जो विद्यार्थियों की पहुँच में हो, उस पर वे बात कर सकें, अपने खेलों का हिस्सा बना सकें, शिक्षक पाठ पढ़ाते हुए उस सामग्री का उपयोग कर सकें और नई सामग्री का निर्माण कर सकें। प्रिंट-रिच वातावरण को बनाने में विद्यार्थियों को शामिल करना काफ़ी फ़ायदेमन्द रहा। हमारी कक्षाओं में अधिकांश सामग्री विद्यार्थियों के द्वारा बनाई हुई ही होती है। शब्द-जाल, चित्र पोस्टर, कविता-पंक्तियाँ, गणितीय सूत्र, पहेलियाँ, आदि जैसी कुछ सामग्री शिक्षक भी बनाते हैं। इनमें समय-समय पर अधिगम प्रतिफल की ज़रूरत के हिसाब से बदलाव भी किया जाता है। जब विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक की किसी कविता-कहानी को दीवार पर पढ़ते हैं तब उन्हें अलग तरह की ख़ुशी मिलती है। वे उसे जल्दी याद कर लेते हैं, और ज़ोर-ज़ोर से एक दूसरे को गाते-सुनाते एवं अभिनय करते हैं।

तसलीम : विद्यालय में रीडिंग कॉर्नर भाषा-समृद्ध वातावरण का ज़रूरी हिस्सा है। आपके विद्यालय में इनका इस्तेमाल किस तरह होता है?

ममता : विद्यालय में सभी कक्षाओं के भाषा स्तर के अनुरूप कविता, कहानी एवं अन्य विधाओं की किताबें रीडिंग कॉर्नर में हैं। इनका इस्तेमाल विद्यार्थियों की स्वेच्छा से पढ़ने की आदत बनाने के लिए किया जाता है। यहाँ लंच के बाद या ख़ाली समय में विद्यार्थी अपनी इच्छा से पुस्तकें पढ़ते हैं, और आपस में उन पर चर्चा करते हैं। जिन विद्यार्थियों में अभी पठन कौशल विकसित हो रहा है, वे चित्रों को देखकर कथानक की रचना करते हैं। इससे उनकी कल्पनाशक्ति और मौखिक अभिव्यक्ति मज़बूत होती है। जैसे, कक्षा दो की छात्रा रूबिया किताबों में छपे चित्रों के अनुभव और कल्पनाओं के आधार पर दिलचस्प कहानियाँ सुनाती है।

इसके अलावा पठन को विद्यार्थियों के जीवन से जोड़ने के लिए एक नई पहल शुरू की गई। विद्यार्थियों को उनके जन्मदिन पर उपहार में किताबें दी जाती हैं। मक़सद है, विद्यार्थी पुस्तकें पढ़ें, उनसे जुड़ें, उन्हें अन्य साथियों से साझा करें। इस पहल से व्यक्तिगत व स्वतंत्र पढ़ने का माहौल बन रहा है।

तसलीम : ममताजी, आप प्रधान पाठक (प्रधान अध्यापिका) हैं, और कक्षा की ज़िम्मेदारी भी है। इन सबमें कैसे तालमेल बनाती हैं?

ममता : दोनों भूमिकाओं के बीच सन्तुलन बनाना चुनौतीपूर्ण तो है, लेकिन व्यवस्थित योजना और सभी के सहयोग से इसे ठीक से निभाने का प्रयास करती हूँ। शैक्षणिक कार्य को ज़्यादा तवज्जो देती हूँ, और जो विभागीय काम बहुत ज़रूरी नहीं हैं उन्हें विद्यालय समय से पहले, दोपहर के अवकाश या छुट्टी के बाद करने की कोशिश करती हूँ।

साथ ही, स्टाफ़ की मदद से मिल-जुलकर काम करने की योजना बनाई है। जब मुझे किसी विशेष कार्य के लिए कक्षा से जाना पड़ता है तब सहयोगी शिक्षक विद्यार्थियों के साथ बातचीत-आधारित गतिविधियाँ, पठन-पाठन से जुड़ी कहानियाँ या कविताएँ साझा करते हैं। इससे विद्यार्थियों के समय का रचनात्मक उपयोग होता है, और पढ़ने-लिखने का माहौल भी बना रहता है।

मेरा हर सम्भव प्रयास रहता है कि विद्यालय में सहयोगी एवं लचीले वातावरण से विद्यार्थियों के सीखने की निरन्तरता बनी रहे।

तसलीम : शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए क्या प्रयास करती हैं?

ममता : मेरा मानना है सतत् पेशेवर विकास शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाता है। यह विद्यालय में पढ़ने-पढ़ाने की संस्कृति को भी मज़बूत बनाता है। इस मक़सद को पूरा करने के लिए हमें 'अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन' का लगातार सहयोग मिलता है। समय-समय पर होने वाले विषय-आधारित प्रशिक्षण, टीएलएम निर्माण कार्यशालाएँ व बाल-केन्द्रित पढ़ाने के तरीक़ों पर आधारित सत्रों में हम बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। कार्यशालाओं में बनने वाली समझ को अपने स्तर तक सीमित न रखते हुए विद्यालय स्तर पर शिक्षकों के साथ साझा करते हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे एक सामूहिक चिन्तनशील अभ्यास का वातावरण बन रहा है।

मसलन, अँग्रेज़ी भाषा शिक्षण में सुधार हेतु स्टाफ़ के सहयोग से आइसक्रीम स्टिक और अन्य स्थानीय सामग्रियों से शब्द स्मरण (word recall) के लिए शिक्षण सामग्री बनाई। इस प्रकार के नए प्रयास शिक्षकों की सोच व रचनात्मकता को बढ़ाते हैं।

विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षणिक ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए टीएलएम निर्माण भी करते हैं। यह सारी प्रक्रिया हमें ख़ुद से प्रेरित शिक्षार्थी (self-motivated learners) के रूप में विकसित करती है, और एक सहयोगी, नवाचारी एवं संवेदनशील शिक्षक समुदाय बनने की नींव रखती है।

तसलीम : पलायन इस क्षेत्र की बड़ी समस्या है। पलायन-प्रभावित विद्यार्थियों के साथ आप कैसे काम करते हैं?

ममता : हमारे क्षेत्र में मौसमी पलायन, शोषण से उपजी एक गहरी सामाजिक-आर्थिक समस्या है जिसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की शिक्षा पर पड़ता है। हम पलायन-प्रभावित परिवारों की पहचान करते हैं, विद्यार्थियों के अभिभावकों से बात करते रहते हैं, उन्हें विद्यालय की गतिविधियों के बारे में बताते हैं, और विद्यार्थियों के लिए पढ़ना क्यों ज़रूरी है इस बारे में बातचीत करते हैं। साथ ही, उन्हें विद्यार्थियों के शैक्षिक दस्तावेज़ साथ ले जाने का सुझाव देते हैं ताकि वह पलायन में जहाँ भी जाएँ, वहाँ उनके विद्यार्थियों का नामांकन हो सके।

यदि विद्यार्थी सत्र के बीच में चले जाते हैं, हमारी कोशिश रहती है कि उनका विद्यालय से भावनात्मक जुड़ाव बना रहे। इसलिए हम कभी-कभी फ़ोन या मैसेज के द्वारा उनसे या उनके अभिभावकों से सम्पर्क करते हैं। जब ये विद्यार्थी वापस लौटते हैं तब तुरन्त उनके अभिभावकों से मिलकर उनका नामांकन अपने विद्यालय में करते हैं, और उनकी छूटी हुई पढ़ाई को पूरा करने की कोशिश करते हैं।

तसलीम : आज आपका विद्यालय काफ़ी बेहतर है। विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से लेकर विद्यालय के रखरखाव के नज़रिए तक। यहाँ तक पहुँचने में किस तरह की चुनौतियाँ आईं?

ममता : चुनौतियाँ तो बहुत थीं। ऐसा नहीं है कि अब सारी चुनौतियाँ ख़त्म हो गई हैं। लेकिन काफ़ी हद तक हम कुछ काम कर सके हैं। शुरुआत में समुदाय का भरोसा जीतना बड़ी चुनौती थी। विद्यालय की स्थिति भी अच्छी नहीं थी। चहारदीवारी नहीं थी, दीवारों का रंग-रोगन, विद्यार्थियों के लिए अन्य व्यवस्थाएँ, आदि नहीं थीं। गाँव के कुछ नासमझ लोग विद्यालय में आकर तोड़-फोड़ करते थे, शौचालय गन्दे करते, पेड़-पौधे नष्ट कर देते थे। अच्छा यह हुआ कि हम सभी शिक्षक माया पटेल, माया रवीन्द्र और दिलीप पटेल यहीं विद्यालय के आस-पास रहते हैं। इससे हमें समुदाय से रिश्ता बनाने और उनका भरोसा हासिल करने में मदद मिली। जो लोग पहले विद्यालय को नुक़सान पहुँचाते थे, आज वो हमारा साथ देते हैं। मेरा मानना है कि अगर हम अच्छे मन और गहरे सामाजिक सरोकार से कोई काम करना चाहते हैं तो रास्ते निकल ही आते हैं।

मोहम्मद तसलीम विगत 10 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन खरगोन, मध्य प्रदेश में कार्यरत हैं। वे फ़ैलोशिप प्रोग्राम के ज़रिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हैं। इससे पहले उन्होंने मीडिया एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य किया है। प्राथमिक विद्यालय में विद्यार्थियों के साथ पर्यावरण विषय पर कार्य करने के साथ अन्य विषयों को सीखने एवं समझने का प्रयास कर रहे हैं।

सम्पर्क : mohd.shaikh@azimpremjifoundation.org

मेरा नाम गुलाब है

समीक्षा : ध्रुव देसाई

मेरा नाम गुलाब है एक ऐसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक है जिसे हम अपनी कक्षाओं में सभी बच्चों (और वयस्क पाठकों के लिए भी) के लिए ला सकते हैं। इसमें हाथ से मैला ढोने या मैनुअल स्कैवेंजिंग के मुद्दे पर बात की गई है। भारत में यह एक ऐसी अवैध प्रथा है जो अभी भी व्यापक रूप से प्रचलित है, और जाति भेदभाव व अस्पृश्यता के मुद्दों से जुड़ी हुई है।

यह पुस्तक इसी गम्भीर मुद्दे पर बारीक़ी से नज़र डालती है, लेकिन समानुभूति के साथ। गुलाब के पिता एक मैनुअल सफ़ाई कर्मचारी हैं (जो हाथों से नालियों और गटरों को साफ़ करते हैं), और गुलाब को इस बात से सख़्त नफ़रत है कि उन्हें यह काम करना पड़ता है। उसके मन में इस बात को लेकर बेहद ग़ुस्सा है। ऊपर से उसकी कक्षा के शरारती बच्चे उसे इस बात के लिए तंग भी करते हैं। इसलिए वह फ़ैसला करती है कि वह इस समस्या को हल करने की पूरी कोशिश करेगी। वह अपने पिता से उनके काम के बारे में पूछती है, और वे बड़े धैर्य व ईमानदारी के साथ जवाब देते हैं। पिता के जवाब उसकी आँखें खोलने के साथ-साथ उसका दिल भी तोड़ देते हैं। पुस्तक का यह हिस्सा बख़ूबी लिखा गया है।

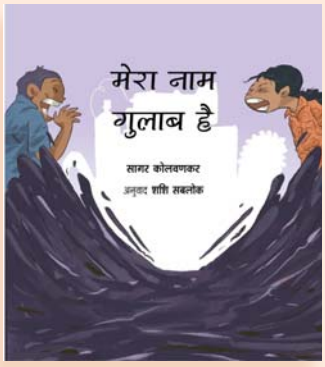

लेखक और चित्रकार : सागर कोलवणकर
अनुवाद : शशि सबलोक
आयु वर्ग : 6-16 वर्ष
पृष्ठ संख्या : 32
भाषाएँ : हिन्दी, अँग्रेज़ी, कन्नड़
प्रकाशक : तूलिका पब्लिशर्स, चेन्नई

इस पुस्तक को देखकर लोगों को लग सकता है कि क्या यह बच्चों के लिए उपयुक्त है। अकसर बड़े यह मानते हैं कि बच्चों में ऐसी जटिल समस्याओं को समझने की क्षमता नहीं होती। इस पुस्तक के लेखक सागर कोलवणकर ने एक साक्षात्कार में कहा :

"मैंने बच्चों को समाज के गम्भीर मुद्दों के बारे में अपने माता-पिता से सवाल पूछते हुए देखा है। माता-पिता जो जवाब देते हैं, उससे उन्हें समस्या को समझने में मदद मिलती है। यदि माता-पिता झूठ बोलते हैं तो बच्चा उस झूठ पर विश्वास करेगा। यदि वे कुछ छिपाते हैं तो बच्चा इस मुद्दे से अनजाना रह जाएगा। दूसरी ओर, यदि हम उन्हें जागरूक करते हैं तो यह ज्ञान समानुभूति को जन्म देगा जो युवा मन में निष्पक्षता और न्याय की भावना पैदा करने की दिशा में पहला क़दम है।"

(https://tulikapublishers.blogspot.com/2021/08/my-name-is-gulab-interview-with-author.html)

कुछ लोग यह भी मानते हैं कि बच्चे बेहद मासूम होते हैं और उनके दिमाग़ में असमानता के बारे में कोई विचार नहीं होता है। इसलिए वे तर्क देते हैं कि अगर हम बच्चों को ऐसी पुस्तकें पढ़ने के लिए देंगे तो इसका मतलब यह होगा कि हम उनके मन में इस प्रकार के नकारात्मक विचार और दृष्टिकोण पैदा कर रहे हैं। ऐसे लोगों के लिए मेरा जवाब यह है कि बच्चे भी तो उसी दुनिया में रहते हैं जिसमें हम रहते हैं, और जैसा कि हर शिक्षक जानता है, बच्चों की क्षमता को कम करके नहीं आँका जा सकता; उनकी अवलोकन शक्ति तेज़ होती है जो लगातार विकसित होती रहती है। बच्चे अपने आस-पास के वातावरण में इन चीज़ों को देखते रहते हैं; वे सीवर, गटर और कचरे के बारे में भी जानते हैं तथा इसके बारे में सोचते भी हैं। यदि कुछ अति सुविधा सम्पन्न बच्चों को इन चीज़ों के बारे में कभी सोचना तक नहीं पड़ा है तो हमारी ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है, क्योंकि तब हमें उनसे इस बारे में बातचीत करनी होगी ताकि उन्हें समानुभूति और करुणा के साथ विकसित होने में मदद मिल सके।

अपने बच्चों के साथ इस तरह की पुस्तकें पढ़ने का मतलब है उनके साथ ऐसी महत्त्वपूर्ण बातचीत की शुरुआत करना जो उनकी शिक्षा का ज़रूरी हिस्सा है।

जब मैंने अपने बच्चों के साथ तीसरी, चौथी और पाँचवीं कक्षा में यह पुस्तक पढ़ी तो वे इस कहानी और सुन्दर व विचारोत्तेजक चित्रों से बेहद प्रभावित हुए। उन सभी ने कई सवाल पूछे। फिर हमने अपने घरों में कूड़े-कचरे के निपटान के तरीक़ों के बारे में चर्चा की,

और बच्चों ने घर जाकर अपने माता-पिता व बड़े भाई-बहनों से सवाल पूछे। हमने एक कला प्रोजेक्ट का आयोजन भी किया जिसमें बच्चों ने कूड़े-कचरे के निपटान की समस्या के लिए अपने 'समाधानों' के चित्र बनाए। इसमें हमें कुछ अद्भुत 'आविष्कार' भी देखने को मिले, जैसे कि एक ऐसी मशीन जो मानव अपशिष्ट (मल) को हीरे में बदल देती है और दूसरी, जो शौचालय के मल को सीधे खेतों (भूमि के अन्दर) में डाल देती है।

कक्षा की एक छात्रा को कहानी में पढ़ी शरारती बच्चों की बदमाशी बिल्कुल अच्छी नहीं लगी, और उसने एक छोटा-सा नाटक तैयार किया। इसमें उसने मुख्य पात्र, गुलाब, को उन शरारती बच्चों को 'सबक़ सिखाते हुए' दिखाया। इन सभी चर्चाओं और गतिविधियों से मुझे, एक शिक्षक के रूप में, अपनी कक्षा की ऐसी कुछ गतिविधियों को समझने में मदद मिली जिनके बारे में मुझे पहले पता नहीं था। बच्चों ने साझा किया कि वे भी कहानी की तरह तो नहीं, लेकिन हाँ, कुछ अलग तरीक़े से, अनजाने में जाति-आधारित भेदभाव कर रहे थे। इससे हमें एक विद्यालय के रूप में इस मुद्दे पर काम शुरू करने में मदद मिली। इस कहानी का भाव यद्यपि पूरी तरह से सकारात्मक है, लेकिन लेखक किसी जादुई 'उत्तम समाधान' की पेशकश नहीं करता। गुलाब के माता-पिता चुपचाप यह दर्शाते हैं कि समस्या सिर्फ़ उपकरणों और मशीनरी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों के दिमाग़ में बसी हुई है।

कहानी के अन्त में भी वही शरारती बच्चे अभी भी गुलाब को चिढ़ा रहे थे। हमें बार-बार याद दिलाया जाता है कि अपने अच्छे इरादों और प्रयासों के बावजूद, परिवर्तन के लिए बहुत काम करना होगा, और हमें ऐसे लोग मिलते ही रहेंगे जो इसका विरोध करेंगे और असमानता को बढ़ावा देंगे। मेरा मानना है कि यही बात इस पुस्तक की ताक़त है क्योंकि यह हमें कोई काल्पनिक परी कथा नहीं बताती, बल्कि वास्तविकता को सामने रखती है और बेहतर भविष्य की आशा पर आधारित है।

ध्रुव देसाई अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में शिक्षक-शिक्षा टीम के सदस्य हैं। वे अपना अधिकांश समय या तो खेलने और शारीरिक शिक्षा के बारे में सोचने में बिताते हैं, या फिर बच्चों के साहित्य को पढ़ने और उसके बारे में सोचने में।

सम्पर्क : dhruva.desai13@apu.edu.in

राजा की मूँछें

समीक्षा : जय शंकर चौबे

राजा की मूँछें किताब आशा नेहेमिया द्वारा लिखी गई कहानी 'The Raja's Moustache' का हिन्दी अनुवाद है। चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित यह कहानी की किताब एक ऐसे राजा के बारे है जिसे अपनी मूँछों पर बहुत गर्व है। उसकी मूँछें इतनी अनोखी और बड़ी होती हैं कि वह चाहता है कि राज्य में हर कोई उसकी मूँछों की तारीफ़ करे। राजा का अहंकार और मूँछों को लेकर उसकी विचित्र सोच पूरे राज्य के लिए परेशानी बन जाती है।

कहानी में हास्य और व्यंग्य का अद्भुत मिश्रण इस कहानी को ख़ास बनाता है। कहानी का नाम पढ़ते ही मन में एक कौतूहल पैदा होने लगता है। जब इस कहानी को कक्षा 4 व 5 के बच्चों को पढ़कर सुनाया तब उन्हें कहानी में मूँछ को गोल और ऐंठदार बनाने की तरक़ीब में बहुत मज़ा आया।

कहानी पर बच्चों से बातचीत करने से उनमें उत्सुकता और सोचने के अवसर बनते हैं। बातचीत के लिए पहले से कुछ सवाल सोचना पड़ते हैं, कुछ सवाल बातचीत के दौरान भी ख़्याल में आते हैं। मिसाल के तौर पर, राजा ने अपनी मूँछें गोल-गोल और ऐंठी हुई रखने के लिए क्या-क्या उपाय किए; क्या आपने किसी को अपनी चीज़ों पर इतराते हुए या दिखावा करते हुए देखा है; यदि आप मंत्री होते तब राजा को क्या सुझाव देते; या राजा होते तो अपने राज्य में क्या-क्या करना चाहते और राजा को अपनी मूँछों से इतना लगाव क्यों था, आदि।

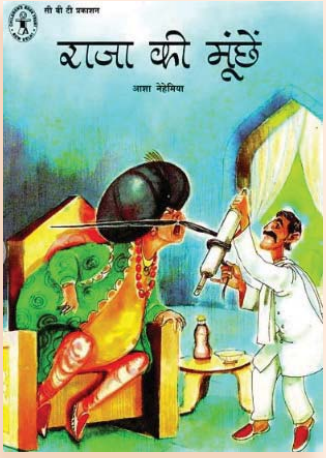

लेखिका : आशा नेहेमिया
चित्रांकन : बी जी वर्मा
अनुवाद : महेन्द्र यादव
भाषा : हिन्दी व अँग्रेज़ी में उपलब्ध
प्रकाशक : चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट

बातचीत के अलावा, बच्चों को इस कहानी के आधार पर रोल प्ले करने में मज़ा आता है। रोल प्ले में एक बच्चा आत्ममुग्ध राजा बने और दूसरा बच्चा मंत्री बनकर राजा को उपाय सुझाए या उचित तर्क देकर समझाए। एक अन्य गतिविधि करते समय, हमने कक्षा में सभी बच्चों को छोटी-छोटी पर्चियाँ बाँट दीं। उस पर्ची पर उन्हें अपने बारे में, जिस चीज़ पर उन्हें गर्व है उस पर, एक वाक्य लिखने को कहा। फिर इन पर्चियों को आपस में बदलने को कहा। अब बच्चों को अपने साथी की एक विशेषता लिखने को कहा। इसके अलावा, रचनात्मक लेखन या क्रिएटिव राइटिंग के लिए टॉपिक दिया जा सकता है। जैसे– अगर मैं राजा होता या रानी होती

तब अपनी महानता साबित करने के लिए क्या करता / करती? इसके बाद लिखे हुए को पढ़कर सुनाना, उस पर चर्चा करना, आदि कामों में बच्चे मज़े लेते हैं। ऐसी गतिविधियों में बच्चों को सोचना भी पड़ता है।

बच्चों को यह कहानी इसलिए पसन्द आती है क्योंकि इसमें कई दिलचस्प और हास्यास्पद घटनाएँ होती हैं। ये घटनाएँ बच्चों को गुदगुदाती हैं, उन्हें आकर्षित करती हैं। कहानी के अन्त में एक ऐसे पात्र का प्रवेश होता है जिसकी सहज बुद्धि व व्यवहार से एक सुखद स्थिति पैदा होती है। कहानी में महत्त्वपूर्ण बात यह भी देखने को मिलती है कि अहंकार, घमण्ड और अति-आत्मप्रशंसा अपने आस-पास या ख़ुद में कैसी व्यग्रता और अकुलाहट पैदा करती है।

कहानी में लेखिका ने सरल भाषा और आस-पास इस्तेमाल होने वाले शब्दों का प्रयोग किया है ताकि बच्चे आसानी से कहानी को समझ सकें, और उसका आनन्द ले सकें। इसका श्रेय बहुत कुछ अनुवादक को भी जाता है। लेखन शैली इतनी रोचक है कि बच्चे इसे बार-बार पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं। उदाहरण के लिए, "नाई तीन दिन और तीन रात लगातार पूरी कोशिश करता रहा। उसने बालों को आकार देने वाला ख़ास तेल उन पर मला। घुमावदार बना देने वाला ख़ास पाउडर भी लगाया...।"

किताब के रंगीन और मज़ेदार चित्र बच्चों की कल्पना को कहानी के स्तर पर विस्तार देते हैं। चित्रों के माध्यम से कहानी को समझने और सोचने की दृष्टि में रोचकता आ जाती है।

राजा की मूँछें एक मनोरंजक बाल कहानी है। यह बच्चों को न केवल हँसने का मौक़ा देती है, बल्कि उन्हें अनकहे रूप में जीवन के महत्त्वपूर्ण सबक की ओर इशारा करती है। आत्ममुग्धता और अहंकार की वजह से कितनी परेशानियाँ आती हैं, किताब इस ओर पाठकों का ध्यान खींचती है। ऐसी आत्ममुग्धता की झलक आपको सोशल मीडिया पर विकृत रूप में भरपूर मिल जाएगी। यह कहानी हर उम्र के बच्चों व बड़ों, दोनों के लिए प्रासंगिक लगती है, और हमें अपने वर्तमान में झाँकने, उसे विचारने और सँवारने का भी मौक़ा देती है।

जय शंकर चौबे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन रुद्रपुर, ज़िला ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में विगत 16 वर्षों से हिन्दी के सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में कार्य कर रहे थे। आप व्यंग्य रचना व बाल साहित्य को पढ़ने और बच्चों के साथ बातचीत में दिलचस्पी रखते थे।

संवेदना- इस समीक्षा के लेखक जय शंकर चौबे का पिछले दिनों हृदयाघात के चलते निधन हो गया। पाठशाला *टीम अपने लेखक की स्मृति को नमन करती है।*

आइए, करके देखें

संख्या खेल

इस खेल में, प्रत्येक संख्या किसी एक क्रिया से जुड़ी होती है। उदाहरण के लिए, पहली क्रिया 'कूदना' है, दूसरी 'दौड़ना' है, आदि। शिक्षक को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को यह क्रियाएँ स्पष्ट रूप से समझाएँ और इस बात की जाँच करें कि सभी बच्चे इन्हें समझ गए हैं।

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

आसान स्तर : केवल दो से तीन संख्याओं / क्रियाओं का उपयोग करें। जैसे– कूदना, गोल घेरे में दौड़ना, ताली बजाना, आदि।

खेल शुरू करने के लिए शिक्षक कोई संख्या बोलते हैं, जैसे– 'एक'। इससे जुड़ी क्रिया 'कूदना' है, इसलिए सभी बच्चे कूदना शुरू कर देते हैं।

जब बच्चे खेल से परिचित हो जाते हैं तब शिक्षक संख्याओं को जल्दी-जल्दी बदलकर खेल की गति बढ़ा सकते हैं।

बच्चों को क्रियाओं को सुनने और उन्हें जल्दी से करने के लिए चौकस रहना होगा। साथ ही, उन्हें प्रत्येक संख्या से जुड़ी क्रिया को याद रखने पर भी ध्यान देना होगा।

शिक्षक को चाहिए कि वे उन्हें यह कहकर प्रेरित करते रहें, "आपकी याददाश्त बहुत तेज़ है"; "आप सभी बहुत अच्छी तरह से खेल रहे हैं"; आदि।

कठिन स्तर : गतिविधि को कुछ और जटिल बनाने के लिए शिक्षक अधिक संख्याएँ और क्रियाएँ जोड़ सकते हैं।

वे इस प्रकार की दूसरी क्रियाएँ भी करवा सकते हैं, जैसे– एक घेरा बनाएँ, बैठें, अपने हाथ ऊपर रखें, आदि।

जब शिक्षक किसी बच्चे को ग़लती करते हुए देखते हैं तब वे उसकी ओर ध्यान दिलाने की बजाय पूरी कक्षा से कहलवा सकते हैं, "ध्यान दो, ध्यान दो!"

इस गतिविधि का सुझाव आशा सिंह ने दिया है। वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ़ एजुकेशन की विज़िटिंग फ़ैकल्टी की सदस्य हैं। वे पहले लेडी इरविन कॉलेज, दिल्ली में एसोसिएट प्रोफ़ेसर थीं। उनकी स्थाई रुचि शिक्षकों के लिए शैक्षणिक उपकरण के रूप में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में कला का उपयोग करने और पाठ्यक्रम विकसित करने में रही है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

निर्देशों को बनाना और उनका पालन करना

यह एक मज़ेदार गतिविधि है, जो विद्यार्थियों को सोचने, निर्णय लेने, निर्देश देने और उनका पालन करने के बारे में सिखाती है। इस गतिविधि में एक समय में विद्यार्थियों की दो जोड़ी भाग ले सकती हैं। सभी विद्यार्थियों को यह खेल खेलने का मौक़ा मिलता है। यह गतिविधि दूसरी से पाँचवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए है।

आवश्यक सामग्री : विभिन्न प्रकार के फलों और सब्ज़ियों, जैसे प्याज़, टमाटर, आलू, केला, मूली, गाजर आदि को एक टोकरी में रखें और कपड़े से ढँक दें ताकि बच्चे इन्हें न देख सकें। (आप चाहें तो विद्यालय की रसोई में उपलब्ध किसी अन्य वस्तु का उपयोग भी कर सकते हैं।)

पहले सभी विद्यार्थी एक दूसरे के साथ जोड़े बनाते हैं। फिर खेलने के लिए दो जोड़े सामने आते हैं। एक जोड़ा टोकरी से सब्ज़ी चुनता है और उसे कक्षा के सामने किसी ऐसी जगह रखता है, जहाँ हर कोई देख सके। दूसरी जोड़ी के एक विद्यार्थी की आँखों पर पट्टी बाँध दी जाती है और उसे सब्ज़ी तक पहुँचना होता है। इस विद्यार्थी का साथी उसे निर्देश देता है ताकि वह सब्ज़ी तक पहुँच सके।

अगर आँखों पर पट्टी वाला विद्यार्थी सब्ज़ी तक पहुँच जाता है तो वह सब्ज़ी उठाता है और बिना पट्टी खोले, उसे छूकर, महसूस करके और सूँघकर अनुमान लगाता है कि वह कौन-सी सब्ज़ी है। दूसरी जोड़ी विपरीत निर्देश देकर आँखों पर पट्टी वाले विद्यार्थी को गुमराह करने की कोशिश कर सकती है।

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

मध्यम स्तर

टोकरी में रखी चीज़ों को बदल दें। उसमें डस्टर, मोबाइल कवर, छोटे खिलौने आदि रखें। आँखों पर पट्टी वाले विद्यार्थी का साथी उसे वस्तु खोजने के लिए केवल तीन निर्देश दे सकता है। उदाहरण के लिए, पाँच क़दम आगे बढ़ो, बाएँ मुड़ो और तीन क़दम आगे बढ़ो, झुको और चीज़ को उठाओ।

कठिन स्तर

एक बॉक्स में चाबी का गुच्छा, चॉक, कंकड़, सिक्के जैसी चीज़ें रख दें। अब आँखों पर पट्टी वाले विद्यार्थी को बॉक्स को हिलाकर अनुमान लगाना होगा कि अन्दर क्या है। यहाँ पर भी, आँखों पर पट्टी वाले विद्यार्थी को उसका साथी केवल तीन निर्देश दे सकता है।

इस गतिविधि के ज़रिए बच्चे निर्देश सुनना और यह तय करना सीखते हैं कि उन्हें किन निर्देशों का पालन करना है। वे यह भी सीखते हैं कि दी गई सीमा के भीतर सही निर्देश कैसे दिए जाएँ। वे अपनी इन्द्रियों का उपयोग करके चीज़ों को पहचानना सीखते हैं।

चित्र बनाएँ और देखें!

यह गतिविधि ड्राइंग पर आधारित है। इसके ज़रिए विद्यार्थी कार्यों को टुकड़ों में विभाजित करके उन्हें क्रमबद्ध करना, सोचना, निर्देश देना और उनका पालन करना सीखते हैं। इसे एक विद्यार्थी अपनी कक्षा / समूह के सभी विद्यार्थियों के साथ खेल सकता है। यह गतिविधि दूसरी से पाँचवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए है।

संज्ञानात्मक जटिलता के स्तरों में भिन्नता हो सकती है।

आवश्यक सामग्री : नोटबुक, पेंसिल, इरेज़र / रबड़ और एक काग़ज़ जिस पर कोई चित्र बना हुआ हो।

किसी विद्यार्थी से कहें कि वह अपनी मर्ज़ी से निर्देश देने के लिए आगे आए। अब उसे एक किसी साधारण जानवर / वस्तु / प्राणी का चित्र दें, लेकिन यह चित्र कक्षा के बाक़ी विद्यार्थियों को नहीं दिखना चाहिए। कक्षा के बाक़ी विद्यार्थियों को इस विद्यार्थी / अनुदेशक (instructor) के निर्देशों का पालन करना होगा।

आसान स्तर

निर्देश देने वाला विद्यार्थी (अनुदेशक) कक्षा के अन्य बच्चों को चित्र बनाने के लिए निर्देश देगा। ऐसा करने के लिए उसे चित्र बनाने के चरणों और क्रम को तोड़ना होगा।

उसे कक्षा के सामने खड़े होकर निर्देश देना होगा कि बच्चे इस तरह से चित्र बनाएँ जिसे सिर्फ़ वही, यानी अनुदेशक देख सके। बच्चों को यह नहीं बताना है कि वास्तव में किस चीज़ का चित्र बनाना है। उदाहरण के लिए, यहाँ दिखाए गए बिल्ली के चित्र के लिए अनुदेशक निम्नलिखित निर्देश दे सकता है :

1. एक गोल चेहरा बनाएँ;
2. उसमें दो कान जोड़ें;
3. एक लम्बी पूँछ बनाएँ;
4. दो जोड़े पैर बनाएँ।
5. चेहरे पर मूँछ बनाएँ।

यह सुनिश्चित करें कि अनुदेशक सामान्य रूप से कक्षा को निर्देश दे न कि व्यक्तिगत विद्यार्थियों को।

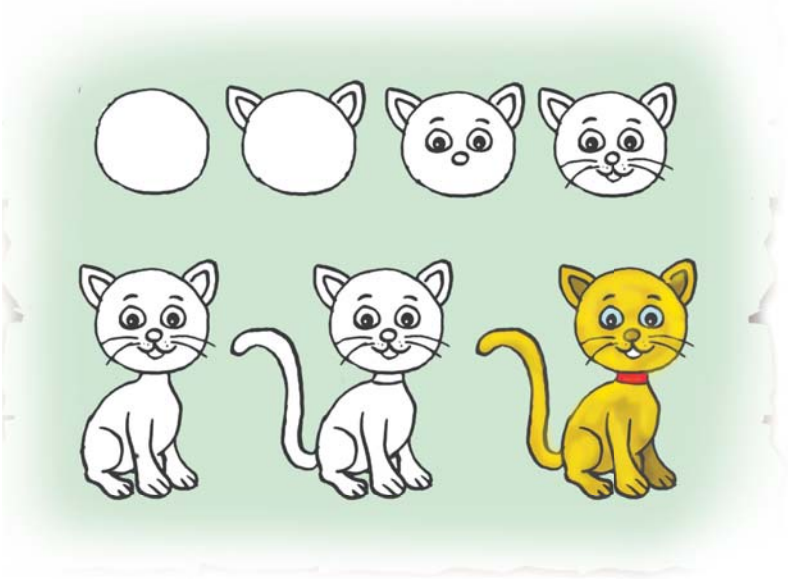

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

कार्य पूरा होने के बाद, बच्चों से कहें कि वे एक दूसरे के चित्र देखें। उन्हें निम्नलिखित पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करें:

1. ये चित्र किस तरह से भिन्न हैं? उदाहरण के लिए, किसी ने लम्बी पूँछ बनाई है तो किसी ने आँखें नहीं बनाई हैं।
2. क्या आपको आकार, माप या स्थिति के मामले में कोई भिन्नता दिखती है? यदि हाँ, तो क्यों? उदाहरण के लिए, किसी ने चेहरे पर ही कान बना दिए हैं।
3. यदि आप अनुदेशक होते तो आप निर्देशों में क्या बदलाव करते?

मध्यम स्तर

जिन बच्चों को पढ़ना आता है, उनको ये निर्देश गड्डमड्ड (jumble) करके दिए जा सकते हैं और फिर उनसे निर्देशों को क्रम में रखने के लिए कहा जा सकता है। इसके बाद, शिक्षक पूछ सकते हैं कि उन्होंने इसे इस तरह से क्रम में क्यों रखा। उदाहरण के लिए, क्या आपको लगता है कि पूँछ को पहले बनाया जा सकता है? क्यों / क्यों नहीं?

कठिन स्तर

कोलम / रंगोली के पैटर्न देकर जटिलता को बढ़ाया जा सकता है। यह गतिविधि विद्यार्थियों की जोड़ी बनाकर भी की जा सकती है। प्रत्येक जोड़ी में एक अनुदेशक और एक उन निर्देशों का पालन करने वाला होगा। लेकिन शर्त यह है कि अनुदेशक को यह नहीं देखना चाहिए कि वह बच्चा क्या बना रहा है। हाँ, इतनी ढील दी जा सकती है कि वह बच्चा अनुदेशक से प्रश्न पूछ सकता है।

इस गतिविधि से बच्चे सुनना, चीज़ों का अवलोकन करना, स्थानिक ज्ञान (आकार, माप, स्थिति) से जुड़ना, अनुक्रम बनाना, जटिल समस्याओं को तोड़ना तथा स्पष्ट निर्देश देना और निर्देशों का पालन करना सीखते हैं, साथ ही सन्देह होने पर प्रश्न पूछकर स्पष्टीकरण प्राप्त करना भी सीखते हैं।

इन दोनों गतिविधियों का सुझाव कृतिका ने दिया है, जो बेंगलूरु की अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में कम्युनिकेशन टीम की सदस्य हैं। कृतिका की कम्प्यूटेशनल थिंकिंग में गहरी रुचि है और उन्होंने तमिलनाडु में एससीईआरटी के साथ राज्य की पाठ्यपुस्तकों पर काम किया है।

सम्पादक के नाम

कक्षा में बच्चों को विज्ञान पढ़कर मज़ा आए

अंक 23 में अमृता मसीह के लेख 'विज्ञान में बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ावा देना' पढ़ा। मैं ख़ुद एक विज्ञान शिक्षक हूँ। मैं कोशिश करता हूँ कि मेरी कक्षा के बच्चों को विज्ञान पढ़कर मज़ा आए, और वे ख़ुद से सीखने-समझने का प्रयास करें। इसे पढ़कर मुझे अपने काम से जुड़ी दो महत्त्वपूर्ण बातें समझ में आईं। पहली, विज्ञान शिक्षक के तौर पर मेरा काम बच्चों को उनके आस-पास मौजूद विज्ञान को समझने-जानने के मौक़े देना है, और दूसरी, बच्चों के मन में सोचने, खोजने, अवलोकन करने और उन पर सवाल करने के कौशल पैदा करना है। मैं इस दिशा में शिक्षण प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के प्रयास करूँगा।

राम दास सिंह दाँगी, माध्यमिक शिक्षक (विज्ञान), एकीकृत शाला बडोदिया नौनगर, खुरई, ज़िला सागर, मध्य प्रदेश

बच्चों के साथ शिक्षकों को भी बाल साहित्य पढ़ना ज़रूरी है

पाठशाला के 23वें अंक में प्रकाशित शोभन सिंह नेगी का लेख 'पिछली कक्षा की सीख से नई कक्षा की तैयारी' पढ़ते समय मुझे अपनी कक्षा के अनुभव ताज़ा हो गए। मैं भी सहमत हूँ कि न सिर्फ़ बच्चों, बल्कि शिक्षकों को भी बाल साहित्य पढ़ना ज़रूरी है। मेरा बच्चों के साथ 12 साल काम का अनुभव कहता है कि विद्यालय में शिक्षक द्वारा बच्चों के साथ बाल साहित्य पढ़ने से बच्चे किताबों की तरफ़ ज़्यादा आकर्षित होते हैं। इससे शिक्षकों को भी बहुत सारी कविता-कहानियों के बारे जानकारी हो जाती है, और उन्हें कक्षा में कार्य करना सुगम हो जाता है।

सुषमा खाखा, नव प्राथमिक विद्यालय सरनाटोली, प्रखण्ड चैनपुर, ज़िला गुमला, झारखण्ड

कक्षा में रोल प्ले के माध्यम से सीखना

आशा सिंह द्वारा लिखे गए इस लेख में, कक्षा में बच्चों को सक्रिय बनाने के लिए दिए गए सुझाव काफ़ी अच्छे हैं। इनसे बच्चों में करके सीखने की योग्यता तो विकसित होती ही है, बच्चे क्रियाशील भी बनते हैं। इस प्रक्रिया के अधिक सहयोगी होने से बच्चों में त्वरित सोच, समस्या-समाधान और सोचने-विचारने के गुण विकसित होते हैं। विद्यार्थियों के साथ रोल प्ले करने से उनमें अवधारणा निर्माण, सहयोग और प्रतिबद्धता के गुणों में वृद्धि होती है। यह सभी कौशल जीवन के लिए बेहद ज़रूरी हैं।

सलोनी गोयल, प्राथमिक विद्यालय पूरनपुर, ज़िला बिजनौर, उत्तर प्रदेश

बच्चों के शुरुआती साल, सीखने-समझने के बेहतर साल

पाठशाला के मार्च 2025 के अंक में अमृता मुरली का लेख 'शुरुआती वर्षों में माता-पिता की भूमिका' अच्छा लगा। बच्चों के जीवन के किसी भी पड़ाव में माता-पिता की अहम भूमिका होती है, और यह भूमिका उनके शुरुआती दिनों में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होती है। इन वर्षों में बच्चे की सीखने-समझने की क्षमता अधिक होती है। इसके लिए 'मक्कळा जागृति' के द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं। आँगनवाड़ी के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए पालकों को अपनी महत्ता को समझना होगा, बैठकों में सक्रियता से भाग लेना होगा, और गतिविधियों द्वारा ऐसे प्रयास करने होंगे जिनसे बच्चे अपने कौशलों का समुचित विकास कर सकें।

पूजा सक्सेना, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, फन्दा ग्रामीण, ज़िला भोपाल, मध्य प्रदेश

शिक्षा में पारम्परिक सोच से परे नए विचारों को बढ़ावा देने की दरकार

पाठशाला के स्तम्भ 'इनसे मिलिए' में विश्वनाथ गुंडीगेरे के साथ राघवेंद्र हेर्ले की बातचीत में विश्वनाथजी कहते हैं, "ज़रूरी है शिक्षक का रचनात्मक होना।" उनके सार्थक प्रयासों से यह समझ बनती है कि विद्यालयों में गतिविधियों का प्रबन्धन बहुत अच्छे तरीक़े से करना चाहिए क्योंकि बच्चे इनसे लाभान्वित होते हैं। शिक्षकों का व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों तरह से रचनात्मक अन्वेषण में संलग्न होना ज़रूरी है। विश्वनाथजी ने पारम्परिक सोच व स्थापित मॉडलों से मुक्त होकर नवाचार करने व बढ़ाने पर ज़्यादा ज़ोर दिया है।

सुनीता, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, ज़िला बीकानेर, राजस्थान

प्रभावी है समर कैम्प का विचार और आयोजन

पाठशाला के 23वें अंक के लेखों में समर कैम्प की महत्ता को दर्शाया गया है। समर कैम्प का विचार और इसके आयोजन बहुत प्रभावी हैं। अभिभावकों को कैम्प के दौरान विद्यालयों में इसके ठोस परिणाम देखने को मिलते हैं। इससे शिक्षकों की आकलन के बारे

में बेहतर समझ बनती है। वार्षिक परीक्षाओं से प्राप्त जो जानकारी हमारे पास होती है, उसका भी हम यहाँ इस्तेमाल कर सकते हैं, और बुनियादी साक्षरता, संख्या ज्ञान, ग्रेड स्तर दक्षता, आदि कार्यों पर इस दौरान ज़्यादा ध्यान दिया जा सकता है। बच्चों में स्वतंत्र रूप से पढ़ने की आदतें बनती हैं। बच्चे बिना परेशान हुए या बिना बोझ लिए समर कैम्प में अपने कार्य करते हैं, ख़ुद में सुधार करते हैं, और सीखने की ओर अग्रसर होते हैं।

कविता गुप्ता, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, ज़िला अलवर, राजस्थान

पहली बार लेख पर प्रतिक्रिया लिखने की पहल

यह पहली बार है जब मैं *पाठशाला* में छपे एक लेख पर लिखकर अपनी प्रतिक्रिया दे रही हूँ। मेरे विचार अंक 23 में प्रकाशित राजू पटेल के लेख 'शिक्षक का नज़रिया : विद्यार्थी का मनोबल और सीखना' के बारे में हैं। ज़्यादातर देखने में आता है कि कक्षा में चुपचाप, सहमा बैठा हुआ बच्चा, विद्यालय, पढ़ाई और कक्षा के अन्य बच्चों से जुड़ नहीं पाता है। वह सिर्फ़ हँसी का पात्र बनकर रह जाता है। ऐसे में, उसके साथ जुड़ना, बातचीत करना, छोटी-छोटी ज़िम्मेदारियाँ देना जैसे कार्य बच्चे की कक्षा में स्वीकृति का रास्ता बनते हैं, और उसका आत्मविश्वास भी बढ़ाते हैं।

शिवानी, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ज़िला ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

ज़रूरी अवधारणाओं पर विशेष कार्ययोजना बनाकर कार्य करें

वार्षिक परीक्षाओं को सन्दर्भ में रखते हुए जगमोहन सिंह कठैत के आलेख 'उत्तर पुस्तिकाओं के अध्ययन से नए शैक्षिक सत्र की तैयारी' से समझ बनी कि यदि शिक्षक को प्रत्येक विषय में अपने विद्यार्थियों के क्षमता स्तर की स्पष्ट समझ हो जाए तो वह शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को उनके स्तर के अनुरूप बेहतर ढंग से तैयार कर सकते हैं। बच्चों द्वारा भी बच्चों की ही उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण किया जा सकता है। समूह में बच्चों को सिखाने में भी बच्चों से सहयोग लिया जा सकता है।

मंजू बगड़िया, अध्यापक, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, ज़िला सीकर, राजस्थान

ज़रूरत है शिक्षकों को स्वयं में आकलन का स्पष्ट दृष्टिकोण बनाने की

कैलाश चन्द्र काण्डपाल के आलेख 'बेहतर सीखने की तैयारी के रूप में आकलन' ने बहुत विस्तार से आकलन को लेकर समझ विकसित की है। नज़रिया यह बना कि बच्चे किस तरह से सीखते हैं, और उनकी संवेदनाएँ किस तरह से परिपक्व होती हैं। सोचने की बात यह भी है कि आकलन की सम्पूर्ण प्रक्रिया महज़ कक्षा प्रक्रियाओं से ही जुड़ी हुई है या उन पर तार्किक चिन्तन भी होना चाहिए। आकलन से सम्बन्धित स्पष्ट दृष्टिकोण सबसे पहले शिक्षकों को अपने अन्दर विकसित करना होगा। यह बात ध्यान में रखना ज़रूरी है कि हर बच्चा सीख सकता है, और सीखना हर बच्चे का अधिकार है।

पूनम भाटिया, प्रधानाध्यापक, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बंबाला, सांगानेर, ज़िला जयपुर, राजस्थान

मक़सद है, माता-पिता को बच्चों के विकास में सक्रिय भागीदार बनाना

पाठशाला के 23वें अंक में अमृता मुरली का लेख 'शुरुआती वर्षों में माता-पिता की भूमिका' पढ़ा। एक आँगनवाड़ी कार्यकर्ता बच्चों और अभिभावकों के बीच के सम्बन्धों की कम होती गरमाहट को किस तरह से सहेजती है, इस सन्दर्भ में माता-पिता के साथ किए गए काम और अनुभवों को बेहद सरल गतिविधियों और सहज बातचीत के साथ लेख में प्रस्तुत किया गया है। मुझे यह लेख मदद करेगा कि एक सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ होने वाले संवाद की प्रक्रिया में प्रभावी केन्द्रीय भूमिका निभा सकूँ, और माता-पिता के बीच जागरूकता बढ़ाकर व व्यावहारिक जुड़ाव के सुझाव देकर उन्हें उनके बच्चों के विकास में सक्रिय भागीदार बनाने में मदद कर सकूँ।

अजय सैनी, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन खुरई, ज़िला सागर, मध्य प्रदेश

सोचें, अच्छी योजनाएँ धरातल पर कितनी लागू हो पाती हैं?

पाठशाला के 23वें अंक में प्रकाशित जगमोहन सिंह कठैत का लेख उपयोगी लगा। वास्तव में, जब परीक्षाओं की शुरुआत हुई होगी तो इसी उद्देश्य से हुई होगी कि विद्यार्थियों में सीखने की कमियों की परखकर उनको दूर किया जा सके। लेकिन धीरे-धीरे परीक्षाओं व शिक्षण कार्य का उद्देश्य भी बच्चों का एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाना मात्र रह गया। अब सतत् और व्यापक मूल्यांकन में उत्तर पुस्तिकाओं में बच्चे के द्वारा कौन-कौन-से सवाल सही किए गए, कौन-से ग़लत, और कौन-से अधूरे सही किए गए, की जानकारी ली जाती है ताकि विद्यार्थियों की इन कमियों को दूर किया जा सके।

अनीता ध्यानी, सहायक अध्यापिका, राजकीय इंटर कॉलेज लखवाड़ कालसी, ज़िला देहरादून, उत्तराखण्ड

बेहतर सीखने की दिशा में आकलन

कैलाश चन्द्र काण्डपाल के लेख में आकलन के कई विषयों पर महत्त्वपूर्ण बातें कही गई हैं। मेरी राय में सीखना शिक्षण प्रक्रिया के केन्द्र में है, इसलिए आकलन का उद्देश्य यह पता लगाना होना चाहिए कि बच्चों द्वारा क्या नहीं सीखा गया, क्यों नहीं सीखा गया, और महत्त्वपूर्ण बात यह कि इसे सीखने-सिखाने के लिए क्या किया जा सकता है। यह तब आसान हो सकता है जब आकलन सीखने के परिणाम को ध्यान में रखकर किया जाए ताकि 'नहीं सीखा गया' को वहीं और तभी सम्बोधित किया जा सके।

दीपा जोस, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, फंदा ग्रामीण, ज़िला भोपाल, मध्य प्रदेश

लेखों की बारिश से बुझती परीक्षाओं के सूखे की प्यास

मार्च के महीने में परीक्षाओं के सूखे में प्यासी पूरी शिक्षा व्यवस्था के लिए *पाठशाला* के मार्च अंक में छपे लेख हमारे लिए रिमझिम बरसते सावन के समान हैं। लेख रूपी यह बूँदें आकलन क्या, क्यों, कैसे, और किसके लिए जैसे आयामों के ज़रिए हमें परीक्षागत प्यास बुझने की तृप्ति देती हैं। कैलाश चन्द्र काण्डपाल का लेख दर्शाता है कि विद्यालयों हो रहे रचनात्मक व योगात्मक आकलन के तरीक़े अपने मूल उद्देश्यों से विचलित हो गए हैं। हमें सीखने के लिए आकलन को कक्षा प्रक्रियाओं से जोड़ते हुए इसे संवेदनापूर्ण और सामाजिक बनाना होगा। यह विचार, कि हर बच्चा सीख सकता है और यह बच्चे का अधिकार है, गाँठ बाँधकर याद रखना चाहिए। जगमोहन सिंह कठैत के लेख से स्पष्टता बनी कि उत्तर पुस्तिकाओं के रचनात्मक विश्लेषण से हम समझ सकते हैं कि बच्चे सबसे ज़्यादा किन अवधारणाओं में पीछे हैं, फिर उन पर विशेष योजना बनाकर शिक्षण कार्य किया जाए। साथ ही, यदि गृहकार्य बच्चों के गृह कार्य से जुड़ा हुआ होगा तो यह बच्चों के सीखने में उत्प्रेरक का कार्य करेगा।

शुभ्रा मिश्रा, सन्दर्भ व्यक्ति, अजीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, टीचर लर्निंग सेंटर, फंदा ग्रामीण, ज़िला भोपाल, मध्य प्रदेश

समर कैम्प : ख़ुशनुमा माहौल में मिल-जुलकर सीखते हैं बच्चे और शिक्षक

शोभन सिंह नेगी के आलेख 'पिछली कक्षा की सीख से नई कक्षा की तैयारी' में वर्णित समर कैम्प के अनुभवों से और अधिक व्यवस्थित रूप से कैम्पों का दस्तावेज़ीकरण करने का नज़रिया मिला। मुनीर के आलेख 'समर कैम्प का विद्यार्थियों के सीखने पर प्रभाव' ने कैम्प में हो रही गतिविधियों का आकलन करने का रास्ता सुझाया। इस समय हम सभी समर कैम्प ही कर रहे हैं। मेरा भी यही अनुभव रहा है कि इन कैम्पों में शिक्षक और बच्चे न केवल उत्साहित होकर जुड़ते हैं, बल्कि अगले सत्र के लिए नई चीज़ें भी सीख पाते हैं।

पारुल बत्रा, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ज़िला भोपाल, मध्य प्रदेश

मेरी नज़र में सभी बच्चे समान महत्त्व के थे

राजू पटेल के आलेख 'शिक्षक का नज़रिया : विद्यार्थी का मनोबल और सीखना' पढ़कर मुझे दो बातों ने उत्साहित किया। एक तो यह कि ''मेरी नज़र में सभी बच्चे समान महत्त्व के थे, और सभी में सीखने-समझने की क्षमता का निर्माण करना मेरा लक्ष्य था क्योंकि कई बार हम शिक्षक अपने पूर्वाग्रह से यह मान लेते हैं कि कुछ बच्चे सीख ही नहीं सकते। दूसरे, हम शिक्षक उन बच्चों पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं जो तुरन्त जवाब दे देते हैं।'' यह ग़लत व्यवहार मैं भी जाने-अनजाने अपनी कक्षा में करती थी। लेख से समझ बनी कि हमारा नज़रिया सभी बच्चों में सीखने के प्रति रुचि पैदा करना होना चाहिए।

कल्पना बंछोर, शासकीय प्राथमिक शाला टाटीबन्ध, संकुल केन्द्र गुड़ियारी, ज़िला रायपुर, छत्तीसगढ़

हर बच्चा अपने-आप में विशेष है

पाठशाला के 23वें अंक में छोटेलाल तँवर का आलेख 'सभी बच्चों को मिलें सीखने के समान अवसर' मुझे अच्छा लगा क्योंकि लेखक ने बच्चे के विद्यालय न आने के कारण में विद्यालय में समावेशी माहौल का न होना बताया है। हमारी धारणाएँ कई बार बच्चों को विद्यालय आने के लिए प्रेरित करने में बाधक बनती हैं। मुझे एक बात और बहुत अच्छी लगी कि हर बच्चा अपने-आप में विशेष है, और जब उसे सन्दर्भ की चीज़ों से जोड़कर सिखाया जाता है तब उसका सीखना जल्दी और प्रभावी हो जाता है।

सुमन साहू, प्राथमिक शाला छोटा अशोक नगर, संकुल केन्द्र गुड़ियारी, ज़िला रायपुर, छत्तीसगढ़

लेखकों के लिए

1. लेख वर्ड फ़ाइल में ही भेजें जिसमें कोई डिज़ाइन, बॉर्डर, बॉक्स, आदि न हों। लेख पीडीएफ़ में न भेजें।
2. लेख से सम्बन्धित तस्वीरें या कोई अन्य विज़ुअल अच्छी क्वालिटी का हो, और उसे वर्ड फ़ाइल में लगाकर भेजने की बजाय अलग से अटैच करके भेजें। तस्वीर को image 1, image 2 के नाम से सेव करके भेजें, और लेख में लिख दें कि कहाँ पर आपको लगता है कौन-सी तस्वीर लगनी चाहिए। हालाँकि, इस बारे में अन्तिम निर्णय सम्पादकीय टीम का होगा।
3. तस्वीर का सोर्स ज़रूर बताएँ। कॉपीराइट का ध्यान रखें कि तस्वीर या तो कॉपीराइट फ़्री हो, या जहाँ से ली गई है वहाँ से अनुमति ली गई हो, या आभार व्यक्त किया गया हो। अगर तस्वीर आपने ख़ुद ली है तो वह भी बताएँ, और तस्वीर लेते समय, विद्यालय या कक्षा से इजाज़त ज़रूर लें।
4. बच्चों की तस्वीरें बिल्कुल न लें, ख़ासकर ऐसी तस्वीरें जिनमें उनका चेहरा स्पष्ट हो।
5. लेख में जब भी किसी किताब का अंश, लेख का अंश, किसी लेखक के उद्धरण (quote) इस्तेमाल में लाएँ, कृपया उनका उल्लेख ज़रूर करें, और क्रेडिट दें।
6. अपने लेख के साथ अपना संक्षिप्त परिचय, एक फ़ोटो जिसमें आपका चेहरा सामने से स्पष्ट और क्लोज़ हो, मोबाइल नम्बर, पूरा पता, और ईमेल आईडी भी दें।
7. जो भी लेख आप *पाठशाला* के लिए भेज रहे हैं, यह बहुत ज़रूरी है कि उसे न तो कहीं और भेजा गया हो न ही सोशल मीडिया पर साझा किया गया हो।
8. लेख मिलने पर आपको लेख के मिलने की सूचना तुरन्त दी जाएगी, और 30 दिन के अन्दर लेख की स्वीकृति या अस्वीकृति, या उसमें सुधार के सम्बन्ध में सूचना प्रेषित की जाएगी।
9. पत्रिका में लेखों की तीन श्रेणियाँ हैं। पहली श्रेणी में लेख 2000 शब्दों का, दूसरी में 1500 शब्दों, और तीसरी श्रेणी में यह 700 से 1000 शब्दों का होगा।
10. सम्पादकीय टीम को लेख में सम्पादन का अधिकार होगा। ज़रूरी सम्पादन के बाद आपको लेख भेजा जाएगा।
11. *पाठशाला* अब हिन्दी के अतिरिक्त अँग्रेज़ी और कन्नड़ में भी प्रकाशित होगी। माने, आप तीनों में से किसी भी भाषा में लेख भेज सकते हैं। लेख भेजने का आईडी है : pathshala@apu.edu.in
12. आपने जिस भी मौलिक भाषा में लेख भेजा है, अनुवाद होकर तीनों भाषाओं में प्रकाशित होगा। इसका अधिकार सम्पादकीय टीम को होगा।

किसी भी तरह की अन्य जानकारी के लिए आप सम्पर्क कर सकते हैं–
प्रतिभा (हिन्दी) : pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org
शेफ़ाली (अँग्रेज़ी) : shefali.mehta@apu.edu.in
राघवेंद्र हेर्ले (कन्नड़) : Raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की ओर से रजिस्ट्रार शरद सुरे द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे गाँव, बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक-562125। लक्ष्मी मुद्रणालय, क्रमांक 117, 5वीं मुख्य सड़क, चामराजपेट, बेंगलूरु, कर्नाटक-560018 द्वारा मुद्रित।

मुख्य सम्पादक : प्रतिभा कटियार

Azim Premji University

Anuvada Sampada

अनुवाद सम्पदा

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की अनुवाद रिपॉजेटरी

विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षणिक संसाधनों का भण्डार।

नि:शुल्क, ओपन-एक्सेस पोर्टल

- पुस्तकें और पुस्तकों के अंश
- अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी प्रकाशनों के लेख
- विभिन्न स्रोतों से चयनित लेख

अनुवाद सम्पदा पर आएँ
https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/

यहाँ स्कैन करे

Azim Premji University

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की पत्रिकाएँ

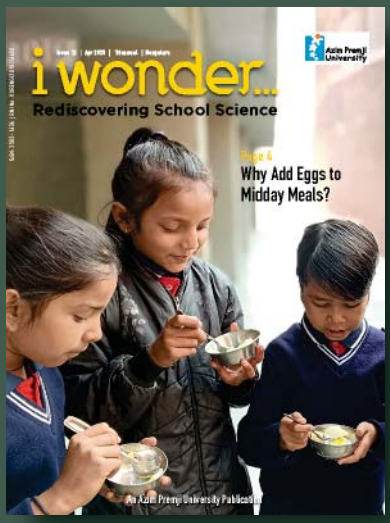

पाठशाला की निःशुल्क सदस्यता के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

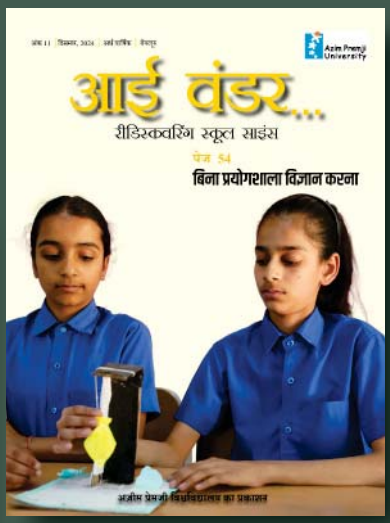

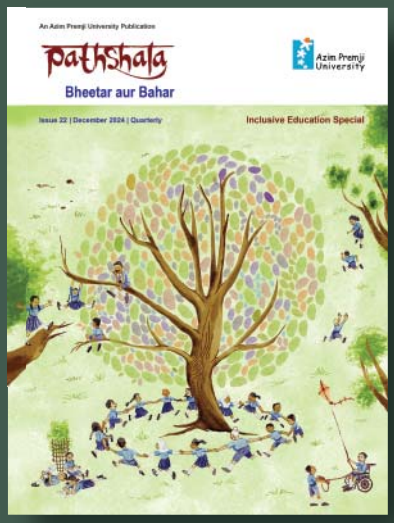

अन्य प्रकाशनों के बारे में अधिक जानने के लिए हमें लिखें - publications@apu.edu.in